Dr. S. P. PATHAK
M. A., Ph. D.
Head, Deptt. of History
Bundelkhand College, JHANSI.
&
Convenor,
Board of Studies History Bundelkhand
University JHANSI.

Residence :-
32, CIVIL LINES,
JHANSI.

Dated ____________

To.

The Registrar

Bundeljhand University, Jhansi

Dear Sir,

CERTIFICATE
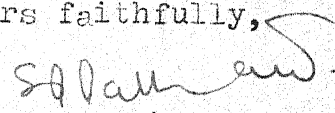
This is to certify that the research work embodied in this thesis submitted for the degree of Ph.D. in History, entitled " The Socio-Economic History of Lalitpur District from 1866-1947" in Hindi is the original research work done by Shri Mahendra Mohan Awasthi He has worked under my guidance and supervison for the required period.

Yours faithfully,

(S.P.PATHAK)

Dr.S.P.Pathak
M.A.Ph.D.
Head of the Deptt.of History
Bundelkhand College, Jhansi.

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी० एच-डी० की उपाधि के लिये

प्रस्तुत

शोध – प्रबन्ध

*

"ललितपुर जिले का सामाजिक-आर्थिक इतिहास"

1866 - 1947

*

प्रस्तुतकर्ता :

महेन्द्र मोहन अवस्थी

एम० ए०

*

निर्देशक :

डा० एस० पी० पाठक — एम० ए०, पी० एच-डी०
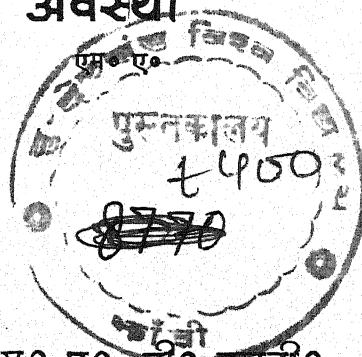
अध्यक्ष — इतिहास विभाग

बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी (उ० प्र०)

1988

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की पी0एच-डी0 की उपाधि के लिये

प्रस्तुत

शोध - प्रबन्ध

----- :0: -----

ललितपुर जिले का

आर्थिक - सामाजिक इतिहास ‖ 1866-1947 ‖

----- :0: -----

प्रस्तुत कर्ता

महेन्द्र मोहन अवस्थी - बी0 एस-सी0, एम0ए0·

----- :0: -----

निर्देशक

डॉक्टर शिव पूजन पाठक - एम0ए0, पी0 एच-डी0

अध्यक्ष - इतिहास विभाग

बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी

‖उत्तर प्रदेश‖

" आमुख"

जनपद ललितपुर का आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का सर्वेक्षण करने पर ज्ञात होता है कि यह बुन्देलखण्ड क्षेत्र का सबसे पिछड़ा एवं अधिक उन्नतिशील जनपद नहीं रहा है । इसका कारण हमें इसके अतीत एवं कुछ भौगोलिक परिस्थितियों में ढूंढ़ने से प्राप्त हो जायेगा । प्राचीन एवं मध्यकालीन शासक चन्देलों एवं बुन्देलों के समय इस जनपद का अधिकतर भाग वनों से ढंका रहा । नदियों के किनारे खेती होती थी,परन्तु चन्देल शासकों ने कृषि को प्रोत्साहन देने के लिये कई झीलों का निर्माण करवाया । बुन्देला शासनकाल इस जनपद के लिये अधिक उपयोगी नहीं रहा । आपसी द्वेष एवं ईर्ष्या के कारण आपस में लड़ते रहे । इसका लाभ गोंड़ों एवं मराठों ने उठाया तथा इस क्षेत्र के एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया । कहने का तात्पर्य यह है कि इस काल में इस जनपद में न ही सामाजिक उत्थान हुआ और न ही आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुयी ।

उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से यहां के लोगों को भयानक अकाल का सामना करना पड़ा । उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अर्थात् 1857 की असफल क्रांति का भी इस क्षेत्र की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति पर काफी प्रभाव पड़ा । क्रांति के पश्चात् जब सामान्य स्थिति हुयी उस समय अर्थात् 1858 में इस जनपद के अधिकांश भाग पर ब्रिटिश सरकार का आधिपत्य हो गया । नये शासक जो कि अंग्रेज थे,उनकी नीति आरम्भ से ही देशी उद्योग धन्धों को नष्ट करने एवं बाजार में इंग्लैण्ड निर्मित वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने की रही । 1858 से 1947 तक का ब्रिटिश शासन का इतिहास इस उतार-चढ़ाव की एक कहानी है ।

1857 की क्रांति, ब्रिटिश सरकार की पक्षपातपूर्ण नीति, उन्नीसवीं शताब्दी के छठवें, सातवें व आठवें दशक की प्राकृतिक विपदाओं में अकाल एवं अनावश्यक फसल कांश की उपज ने यहाँ की आर्थिक स्थिति को दयनीय बना दिया । अधिकतर लोग यह जनपद छोड़कर मालवा एवं गुजरात चले गये । प्राकृतिक विपदाओं के कारण खेती की स्थिति दिन पर दिन गिरती गई, क्योंकि खेती भारतीय समाज का आर्थिक आधार रहा । खेती अच्छी न होने के कारण स्थानीय जागीरदारों को अपने जीवन-यापन एवं लगान के लिये अपनी सम्पत्तियों को रहन रखकर स्थानीय जैनी एवं मारवाड़ी साहूकारों से कर्ज एवं उधार लेना पड़ता था । यह ऋण यहाँ के जागीरदारों पर लगातार बढ़ता ही गया । ऋण और उस पर ब्याज की दर के कारण कई जागीरदारों की भूमि ऋण में डूब गयी । वह बुन्देला जागीरदार अन्त में अपने गैंग बनाकर डकैत अथवा डाकुओं के रूप में उभरकर सामने आये । 1869 में ब्रिटिश सरकार ने इस ऋण समस्या पर विचार किया तथा उसके न्यायपूर्ण जाँच के लिये 1873 में वी0कालविन तत्कालीन आफीसियटिंग कमिश्नर को नियुक्त किया ।

एक ओर ब्रिटिश सरकार ने स्थानीय उद्योग धन्धों कानाश करने के लिये दमनपूर्ण नीति लागू किया, वहाँ दूसरी ओर अपने शासन को चुस्त-मुस्तैद करने के लिये जनपद का आधुनिकीकरण भी किया । विधि एवं आदेश का कड़ाई से पालन करने के लिये नये पुलिस केन्द्र, तहसीलों, सड़कों का निर्माण करवाया । कृषि के प्रोत्साहन के लिये नये कुओं-बाँधों का निर्माण करवाया । 1864, 1891, 1906 में राजस्व की वसूली की बढ़ौती के लिये बन्दोबस्त कार्य (सैटिलमेन्ट-

रिपोर्ट्स तैयार करवाये । इन सब कार्यों से यहाँ के लोगों ने कुछ राहत महसूस की तथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जनपद की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में कुछ परिवर्तन दिखाई देने लगा, परन्तु उपरोक्त कार्य जो ब्रिटिश सरकार ने इस जनपद की सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र के लिये काफी नहीं थे । क्योंकि जिस प्रकार से सरकार को जनपद से राजस्व प्राप्त होता था, सरकार उसका एक चौथाई भी जनपद पर व्यय नहीं करती थी ।

हम अपने गुरु, श्री. एस. पी. पाठक, नेशनल आर्काइव नई दिल्ली व अपने पिता, माँ के आभारी हैं। जिनके सहयोग से (ग्रन्थ) शोध कार्य पूरा हो सका।

भवदीय
महेन्द्र मोहन अवस्थी
10/3/88

----- :0: -----

विषय - सूची

विषय - सूची

विषय - सूची

विषय - सूची

विषय - सूची

----- :0: -----

संकेत

1. ब्रोक मेन डी० एल० – झाँसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद.

2. एटकिन्सन ई० टी० – स्टेटिकल सर्वे नार्थ वेस्ट प्राविन्स आफ इण्डिया, वोल्यूम-1 (बुन्देलखण्ड) इलाहाबाद 1874.

3. जेनकिन्सन ई० जी० – रिपोर्ट आफ सेटलमेन्ट झाँसी जनपद, इलाहाबाद 1871.

4. पिम ए० डब्ल्यू – फायनल सेटलमेन्ट रिपोर्ट आफ रिवीजन आफ द झाँसी डिस्ट्रिक इन्क्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन, इलाहाबाद 1907.

5. इम्पे, प्रेसटन – रिपोर्ट आन द सेकेण्ड सेटलमेन्ट आफ झाँसी (इनक्लूडिंग सब - डिवीजन ललितपुर) नार्थ वेस्ट प्राविंस, इलाहाबाद 189[illegible],

---:0:---

अध्याय - प्रथम
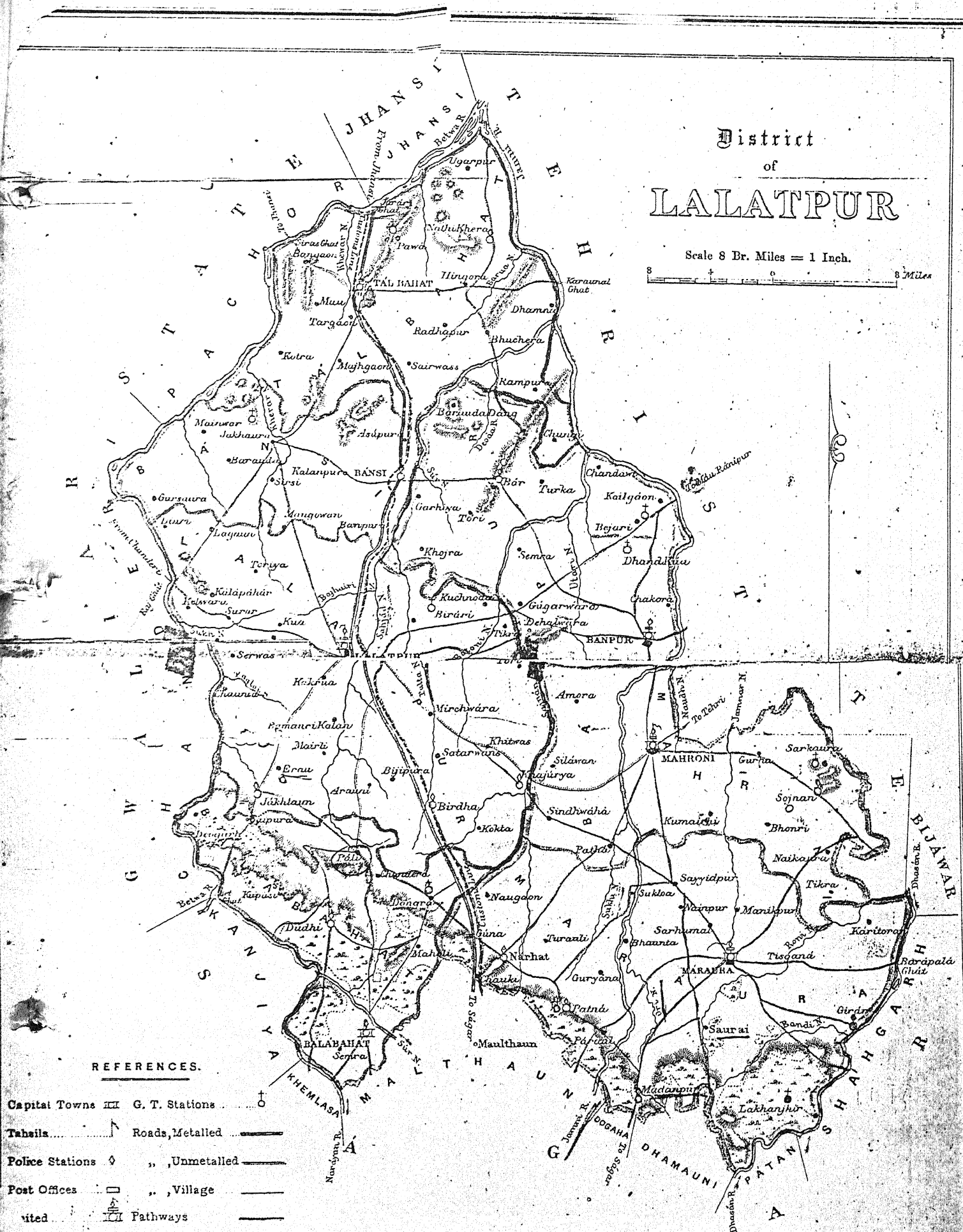
परिचय

परिचय

सूक्ष्म ऐतिहासिक वर्णन (तथ्य)

वर्तमान में जिला ललितपुर, उत्तर प्रदेश प्रांत का एक महत्वपूर्ण जिला है। यह उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश सीमा पर स्थित है। इस जनपद के तीन ओर मध्य प्रदेश प्रांत है। पूर्व-पश्चिम एवं दक्षिण में मध्य प्रदेश प्रांत के क्रमशः टीकमगढ़, सागर, ग्वालियर एवं शिवपुरी जनपद हैं, उत्तर में झाँसी जनपद है।

ललितपुर नाम का इतिहास :

ललितपुर जिले का नाम ललितपुर, इसके प्रमुख नगर एवं मुख्यालय ललितपुर के नाम से जाना जाता है।

किंवदन्तियों के अनुसार दक्षिण भारत का राजा समरसिंह की रानी का नाम ललिता था, वह चर्म-रोग से पीड़ित थी। वह एक बार गंगा स्नान को जारही थी, मार्ग में वह एक सरोवर के निकट बीमार पड़ गई। रात्रि-स्वप्न में उसे दिखाई दिया कि अगर वह सरोवर में स्नान करें तो उसका चर्म-रोग ठीक हो जायेगा। प्रांतः उसने सरोवर में स्नान किया जिससे उसको चर्म-रोग से मुक्ति मिल गई।

रानी ने सरोवर के निकट एक नगर बसाया जो उसके नाम "ललिता" के नाम पर ललितपुर कहलाया ।[1]

जिला ललितपुर :

"ललितपुर" नाम का सर्वप्रथम उल्लेख "आइने अकबरी" से प्राप्त होता है । अबुल फजल ने सूबा ॥प्रांत॥ मालवा में तीन सरकारों का वर्णन किया है जिनके नाम हैं, चन्देरी, गरहा एवं रायसेन । परगना ललितपुर, चन्देरी सरकार में आता था । थनवारा एवं ललितपुर परगनों का क्षेत्रफल 10977 बीघा था । इन परगनों से 6,19,997 दाम राजस्व प्राप्त होता था । यहाँ पर मुगलों की एक चौकी भी थी । इस चौकी में 200 पैदल सैनिक तथा 80 घुड़सवार की एक टुकड़ी रहती थी । इसी तरह रोधई ॥दुधई॥ परगने का क्षेत्रफल 3,652 बताया है जिससे 20600 दाम का राजस्व प्राप्त होता था । यहाँ पर मुगलों की एक चौकी थी जहाँ पर राजपूत और गोंड़ों की एक टुकड़ी 20 घुड़सवार, 700 पैदल सैनिक रहते थे ।[2] चाँदपुर और देवगढ़ गरहा सरकार के परगने थे जिनसे लगभग 9,00,000 दाम का राजस्व प्राप्त होता था । यहाँ पर भी एक सेना की टुकड़ी रहती थी जिसमें 1500 घुड़सवार एवं 5000 पैदल सैनिक थे ।[3]

1- झाँसी गजेटियर 1965, ईशाबसंत जोशी, पेज-

2- आईने अकबरी, अबुल फजल, ट्रास0 एच0 एस0 जेनेट और सरकार, पेज 210,211,212,213.

3- वही.

मुगल काल से लेकर ब्रिटिश काल तक ललितपुर, चन्देरी जिले का एक भाग रहा जो कि संयुक्त प्रांत का एक महत्वपूर्ण जिला था ।[1]

1866 ए॰डी॰ में चन्देरी से अलग होकर जिला ललितपुर एक स्वतंत्र जिला बनाया गया,[2] परन्तु 1891 ए॰डी॰में इसको झाँसी जिले में मिला दिया गया एवं झाँसी जिले का सब डिवीजन बना दिया गया ।

विभिन्न शासन कालों में जिला ललितपुर :

जिला ललितपुर जिस भू-भाग पर स्थित है, वह वर्तमान में "बुन्देलखण्ड" कहलाता है, परन्तु बुन्देलखण्ड शब्द का प्रयोग इस भू-भाग के लिये लगभग सन् 1335-40 ए॰डी॰ से प्रारम्भ हुआ । जब इस भू-भाग पर बुन्देला सरदारों का आगमन हुआ ।[3] इस भू-भाग के अन्य अनेक नाम, विभिन्न शासकों के शासन कालों से प्राप्त होते हैं ।

ललितपुर के सम्पूर्ण भू-भाग पर दृष्टिपात् करने पर अनेकों शासकों के अभिलेख, भवन एवं उनकी राज्यश्री के भग्नावशेष स्थान-स्थान पर प्राप्त होते हैं । जिन शासकों ने इस भू-भाग पर शासन किया है उनमें गुप्त, कलचुरी, अहिरवार, चन्देल, मुस्लिम एवं बुन्देला थे ।[4]

सन् 1858 ए॰डी॰ में इस भू-भाग पर ब्रिटिश सरकार का अधिकार हो गया था ।[5] जो सन् 1947 तक रहा । भारतीय स्वाधीनता

1- इनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, पेज भाग-
2- तवारीखें बुन्देलखण्ड, श्यामलाल, भाग-1, पेज-
3- चन्देल और उनका राजत्वकाल, मिश्र केशवचन्द्र, पेज-3॰
4- इण्डियन एण्टीकवरी (1908), भाग-37, पेज-130॰
5- झाँसी गजेटियर, जोशी, पेज-60-61॰

था । बाँसी, महौली, मड़वारा {अहिरवारा} में इन शासकों के भग्न-भवन मिलते हैं ।[1] तालबेहट में एक नाला भी अहिरवारा नाम से जाना जाता है ।[2]

गुप्त काल :

चौथी शताब्दी के मध्य में इस क्षेत्र को समुद्र गुप्त ने जीता था । चौथी शताब्दी से ही इस क्षेत्र पर गुप्त राज्य वंश की राज्यश्री का उदय हुआ, जो छठवीं शताब्दी तक चला था ।[3] गुप्त काल का बसाया हुआ नगर देवगढ़ एवं गुप्त काल की स्थापत्य कला एवं मूर्ति-कला के बेहतरीन नमूने देवगढ़ में आज भी विद्यमान हैं । देवगढ़ में मिले एक अभिलेख में गोविन्द गुप्त का नाम मिलता है । गोविन्द गुप्त कुमार गुप्त {प्रथम}, {375-413 ए॰डी॰} का छोटा भाई था । संभवतः देवगढ़ के मन्दिरों एवं भवनों का निर्माण गोविन्द गुप्त ने ही करवाया था ।[4] देवगढ़ प्राचीन समय में लक्षगिरी के नाम से जाना जाता था ।[5]

गोंड शासक :

गोड़ यहाँ के प्राचीन निवासी हैं । ये यहाँ के पहाड़ी एवं आदिवासी लोग हैं ।[6] गोड़ शासकों का शासन क्षेत्र मालवा सूबा रहा है । धमोनी, बालाबेहट, देवगढ़, बाँसी, दुधई आदि स्थानों पर गोंड़

1- चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, पाण्डेय उ०प्र०, पेज-4॰
2- वही॰
3- झाँसी गजेटियर 1965, जोशी, पेज- 21-22॰
4- बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, त्रिवेदी एस०पी०॰
5- चन्देल और उनका राजत्वकाल, मिश्रा केशवचन्द्र, पेज-29॰
6- झाँसी गजेटियर, जोशी, पेज-25॰

शासकों के शासन के भग्नावशेष प्राप्त होते हैं । गौड शासकों का प्रमुख नगर हरीपुर जो बाँसी परगना में है तथा दुधई उस समय का प्रमुख नगर थे । बाद में नवीं शताब्दी में चन्देल राजा नन्नुक ﴾831-850 ए॰डी॰﴿ ने इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर अपने शासन की स्थापना की थी।[1] परन्तु गौड़ों से संघर्ष बराबर चलता रहा जैसे कि चन्देल राजा यशोवर्मन के शिलालेख की एक पंक्ति से आभास होता है ।

गौड क्रीडाललतास्त्विस्तु लितक्सबल:
कौशल: कौशलानां ।[2]

अर्थात् वह ﴾यशोवर्मन﴿ गौड़ों को काटने के लिये कृपाण था और वो ﴾गौड़﴿ क्रीड़ालता थे ।

आगे चलकर चन्देल शासकों एवं गौड़ों के सम्बन्ध मधुर हो गये थे । 1545 ए॰डी॰ में कालिंजर के चन्देल राजा कीरत सिंह की राजकुमारी दुर्गावती का परिणय गढ़मण्डल ﴾गोंडवाना, मालवा सूबा﴿ के राजा दलपति सिंह से हुआ था जो इस क्षेत्र का शासक था ।[3] परन्तु बुन्देलों और गौड़ों के सम्बन्ध कभी मधुर नहीं रहे, विशेषकर राजा जुझारसिंह के सम्बन्ध इतने तनावपूर्ण रहे कि 1635 ए॰डी॰ में विद्रोही जुझारसिंह एवं उनके पुत्र जगराज का वध करके उनके सर मुगल बादशाह शाहजहाँ को भेज दिये थे । जब जुझार सिंह धमौनी से होकर भाग रहा था ।[4]

1- ईपि ग्राफी इण्डिया, भाग-1, पद्य 127-128॰

2- चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, पाण्डेय अयोध्याप्रसाद, पेज-20॰

3- जर्नल एशियेटिक सोसायटी बंगाल, 1881, भाग-14, पेज-312॰

4- भारत का इतिहास, श्रीवास्तव आशीर्वादी लाल, पेज-598॰

चन्देल काल :

चन्देलों के शासन काल में यह भू-भाग जेजामुक्ति अथवा जेजाक-मुक्ति के नाम से जाना जाता था ।[1] यह नाम चन्देल वंश के तृतीय शासक जयशक्ति (865-885 ए•डी•) के नाम पर पड़ा था ।[2]

जेजाख्यया अथ नृपति:
लभूव जेजेक मुक्ति :
पृथुइवपथा पृथिव्यामासीत् ।[3]

पृथ्वीराज चौहान के मदनपुर शिलालेख से प्रकट होता है कि 12वीं शताब्दी तक यह भू-भाग जेजाकभुक्ति के नाम से जाना जाता था ।

अरूण राजस्य पौत्रेण श्री सोमेश्वर सूनुना ।
जेजाक भुक्ति देशोऽयं पृथ्वी राजेन लूनिता ।।[4]

चन्देल काल में यह समस्त जनपद चन्देल शासकों की राज्यश्री अर्थात् जेजाकभुक्ति का एक भाग था, उनके बसाये हुवे नगर मदनपुर, चाँदपुर, देवगढ़, दुधई एवं उनको स्थापत्य कला एवं मूर्ति कला को कलाकृतियाँ एवं उनकी राज्यश्री को भग्न अवशेष आज भी समस्त जनपद में बिखरे पड़े हैं ।

1- चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, पाण्डेय अयोध्याप्रसाद, पेज-7•
2- चन्देलाज आफ जेजाकभुक्ति, दीक्षित आर0के0, पेज-28•
3- महोबा शिलालेख इपिग्राफिक इण्डिया, भाग-1, पेज-220•
4- आर्किलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, भाग-2, पेज-98•

चन्देल काल में इस जनपद का वैभव चरम सीमा पर था । कीर्तिवर्मन के राजघाट शिलालेख जो कि एक पत्थर की चट्टान पर कनिंघम को प्राप्त हुआ था, जो संवत् 1154 (1098 ए॰डी॰) के अनुसार उस समय चन्देल राज्य की सीमा मंडला तक पहुँच चुकी थी एवं कीर्ति वर्मन का प्रधान मंत्री वत्सराज था उसने अपने स्वामी के नाम से एक दुर्ग का निर्माण देवगढ़ की पहाड़ी पर करवाया था, जो कीर्तिगिरि-दुर्ग के नाम से जाना जाता था । सम्भवतः वर्तमान राज्यघाट का नाम कीर्ति वर्मन के प्रधान मंत्री वत्सराज के नाम पर ही पड़ गया है ।[1]

इसके अतिरिक्त इस जनपद में स्थान-स्थान पर चन्देल कालीन अथवा चन्देल शासकों के द्वारा निर्मित जल एवं सिंचाई साधन कुंए एवं सरोवर भी बनवाये गये थे जो उस समय से लेकर वर्तमान तक जलपूर्ति के काम आते हैं ।[2]

धंगौल, तालबेहट, टैंगा, हरगिरि, किरौंरा, लिचौरा पाली, बाला-बेहट, सिरौन खुर्द, बानपुर, नरहट, दौलतपुर, गुरहा बुजुर्ग, सिरौंज एवं सिनोरई में चन्देल कालीन स्थापत्य कला, मूर्ति कला एवं विश्राम-गृह तथा जनपद के समस्त परगनों में सिंचाई के साधन प्राप्त होते हैं ।[3]

पृथ्वीराज चौहान (1169-1192 ए॰डी॰) एवं कुतुबुद्दीन ऐबक (1202-1211 ए॰डी॰) के आक्रमण के बाद इस भू-भाग पर से चन्देल शासन लगभग लुप्त हो गया था । परन्तु 1203 ए॰डी॰ में यह भू-भाग एक बार

1- आर्क्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, भाग-10, पेज-103॰
2- चन्देल और उनका राजत्वकाल, मिश्रा केशवचन्द्र, पेज-14
3- आर्क्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, भाग 2-8-10, पेज 114-125॰

फिर चन्देल शासकों के आधीन हो गया था । संवत् 1261 ﴾सन् 1204 ए॰डी॰﴿ एक ताम्र पत्र गारा गाँव जिला छतरपुर प्राप्त हुआ था जिसमें ललितपुर जनपद के वेदवारा गाँव का वर्णन है,यह ताम्रपत्र चन्देल शासक त्रिलोक वर्मन ﴾1203-1245 ए॰डी॰﴿ का है ।[1] ललितपुर जनपद के टेहरी ग्राम में मिले अभिलेख से त्रिलोक वर्मन की शासन सीमा में टेहरी ﴾वर्तमान टेहानी बानपुर﴿ सिरोज खुर्द,बेदवारा और भडौवरा का वर्णन है ।[2]

मुस्लिम काल ﴾1000-1526 ए॰डी॰﴿ :

इस भू-भाग अथवा बुन्देलखण्ड में मुस्लिम शासकों का सर्वप्रथम प्रवेश 414 हिजरी ﴾सन् 1023 ए॰डी॰﴿ के लगभग है ।[3] सुल्तान महमूद गजनवी ने चन्देल राजा गंड के राज्य पर आक्रमण करके ग्वालियर के किले को घेर लिया । बाद में ग्वालियर के हाकिम ﴾उपशासक﴿ ने महमूद की आधीनता स्वीकार कर ली । इसके बाद महमूद ने कालिंजर पर आक्रमण किया । चन्देल शासक गंड ने बाद में महमूद से संधि का प्रस्ताव रखा जिसे महमूद स्वीकारकर गंड को उसका शासन सौंपकर वापिस गजनी चला गया ।[4] सन् 1182-83 ए॰डी॰ के लगभग पृथ्वीराज चौहान ने इस भू-भाग पर अधिकार कर ग्वालियर,सागर,ललितपुर एवं महोबा पर अपना शासन स्थापित किया ।[5] यह प्रमाण ललितपुर जनपद स्थित मदनपुर नगर से प्राप्त शिलालेख से मिलता है । पृथ्वीराज का

1- चन्देलाज आफ जेजाकभुक्ति, पेज 156, दीक्षित आर0के0,पेज-157॰
2- वही॰ पेज-157॰
3- डायनेस्टिक हिस्ट्री आफ नार्दर्न इण्डिया,भाग-2,पृ0 677;राय हेमचन्द्र॰
4- अकबरी ﴾अस्तु﴿ निजामुद्दीन,पेज-14॰
5- चन्देलाज आफ जेजाकभुक्ति,पेज-145,दीक्षित आर0के0॰

युद्ध चन्देल शासक परिमर्दिन देव से हुआ (1165-1202 ए॰डी॰) था ।[1] बाद में 1202 ए॰डी॰ कुतुबुद्दीन ऐबक ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण कर चन्देल सत्ता को लगभग समाप्त कर, इस भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया था ।[2] परन्तु 1202 ए॰डी॰ से 1288 ए॰डी॰ तक चन्देल शासक त्रिलोक वर्मन (1203-1245 ए॰डी॰) वीर वर्मन (1245-1285 ए॰डी॰) एवं भोज वर्मन (1285-1288 ए॰डी॰) अपने शासन का अस्तित्व कायम रखने के लिये मुस्लिम शासकों से बराबर संघर्ष करते रहे ।[3]

1291-92 ए॰डी॰ में इस जनपद का अधिकांश भाग मालवा सूबे (प्रान्त) के अन्तर्गत् आता था जिसका शासक हरनन्द था ।[4] ऐसा प्रतीत होता है कि यह हरनन्द शासक गौड़ राजा था । इस समय दिल्ली में खिलजी राज्य वंश की नींव पड़ चुकी थी तथा अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ए॰डी॰) का शासन था । अलाउद्दीन खिलजी ने इस भूभाग को जीतने के लिये अपने गवर्नर आईन-उल-मुल्क मुल्तानी को एक विशाल सेना के साथ मालवा भेजा । । दिसम्बर 1305 को एक भयंकर युद्ध के बाद यह समस्त भू-भाग मालवा सूबे के अन्तर्गत् जो कि उज्जैन से चन्देरी तक फैला हुआ था, खिलजी शासन के आधीन हो गया एवं मलिक तैमूर को मुक्ता (प्रान्तीय गवर्नर) नियुक्त किया ।[5]

1- आर्क्यिोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, भाग-2, पेज-98.

2- भारत का इतिहास, श्रीवास्तव आशीर्वादी लाल, पेज-37.

3- हिस्ट्री आफ चन्देलाज, बोस एन०एस०, पेज 107-108.

4- भारत का इतिहास, श्रीवास्तव आशीर्वादीलाल, पेज-118.

5- कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, भाग-3, पेज 110-111.

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ए॰डी॰) के काल में समस्त बुन्देलखण्ड भू-भाग दिल्ली सुल्तान के अधीन था। ग्वालियर, कालपी और चन्देरी इस प्रान्त में आता था।[1] इस समय प्रसिद्ध इतिहासकार इब्ने बतूता इस प्रान्त से 1335 ए॰डी॰ में चन्देरी होकर गुजरा था, उसने इस विशाल प्रान्त हैड क्वार्टर्स (मुख्यालय) चन्देरी बतलाया था। उसके समय में समस्त प्रान्त का वातावरण शान्तिपूर्ण बतलाया एवं उस समय चन्देरी का मुक्ता इजउद्दीन-अल-बनटानी था।[2] फिरोज तुगलक (1351-1388 ए॰डी॰) के समय ऐरच एवं चन्देरी के साथ इस जनपद का समस्त भाग दिल्ली सल्तनत के अधीन था। 1973-74 के सुल्तान की सिन्ध वापसी पर ऐरच और चन्देरी को फिरोज तुगलक ने एक सैनिक छावनी का रूप दिया जिसे मलिक मोहम्मद शाह अफगान जो कि तुगलकाबाद का गवर्नर था, उसके अधीन कर दिया।[3]

1388 ए॰डी॰ से 1414 ए॰डी॰ तुगलक वंश एवं शर्की सुल्तानों में परस्पर अपनी प्रभुता कायम रखने के लिये एक-दूसरे के प्रान्तों पर आक्रमण करते रहे जिससे तुगलक शासन खण्डों में विभाजित हो गया। 1435 ए॰डी॰ तक ललितपुर जनपद कभी राजपूतों और कभी दिल्ली-सुल्तानों के अधीन रहा।[4] इस बीच इस भू-भाग पर एक नये राजवंश का उदय हो चुका था। 1468 ए॰डी॰ में बुन्देला राजा अर्जुनदेव की मृत्यु के बाद उसका एक मात्र पुत्र मलखान सिंह गढ़कुड़ार की गद्दी पर बैठा।[5]

1- द राइज एण्ड फाल आफ मोहम्मद बिन तुगलक, पेज-96, आगा मेंहदीहसन॰
2- तुगलक कालीन भारत, भाग-1, पेज-270, रिजवी एस0ए0ए0, अलीगढ़ 1957॰
3- वही; भाग-2, पेज-244॰
4- उत्तर तैमूर कालीन भारत, पेज 8-10, भाग-1, रिजवी एस0ए0ए0, अलीगढ़॰
5- बुन्देलों का इतिहास, पेज-14, श्रीवास्तव भगवानदास॰

उस समय बुन्देला राजाओं के शासन की सीमा ललितपुर जनपद तक थी ।[1] राजा मलखान सिंह बुन्देला ने बहलोल लोदी (1451-1489 ए॰डी॰) की आधीनता स्वीकार नहीं की ।[2] 1501 ए॰डी॰ में राजा मलखान की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र गद्दी पर बैठा । 1509 में सिकन्दर लोदी (1489-1517 ए॰डी॰) ने एक बार फिर ललितपुर, चन्देरी पर अपना अधिकार कर लिया ।[3]

1517 ए॰डी॰ में एक बार फिर चन्देरी-ललितपुर राजपूत अपना अधिकार करना चाहते थे, पर हुसैन करमाली के साथ चन्देरी पर अपना अधिपत्य कायम रक्खा, परन्तु एक सरदार शेखजादा मंजू के कहने पर सिकन्दर लोदी ने हुसैन करमाली का वध करवाकर चन्देरी का इक्ता (प्रान्तीय सूबेदार) शेख मंजू को बनाया ।[4]

1525 ए॰डी॰ तक लोदी शासकों की आपसी फूट और प्रांतीय गवर्नर के विद्रोह एवं शासकों की विलासता के कारण दिल्ली सुलतानों की लोकप्रियता घटने लगी, तभी देश की पश्चिमी सीमा पर एक नया राजवंश आक्रमण करने के लिये आ गया । मुगल राजवंश का प्रथम शासक बाबर अपनी नव-निर्मित सेना के साथ दिल्ली पर आक्रमण किया । 1526 ए॰डी॰ में पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी एवं बाबर की सेनाओं में युद्ध हुआ जिसमें बाबर विजयी हुआ । 1527 ए॰डी॰ में खनवा के एक और युद्ध में राणा सांगा को पराजितकर बाबर समस्त

1- उत्तर तैमूर कालीन भारत, रिजवी एस0ए0ए0.
2- ईस्टर्न स्टेट गजेटियर, पेज-17.
3- हिस्ट्री आफ इण्डिया, इलियट डाउसन, कलकत्ता 1953, पेज-123.
4- उत्तर तैमूर कालीन भारत, भाग-1, पेज 235-37, रिजवी एस0ए0ए0.

उत्तरी भारत का शासक बन गया । 1527 में ही बाबर ने चन्देरी पर मेदनी राय को हराकर अधिकार कर लिया एवं यह जनपद मुगल शासन के अधीन हो गया ।[1]

मुगल काल (1526-1707 ए०डी०) :

1526 ए०डी० से 1530 ए०डी० तक बाबर ने उत्तरी भारत के अधिकांश भाग पर विजय प्राप्त करली । 1530 ए०डी० में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र हुमायूँ उसका उत्तराधिकारी हुआ, परन्तु वह अपने पिता के विजित भू-भागों पर अधिकार न रख सका । 1542 ए०डी० में अफगान शासक शेरशाह ने चन्देरी एवं ललितपुर जनपद के एक बड़े भाग पर अपना अधिकार कर लिया ।[2] इस समय बुन्देला शासक रुद्रप्रताप बुन्देला जो कि अपनी राजधानी गढ़ कुढ़ार से ओरछा ले आया था, उसने झाँसी एवं ललितपुर जनपद के बड़े भाग पर अपना अधिकार कर लिया । इस कार्य में रुद्रप्रताप की मृत्यु के पश्चात् भारतीचन्द्र ने पूर्ण किया ।[3] हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् 1556 ए०डी०में अकबर मुगल राजवंश का अगला शासक हुआ । अकबर के राज्य-काल में जनपद ललितपुर सूबा (प्रान्त) मालवा के सरकार चन्देरी के अन्तर्गत् आता था । तब ललितपुर एवं थनवारा परगनों का क्षेत्रफल 10977 बीघा था जिसका राजस्व 619997 दरहम वसूल होता था ।[4]

1- मुगल कालीन भारत, पेज-405, रिजवी एस०ए०ए०।

2- द हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोल्ड बाय इट्स ओन हिस्टोरियन पेज 50,445,46 भाग-1, इलियट डाउसन (कलकत्ता)।

3- मासिर-उल-उमरा।शमशु-उद-दौला शाह नवाज खान, अनुवाद एच० श्राव्रीज, भाग-2, पेज-106।

4- आइने अकबरी अबुल फजल, अनुवाद एच०एस०जैरट और सरकार, भाग-2, कलकत्ता 1949, पेज-198।

19 अगस्त 1602 ई0 में अकबर का युवराज सलीम के शह पर वीरसिंह बुन्देला ने अकबर के प्रधान मंत्री अबुल फजल का वध दतिया के पास आंतरी में कर दिया ।[1] 1605 ए॰डी॰ में अकबर का पुत्र सलीम जहांगीर के नाम से मुगल शासक बना । जहांगीर के बादशाह बनने के बाद वीरसिंह बुन्देला को जहांगीर ने ओरछा,जतारा एवं समस्त बुन्देलखण्ड का अधिकार दे दिया ।[2] वीरसिंह के कहने पर चन्देरी एवं बानपुर की जागीर राम शाह को दे दी गयी ।[3] रामशाह की मृत्यु के बाद शाहजहां ने यह जागीर उसके पुत्र को दे दी थी ।[4] वीरसिंह देव की मृत्यु के बाद जुझारसिंह ओरछा का उत्तराधिकारी हुआ,उसने शाहजहां के काल में 1629 में विद्रोह किया,परन्तु वह दबा दिया गया । इस विद्रोह में जुझारसिंह को सहायता चन्देरी,बानपुर के शासक भारत शाह ने भी नहीं की । वह शाही सेनाओं के साथ रहा ।[5] 1635 में जुझारसिंह ने फिर विद्रोह किया,परन्तु वह अपने इस विद्रोह में सफल न हो सका । 1635 में ललितपुर जनपद के दक्षिण में धमौनी के निकट गौड़ों ने उसका वध कर दिया ।[6] जुझारसिंह की मृत्यु के पश्चात् शाहजहां ने ओरछा को अस्थाई रूप में चन्देरी और बानपुर के शासक के अधिकार में दे दिया । 2 वर्ष तक देवीसिंह चन्देरी एवं बानपुर के शासक साथ-साथ ओरछा का भी शासक रहा । 1637 ए॰डी॰ में ओरछा उसे

1- तुजके जहांगीरी,भाग-1, पेज 24-25, अनुवाद रोगर्स एस0 एवं ब्रव्रीज एस0 (लन्दन 1909)॰

2- तुजके जहांगीरी,भाग-1,पेज-87,वही॰

3- वही; पेज-160॰

4- ओरछा का इतिहास,पेज-54, गौड़ लक्ष्मन सिंह॰

5- बुन्देलों का इतिहास,पेज-36,श्रीवास्तव भगवानदास॰

6- हिस्ट्री आफ शाहजहां,सक्सैना बी0पी0,दिल्ली; पेज-88-89॰

छोड़ना पड़ा ।[1] 1641 में शाहजहाँ ने ललितपुर जनपद के खनियाधात, तालवेहट, ओरछा एवं झाँसी जनपद कर एक बड़ा भाग बुन्देला राजा पहाड़सिंह को दिया एवं उसका मनसब भी बढ़ाकर 2000 जुलूस कर दिया ।[2] 1654 में पहाड़सिंह की मृत्यु के पश्चात् सुजानसिंह ओरछा का राजा हुआ, वह 1667 ए॰डी॰ तक ओरछा का हाकिम रहा, उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका भाई इन्द्रमणी ओरछा का शासक रहा ।[3] 1666 ए॰डी॰ में शाहजहाँ की मृत्यु हो गई । उधर ओरछा में उसका पुत्र दुर्गसिंह को चन्देरी का शासक बना ।[4] ललितपुर जनपद का बार एवं जखलौन एवं लहचूरा अभी भी राजा रामशाह ﴾वीरसिंह देव का भाई﴿ के वंशजों के अधिकार में था एवं बाँसी और उससे लगे 58 गाँव शाहजहाँ ने मुकुन्दसिंह को दे रखे थे ।[5]

बुन्देला शासन काल :

शाहजहाँ की मृत्यु के बाद औरंगजेब मुगल सम्राट बना । उधर बुन्देलखण्ड के छत्रसाल ने सम्राट के प्रति विद्रोह कर दिया, परन्तु इस विद्रोह में चन्देरी, बार, दतिया, ओरछा के शासकों ने उसका साथ नहीं दिया ।[6] छत्रसाल ने शीघ्र ही एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली और ललितपुर जनपद के सिंरौज और ललितपुर जनपद के दक्षिण में धमौनी

1- बुन्देलों का इतिहास, पेज-40, श्रीवास्तव भगवानदास॰
2- मासिर-उल-उमरा, भाग-2, पेज 471॰
3- ईस्टर्न गजेटियर, पेज-27॰
4- वही॰
5- वही॰
6- बुन्देलों का इतिहास, पेज 77, श्रीवास्तव भगवानदास॰

क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया ।[1] वह 1707 ए॰डी॰ में औरंगजेब की मृत्यु के बाद बुन्देलखण्ड का स्वतंत्र शासक बन गया ।[2] 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्र उसके विशाल साम्राज्य की रक्षा नहीं कर पाये इसके कारण छोटे-बड़े सूबेदारों ने अपने आपको स्वतन्त्र घोषित कर दिया । 1722 ए॰डी॰ में मुगल गवर्नर नवाब बंगश बुन्देलखण्ड-विजय अभियान पर निकला । ओरछा, चन्देरी, दतिया आदि बुन्देला राजाओं ने नवाब का साथ दिया ।[3] नवाब बंगश शीघ्र ही सेहड़ा, मेड़, मोटहा, पैलानी, अगवासी और सिमौनी दुर्गों पर अधिकार करता हुआ ललितपुर जनपद के दक्षिण में धमौनी आ पहुँचा, जहाँ पर बुन्देलों ने उसका सामना किया, पर बंगश के कुशल सेनापतित्व के आगे उन्हें पीछे हटना पड़ा ।[4] बंगश की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर छत्रसाल ने मराठा गवर्नर बाजीराव प्रथम से सहायता माँगी जो इस समय गरहा (द0जनपद ललितपुर) में थे ।[5] उन्होंने छत्रसाल को निम्नलिखित पद लिखकर भेजा था :-

" जो गत् भई गजेन्द्र की वह गत् जानो आन ।
बाजी जात बुन्देलन की, रखियो बाजी लाज ।। "[6]

पेशवा बाजीराव छत्रसाल की सहायता के लिये तुरन्त जौनपुर आ गये । 1731 में छत्रसाल की मृत्यु हो गयी, परन्तु इससे पूर्व पेशवा बाजीराव को बंगश के विरूद्ध सहायता देने पर अपने राज्य का एक बड़ा भाग एवं

1- बुन्देलों का इतिहास, पेज-82॰ श्रीवास्तव भगवानदास॰
2- महाराजा छत्रसाल, गुप्ता भगवानदास॰
3- बुन्देलों का इतिहास, पेज-90, श्रीवास्तव भगवानदास॰
4- वही॰
5- महाराज छत्रसाल बुन्देला, पेज-90, आगरा 1958, गुप्ता भगवानदास॰
6- बाजीराव मस्तानी और उनके वंशज नवाब बांदा॰

अन्य धन, बाजीराव को दे गये । इससे बुन्देलखण्ड मराठों का एक उप-निवेश बन गया जिसमें झांसी, सागर, जालौन, गुरसरांय आदि थे ।[1]

1732 में मराठों ने बुन्देलखण्ड में अपने राज्य का विस्तार करना आरम्भ किया । चन्देरी का शासक दुर्गसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र दुर्जन सिंह चन्देरी का शासक हुआ । 1735 में मराठों ने चन्देरी पर आक्रमण किया तथा उसके प्रसिद्ध दुर्ग भरतगढ़ पर अपना अधिकार कर लिया ।[2] 1745 ए॰डी॰ में दुर्जनसिंह की मृत्यु हो गई । दुर्जनसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मानसिंह गद्दी पर बैठा । मानसिंह ने मराठों के आक्रमण को रोकने के लिये ललितपुर जनपद के महरौनी स्थान पर एक दुर्ग का निर्माण करवाया, परन्तु वह मराठों के आक्रमण को रोक न सका और उसे अपने राज्य का एक बड़ा भाग (समस्त दक्षिण का जनपद ललितपुर का भाग) देना पड़ा ।[3] मानसिंह की मृत्यु के बाद मानसिंह का बड़ा पुत्र अनिरूद्ध सिंह 1760 ए॰डी॰ में गद्दी पर बैठा । उसने 15 वर्ष तक राज्य किया । 1775 ए॰डी॰ में अनिरूद्ध सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रामचन्द्र 3 वर्ष का था, इस कारण राज्य का प्रबन्ध उसके काका हटे सिंह के अधिकार में आ गया । हटे सिंह ने मसौरा खुर्द में एक दुर्ग का निर्माण करवाया था ।[4] शीघ्र ही चन्देरी की राजमाता ने हटे सिंह के स्थान पर अचलगढ़ के जागीरदार चौधरी कीरतसिंह को राज्य का मंत्री नियुक्त किया और हटे सिंह को मसौरा, तालवेहट और 15 गाँव की जागीर दी । 1787 ए॰डी॰ में मराठा सेना ने मोरोपंत

1- बाजीराव फर्स्ट द गेट पेश्वा, पेज 72-73, सी0के0श्रीनिवासन॰
2- बुन्देलों का इतिहास, पेज-117, श्रीवास्तव भगवानदास॰
3- वही॰
4- वही॰

{सागर} के नेतृत्व में बुन्देलों की इस जागीर पर आक्रमण किया । इस आक्रमण का सामना सभी बुन्देला सरदार, राव उमराव सिंह-राजवारा, दीवान छतरसिंह-जाखलौन और ललितपुर एवं पनारी के जागीरदारों ने मिलकर किया ।[1] इस समय चन्देरी का शासक रामचन्द्र तीर्थ-यात्रा को चला गया । राज्य का कार्य-भार अपने एक सम्बन्धी देवजू पनवई और उनकी पत्नी को सौंप गया । उसकी अनुपस्थिति में मराठों ने सौरई, दबरानी और बालाबेहट अपने अधिकार में कर लिये । 1801 में उसका पुत्र प्रजापाल राजा बना, परन्तु वह एक युद्ध में रजवारा स्थान पर मारा गया । प्रजापाल के बाद उसका छोटा भाई मोर प्रहलाद राजा बना । 1811 में सिंधिया ने ब्रिटिश आफीसर कर्नल जोन बेपटिस्ट फिल्योलस के नेतृत्व में एक सेना भेजी जिसने चन्देरी व समस्त बुन्देला क्षेत्र को अपनी सीमा में मिला लिया ।[2] मोर प्रहलाद और उसका परिवार झाँसी चले गये ।[3] 1811-1842 ए॰डी॰ तक मोर प्रहलाद बराबर मराठों और अंग्रेजों से बुन्देला सरदारों के साथ मिलकर संघर्ष करते रहे । इस समय चन्देरी सिंधिया के अधिकार में था । बाद में वह बानपुर आकर बस गये । 1842 ए॰डी॰ में राजा मर्दन सिंह उनके वहाँ के राजा हुए ।[4] दो साल बाद चन्देरी राज्य सिंधिया के अधिकार से ब्रिटिश सरकार के आधीन हो गया ।[5] ललितपुर जनपद का दक्षिण-पूर्वी भाग और धमौनी पर 1707 ए॰डी॰ में छत्रसाल ने अधिकार किया था । 1731 ए॰डी॰ में यह क्षेत्र छत्रसाल के बड़े पुत्र हृदय शाह को मिला था । हृदय शाह के बाद यह भाग

1- बुन्देलों का इतिहास, पेज-115, श्रीवास्तव भगवानदास॰
2- झाँसी गजेटियर, पेज-52, ईशा बसन्त जोशी॰
3- फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश, भाग-3, पेज-4॰
4- झाँसी गजेटियर, पेज-53, ईशा बसन्त जोशी॰
5- वही॰

उसके पुत्र सभा सिंह को मिला । सभा सिंह का बड़ा पुत्र पृथ्वी सिंह ने सभा सिंह से अपने लिये एक स्वतन्त्र भाग मांगा, परन्तु सभा सिंह ने देने से इन्कार कर दिया । पृथ्वी सिंह ने मराठों से मिलकर शाहगढ़, गढ़कोट, मढ़ौरा का स्वतन्त्र राज्य सभा सिंह से प्राप्तकर लिया । पृथ्वीराज मराठों की सहायता से राजा हुआ, वह हमेशा उनका मित्र रहा । इसी वंश में अर्जुनसिंह (1810-1842) हुये, बाद में उनकी मृत्यु के बाद बख्तबली सिंह शाहगढ़ के अन्तिम जागीरदार हुए ।[1]

जिला ललितपुर 1857 से 1947 तक :

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के समय समस्त भारत में क्रांति की ज्वाला धधक रही थी, उस समय यह जनपद भी इस आग से वंचित न रह सका । पड़ोसी जनपद झाँसी में लक्ष्मी बाई इस क्रांति की मशाल उठाये अंग्रेजों से लोहा ले रही थीं । उसीसमय जनपद ललितपुर में बुन्देला ठाकुरों एवं राजपूतों ने मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह आरम्भ कर दिया जिसकी बागडोर राजा मर्दन सिंह सम्भाले हुये थे । 1857 के अप्रैल में ननकपुर (जनपद ललितपुर) के राजा की मृत्यु हो गई । एक "सन्धि-अनुबन्ध" के अनुसार उसके राज्य का तीसरा हिस्सा राजा बानपुर को दिया जाये एवं शेष भाग उसके उत्तराधिकारी को । परन्तु ब्रिटिश सरकार इस पर राजी नहीं हुई, इस कारण ननकपुर का शासक अंग्रेजों के खिलाफ हो गया । इसी समय इस जनपद का प्रशासन जैन-उल-आबदीन के हाथ में दे दिया गया जो कुशल प्रशासनिक अधिकारीनहीं था।

1- झाँसी गजेटियर, पेज-53, ईशा बसन्त जोशी।

मई के प्रारम्भ में गनेशजू एवं उनके पिता जवाहर सिंह भी अंग्रेजों के विरूद्ध हो गये ।[1] इस प्रकार इस जनपद के हर भाग से बुन्देला राजाओं का एक बड़ा समूह अंग्रेजों के प्रति विद्रोह को उठ खड़ा हुआ जिसमें चन्देरी, ललितपुर, तालबेहट के राजा भी थे । जून 11 एवं 12,1857 में राजा मर्दन सिंह ने मलथोन पर अपना अधिकार कर लिया और अपनी सेना में मजबूती के लिये लड़ाकू सैनिक एवं तोपचियों को भर्ती कर लिया एवं झाँसी से सम्पर्क बनाया ।[2] राजा मर्दन सिंह ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध अपना विद्रोह बराबर बनाये रहे एवं अपना हैड क्वार्टर मसौरा की गढ़ी को बनाया जो कि ललितपुर नगर से 4 मील दूर था । एक विशाल जन-समुदाय एवं बुन्देला राजा उनके झण्डे के नीचे आ गये ।[3] 13 जून 1857 को काफी बड़ी सेना एवं तोपों के साथ ललितपुर पर अधिकार कर लिया। जितने भी अंग्रेज अधिकारी एवं उनके परिवार वाले थे,उनको बन्दी बनाकर मसौरा की गढ़ी में रक्खा गया ।[4] बाद में दो दिन बाद उन्हें बानपुर में अंग्रेजों के एजेन्ट को सौंप दिया गया जिन्हें वह ओरछा ले गया ।[5] 18 जुलाई 1857 में झाँसी डिवीजन से इसका समाचार प्राप्त हुआ कि दिल्ली का पतन हो गया है एवं ब्रिटिश सरकार के आधीन हो गया है । फरवरी 1858 में मर्दन सिंह ने चन्देरी,बानपुर के अतिरिक्त नरहट पर भी अपना अधिकार कर लिया ।[6] 3 मार्च 1858 को ब्रिटिश सेना अधिकारी

1- ए झाँसी गजेटियर, पेज-59, जोशी ई0वी0·
2- फ्रीडम स्ट्रगल आफ यू0पी0,वोलयूम-3,पेज-110·
3- वही·
4- वही·
5- वही·
6- द रिवोल्ट आफ सेन्ट्रल इण्डिया,पेज-105,{शिमला 1908}·

ह्यूज रोज जो कि सागर में पहले से नियुक्त था, ललितपुर जनपद की ओर बढ़ा । शीघ्र ही उसने शाहगढ़, बालाबेहट पर अपना अधिकार कर लिया ।[1] इन जनपदों में अंग्रेजों का एवं स्वतंत्रता सेनानियों का संघर्ष इस प्रकार लगभग दो वर्ष तक चलता रहा । अन्त में 1858 के अन्त तक लगभग जनपद की समस्त बुन्देला रियासतें ब्रिटिश सरकार के आधीन हो गयीं । स्वतन्त्रता संग्राम के पश्चात् झाँसी इस क्षेत्र का डिवीजन बनाया गया । झाँसी के अतिरिक्त 3 जिले, ललितपुर, हमीरपुर व जालौन इस कमिश्नरी में शामिल किये गये ।

ललितपुर, जो कि पुराने जनपद चन्देरी एवं नरहट ताल्लुका का एक भाग एवं बानपुर व शाहगढ़ के राजाओं का पुराना कस्बा था । 1860 में ब्रिटिश सरकार के प्रशासन का एक नया जिला बना जिसके आधीन दो तहसीलें मड़ावरा एवं बानपुर थीं । 1861 में तहसील चंदेरी का मुख्यालय भी ललितपुर बनाया गया । 1866 में मड़ावरा एवं बानपुर तहसील समाप्तकर, महरौनी को तहसील का दर्जा दिया गया । इस प्रकार ललितपुर एवं महरौनी दो तहसीलें जनपद ललितपुर में हो गयीं । दिसम्बर 1891 में जिला ललितपुर का[2] विलीनीकरण झाँसी जनपद में हो गया । 1886 में कांग्रेस की स्थापना के बाद इस जनपद (झाँसी-ललितपुर) से शिवपति घोष नामक सज्जन चुनकर आए जो इंडिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में प्रतिनिधि बनकर गये थे ।[3]

1- द रिवोल्ट आफ सैन्ट्रल इण्डिया, पेज-105, (शिमला 1908).
2- झाँसी गजेटियर, पेज-2, जोशी ई0बी0.
3- वही; पेज-70.

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भी इस जनपद के सुदामा-प्रसाद गोस्वामी, औलाद हुसैन कमर आदि नेताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था ।[1]

प्रथम -"ब"

सामग्री-स्रोत का विश्लेषण :

जिला ललितपुर का इतिहास एवं सामाजिक, आर्थिक हालात जानने के लिये अधिकतर प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ, राज दरबारों के रोजनामचे, समकालीन कवियों, लेखकों की संकलन पुस्तकें एवं ब्रिटिश कालीन नेरिटिव रिपोर्ट, म्युटिनी पेपर, सेटिलमेन्ट रिपोर्ट्स आदि पर ही निर्भर रहना पड़ता है ।

प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ और राज दरबारों के समय के ऐतिहासिक दस्तावेज और रोजनामचे 1857 के गदर में या तो नष्ट हो गये या ब्रिटिश सरकार द्वारा नष्ट कर दिये गये । बानपुर के राजा मर्दन सिंह के पूर्वजों के समय का समस्त साहित्य ब्रिटिश आक्रमण के समय 1858 ई0 में जल करके नष्ट हो गया था । इस प्रकार झाँसी के राजा गंगाधर राव का एक विशाल पुस्तकालय एवं समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थ भी उस पुस्तकालय में 1857 के गदर में जल कर नष्ट हो गया था ।[2]

1- व्यक्तिगत साक्षात्कार (सुदामा प्रसाद गोस्वामी से)।
2- एट्टीन फिफ्टी सेवन, पेज-288, सेन एस0एन0, कलकत्ता 1958।

इस प्रकार §1866-1947§ का जिला ललितपुर सामाजिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक स्थिति जानने के लिये, रेवेन्यू रिकार्ड्स[1] आफिसियल डोकुमेंट्स[2] गजेटियर एवं समकालीन इतिहासकार मुंशी श्यामलाल दहलवी की पुस्तक "तवारीखे बुन्देलखण्ड"[3] एवं जनश्रुतियों पर ही निर्भर रहना पड़ता है ।

सैटिलमेन्ट रिपोर्ट :

जिला ललितपुर का इतिहास एवं सामाजिक व आर्थिक हालात जानने के लिये ब्रिटिश सरकार द्वारा तैयार की गई सैटिलमेन्ट रिपोर्ट मुख्य आधार है । इसमें उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त के 50 साल का आर्थिक एवं सामाजिक हालात एवं समय-समय पर ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा राजस्व सम्बन्धी वसूली का वर्णन प्राप्त होता है । सर्वप्रथम ई0जी0 जेनिकसन ने इस रिपोर्ट को गवर्नमेन्ट प्रेस, इलाहाबाद से 1871 ई0 में मुद्रित करवाया था ।[4]

एक अन्य सेटिलमेन्ट रिपोर्ट जिला झाँसी §1864, 1892 एवं 1903§ एवं ललितपुर §1869, 1898 एवं 1903§ में भी उपरोक्त तथ्यों का वर्णन किया गया है, परन्तु इस रिपोर्ट में उस समय के सामाजिक, आर्थिक हालात, रीति-रिवाज एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से उचित तरह से नहीं दर्शाया गया है । इसका कारण उसमें यहाँ की रूढ़ीवादी एवं पिछड़ेपन का

1- जेनकिन्शन ई0जी0, इम्पे किट §रिन्यु रिपोर्ट्स§ पेज-1.
2- झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पाठक एस0पी0. पेज-4, दिल्ली.
3- तवारीखे बुन्देलखण्ड, नौगाँव 1880, मुंशी श्यामलाल.
4- झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पाठक एस0पी0, पेज 2-3, दिल्ली 1986.

होना बताया गया है ।[1] अगर फिर इन रिपोर्टों को उपरोक्त कमियों को भुलाकर उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाये तो उन्नीसवीं शताब्दी के 50 वर्षों की ऐतिहासिक घटनाएं एवं सामाजिक और आर्थिक हालात की अधिकतर सूचनाएं हमें प्राप्त होती हैं ।

जिला गजेटियर :

इस क्षेत्र को सामाजिक, आर्थिक स्थिति एवं ऐतिहासिक घटनाएं जानने का दूसरा स्रोत है "जिला गजेटियर"। बुन्देलखण्ड क्षेत्र का प्रथम गजेटियर जिसमें ऐतिहासिक घटनाओं का लेखाजोखा एवं सामाजिक, आर्थिक हालात, जनसंख्या, फसलें, उद्योग-धन्धों आदि का वर्णन किया गया था, जो कि नार्थ-ईस्ट प्रोविन्स आफ इण्डिया, में किया गया था जिसका सम्पादन एडविन, आई, एटकिन्शन द्वारा किया गया था जोकि भारत सरकार की आज्ञा अनुसार मुद्रित किया गया था । इसका प्रथम भाग बुन्देलखण्ड संबंधी था और यह गवर्नमेन्ट प्रेस, इलाहाबाद से 1874 ई0 में मुद्रित हुआ था ।

यद्यपि ब्रिटिश सरकार का यह प्रयास सराहनीय था कि उन्होंने प्रत्येक प्रदेश एवं जिलों की जानकारी के लिये यह गजेटियर तैयार करवाये थे, परन्तु इसमें भी उनका स्वार्थ छुपा हुआ था । प्रथम तो यह कि प्रत्येक जिले का इतिहास अपने हिसाब से लिखवाते थे तथा सामाजिक एवं आर्थिक एवं उस क्षेत्र के पिछड़ेपन को खोजपूर्ण तथ्यों से नहीं लिखते थे ।

इस सम्बन्ध में बर्गेस महोदय लिखते हैं- मि0एटकिन्शन ने समस्त बुन्देलखण्ड की पूर्ण रूप से यात्रा नहीं की, केवल लोगों से मिलकर ही इस क्षेत्र का विवरण इकट्ठा किया है । प्राचीन धार्मिक पौराणिक ग्रन्थ को

1-पिम ए0डब्ल्यू0, फायनल सैटिलमेन्ट रिपोर्ट आफ झांसी सब डिवीजन ललितपुर, इलाहाबाद 1907, पेज-2.

नहीं देखा, वह पूर्ण रूप से पटवारी एवं मुंशियों पर आश्रित रहे, जो उन्होंने सूचना दी, वह ही उन्होंने लिखा।[1] परन्तु यह गजेटियर उपरोक्त कारण को छोड़कर लाभकारी ही सिद्ध होता है, क्योंकि इसमें 1872 ई० की समाप्ति तथा 1874 की घटनाओं का काफी लेखाजोखा है और कुछ घटनाएं जो एटकिन्शन महोदय ने लिखी हैं वह मेजर पिन्के की रिपोर्ट के आधार पर लिखीं जो कि उन घटनाओं के चश्मदीद गवाह थे।[2]

एटकिन्शन महोदय के सम्पादित गजेटियर के बाद दो गजेटियर झाँसी, ललितपुर जिले के और मुद्रित हुये। प्रथम डी०एल० ड्रेक ब्रोक मैन द्वारा सम्पादित 1909 में प्रकाशित हुआ था एवं द्वितीय ईशा बसन्त जोशी द्वारा सम्पादित 1965 ई० में प्रकाशित हुआ था।

ड्रेक ब्रोक मैन द्वारा सम्पादित 1909 का गजेटियर (झाँसी-ललितपुर) के समय ललितपुर जिला 1891 में झाँसी में मर्ज कर दिया गया था, इस कारण ललितपुर, झाँसी का सब डिवीजन बन गया था और जिलों का मिश्रित वर्णन इसमें किया गया है।

1965 ई० में ईशा बसन्त जोशी द्वारा सम्पादित झाँसी गजेटियर को स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् लिखा गया था अतः इसमें पूर्ण रूप से इस जिले के समस्त और सही आर्थिक व सामाजिक एवं ऐतिहासिक सामग्री को एकत्रित किया गया।

1- बर्गेस जे०ए०एस०, इण्डियन एण्टीक्वारी, भाग-4, पेज 190-191.

2- एटकिन्शन ई० टी०, पेज 300-301.

तवारीखे बुन्देलखण्ड :

सेटिलमेन्ट रिपोर्ट्स एवं गजेटियर के अतिरिक्त बुन्देलखण्ड सम्बन्धी इतिहास की जानकारी के लिये प्रमुख साधन है मुंशी श्यामलाल देहलवी द्वारा लिखित पुस्तक "तवारीखे बुन्देलखण्ड" से प्राप्त होती है। पुस्तक मूल रूप से उर्दू भाषा में मुद्रित है। पुस्तक पाँच भागों में नौगाँव से 1880 में प्रकाशित हुई थी। इसमें बुन्देलखण्ड के पाँच जिलों, झाँसी, ललितपुर, बाँदा, हमीरपुर, जालौन का ऐतिहासिक, सामाजिक तथा आर्थिक घटनाओं का वर्णन किया गया है। समकालीन राजा-महाराजाओं के ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध तथा राजाओं की वंशावली आदि का वर्णन वृहद् रूप में किया गया है। जिला ललितपुर के समस्त राजाओं और जागीरदारों का वर्णन, कृषि, हथकरघा आदि का वर्णन भी किया गया है।[1]

अन्य स्रोत :

उपरोक्त स्रोतों के अतिरिक्त जिला ललितपुर के इतिहास संबंधी जानकारी पं० गोरेलाल तिवारी की पुस्तक[2] और दीवान प्रतिपाल सिंह की पुस्तक[3] से प्राप्त होती है तथा कुछ स्रोत इस क्षेत्र के प्राचीन नागरिक लोक कथाओं तथा जनश्रुतियों एवं लोक-गीतों से प्राप्त होती है।[4] इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के अर्द्धशतक का ऐतिहासिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी उपरोक्त सामग्री से प्राप्त होती है।

1- मुंशी श्यामलाल, तवारीखे बुन्देलखण्ड, भाग-4, पैज 112-113.
2- बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, प्रथम संस्करण, संवत् 1990,
3- बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, सिंह प्रतिपाल, संवत् 1885, बनारस.
4-

प्रथम - "स"

भौगोलिक स्थिति

जिला ललितपुर को भौगोलिक रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है ।[1]

1- काली मिट्टी का मैदानी भाग ।

2- लाल मिट्टी का पठारी भाग ।

3- विंध्य श्रेणी का पहाड़ी भाग ।

काली मिट्टी का मैदानी भाग :

काली मिट्टी का मैदानी भाग ललितपुर नगर के चारों ओर तथा नगर से लेकर मैहरौनी तथा मड़ावरा कस्बे तक त्रिभुजाकार के रूप में फैला हुआ, इस मैदानी भाग में छोटे-छोटे नाले जो कि पठारी भाग से बहकर आते हैं, अपने साथ छनी हुई मिट्टी बहा कर लाते हैं, इसके अतिरिक्त इस मैदानी भाग में "शहजाद", "सजनाम" तथा "जामनी" नदियाँ भी बहती हैं । काली मिट्टी का अन्य भू-भाग बेतवा नदी तथा धसान नदी के किनारे भी कहीं-कहीं पाये जाते हैं ।[2]

लाल मिट्टी का पठारी भाग :

यह पठारी भाग दक्षिण से पश्चिम तक फैला हुआ है । सफेद पत्थरों से मिश्रित यह कंकड़ीली मिट्टी का ऊँची-नीची पहाड़ियों के रूप में दूर तक फैला हुआ, कहीं पर यह एक ऊँचे टीले का रूप लेलेता है।

1- झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0 1965, पेज 3-4.

2- व्यक्तिगत् सर्वे ।

इसमें कहीं-कहीं पर ग्रेनाइट पत्थरों की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी मिलती हैं । इन लाल मिट्टी के टीलों को कटीली झाड़ियों ने एवं छोटे-छोटे पेड़ों ने ढंक रक्खा है । यह झाड़ियाँ झरबेरी, करोंदे आदि की होती हैं तथा पेड़ अधिकतर बबूल, ढाक के होते हैं । बरसाती नालों के बहने से इन मिट्टी के टीलों के बीच गहरी घाटियाँ बन गई हैं ।[1]

विन्ध्य श्रेंणी का पहाड़ी भाग :

दक्षिण में देवगढ़ से लेकर मदनपुर तक फैला हुआ है । ग्रेनाईट एवं दूधिया पत्थरों के यह ऊँचे पर्वत विन्ध्य श्रेंणी की एक श्रृंखला है । इसमें देवगढ़, दुधई, बालाबेहट एवं भरतपुर कस्बे हैं ।[2]

जलवायु :

इस जनपद की जलवायु गर्म, हल्की गर्मी और तेज सर्दी के रूप में पूरे वर्ष में पाई जाती है । वर्ष के तीन माह तेज सर्दी जो कि दिसम्बर से फरवरी तक होती है । मार्च से मध्य जून तक तेज गर्मी एवं मध्य जून से मानसून सीजन या वर्षा प्रारम्भ होती है जो अक्टूबर, नवम्बर तक चलती है ।[3]

1- व्यक्तिगत् सर्वे ।
2- ललितपुर गजेटियर, पेज 3-4.
3- झाँसी गजेटियर, पेज-9.

क्षेत्रफल

जिला ललितपुर जो कि पुराने चन्देरी जिले एवं नरहट ताल्लुके का एक भाग हुआ करता था, जो कि राजा बानपुर एवं शाहगढ़ की जागीर थी । सन् 1860 में यह ब्रिटिश सरकार के आधीन हुआ तब इसे एक अलग जिला बनाया गया जो 1891 ई० तक रहा ।[1]

स्थिति

जिला ललितपुर 24°2 एन॰अक्षांश एवं 78°27 ई॰ देशान्तर पर स्थित है ।[2] इसके उत्तर-पश्चिम में बेतवा नदी बहती है, उत्तर-पूर्व में ओरछा राज्य की सीमा आरम्भ होती है एवं धसान नदी बहती है, दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर नारायण नदी बहती है, दक्षिण में सागर जनपद एवं मध्य प्रदेश है ।[3]

क्षेत्रफल

जिला ललितपुर का 1872 ई0 के सर्वेक्षण के अनुसार 1947 वर्ग मील था । जिले के क्षेत्रफल निम्नलिखित चार्ट के अनुसार था ।[4]

तहसील	परगना	क्षेत्रफल वर्ग मील
ललितपुर	तालबेहट	283
	बाँसी	149
	ललितपुर	438
	बालाबेहट	190
मैहरौनी	बानपुर	329
	मैहरौनी	153
	मड़वारा	405
कुल क्षेत्रफल	..	1947 वर्ग मील

1- झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0 1965, पेज-2.
2- ललितपुर गजेटियर, एटकिन्शन ई0टी0 1874, पेज-2.
3- मानचित्र 1872.
4- एटकिन्शन ई0टी0, पेज 305.

सेटिलमेन्ट आफीसर पिम ने जिला झाँसी एवं ललितपुर सब डिवीजन की मिट्टी का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया था । ए0डब्लू0पिम द्वारा सन् 1903 ई0 में किया गया था । 1891 ई0 में जिला ललितपुर काझाँसी जिले में मर्ज होने के पश्चात् यह बन्दोवस्त किया था ।[1]

भौगोलिक स्थिति

जिला ललितपुर की भौगोलिक स्थिति पर नजर डालें तो निम्न विशेषताएं दिखलाई देती हैं :-

1- काली मिट्टी का मैदानी भाग ।
2- लाल मिट्टी का पठारी भाग ।
3- विन्ध्य पहाड़ियों का भाग ।

मिट्टी का वर्गीकरण[2]

झाँसी स्थानीय			ललितपुर सब डिवीजन		
मिट्टी का वर्ग	क्षेत्र	कुल जोतेहुए क्षेत्र का %	मिट्टी का वर्ग	क्षेत्र	कुल जोतेहुए क्षेत्र का %
मार	118,718	28·17	तरेता	8,813	2·93
काबार	108,052	25·64	मोती	72,329	24·06
पारूआ	83,206	19·74	दुमट	108,515	36·11
राकरमोती	39,750	9·43	पतरी	103,914	34·57
राकरपतरी	68,455	16·24	तारी (एक फसली)	3,321	1·10
तारी	2,911	0·69	तारी (दो फसली)	2,416	0·80
कछार	371	0·09	झाई (दो फसली)	1,283	0·43
टोटल	421,463	100·00	टोटल	300,591	100·00

1- फा0से0रि0 झाँसी डिस्ट्रिक इनक्लूडिंग द ललितपुर सब डिवीजन, इलाहाबाद 1907·

2- पिम ए0डब्लू0, पेज-5, फायनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट आँन द रिवीजन आफ द झाँसी डिस्ट्रिक इनक्लूडिंग द ललितपुर सब डिवीजन, इलाहाबाद 1907·

मिट्टी

इस जनपद में प्राय: दो प्रकार की मिट्टी पाई जाती है -- 1- लाल मिट्टी, 2- काली मिट्टी ।[1]

1892 के सैटिलमेन्ट रिपोर्ट के अनुसार जिला जनपद में दो तरह को मिट्टी का वर्णन किया गया है । एक उपजाऊ मिट्टी एवं एक बंजर या बेकार मिट्टी ।

उपजाऊ किस्म की मिट्टियों में, मार, काबार, पारू एवं तारी मिट्टियां बताई गई हैं । बंजर और बेकार मिट्टी राकर का बताया गया ।[2]

नदियां

इस जनपद की प्रमुख नदियां हैं - बेतवा; धसान, शहजाद, जामनी, सजनाम, नारायण । इसके अतिरिक्त अन्य बरसाती नदियां जो कि बड़े नालों के रूप में हैं, बांदी, सूखी, सुख, खरवार, बारूआ आदि हैं ।[3] बेतवा, धसान, नारायण क्रमश: पूर्व, पश्चिम एवं दक्षिणी सीमा पर बहती हैं । शहजाद, सजनाम एवं जामनी नदियां जनपद के मध्य में बहती हैं ।[4]

बेतवा :

इस नदी का उद्गम भोपाल का ताल से है एवं 400 मील की लम्बी यात्रा करके हमीरपुर जिले के पास यमुना में विलीन हो

1- सोयल आफ इण्डिया, राय चौधरी 1963 दिल्ली, पेज 331-332.
2- इम्पे और मेस्टन, द्वितीय सैटिलमेन्ट रिपोर्ट 1892.
3- ललितपुर गजेटियर के मानचित्र के अनुसार 1874, एटकिन्शन ई0टी0.
4- झांसी गजेटियर, पेज 4-5, जोशी ई0बी0.

जाती है[1]। यह नदी जिला ललितपुर में दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर विन्ध्य पर्वत की श्रेणी को काट कर देवगढ़ कस्बे से प्रवेश करती है, तदोपरान्त 60 मील तक मध्य प्रदेश और ललितपुर जनपद की सीमा पर बह कर उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है और तीन मील तालबेहट तहसील में बहती है । इसके बाद 8 मील झाँसी-ललितपुर सीमा पर बह कर मध्य प्रदेश में प्रवेश करती है ।[2]

धसान :

भोपाल के सिरमऊ पहाड़ों से इसका उद्गम[3] हुआ है । यह नदी इस जनपद के दक्षिण में सागर जनपद से आकर बनगवारा ग्राम (तहसील महरौनी) से इस जनपद की सीमा को 25 मील तक छूती हुई पुन: मध्य प्रदेश में प्रवेश कर जाती है ।[4]

जामनी :

यह नदी मध्य प्रदेश से आकर मदनपुर ग्राम से इस जनपद में प्रवेश करती है और महरौनी तहसील के दक्षिणी भाग में बहकर उत्तर की ओर बढ़ती है । जनपद ललितपुर और मध्य प्रदेश की सीमा पर बह कर बेतवा में मिल जाती है ।[5]

1- बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पेज-34, दीवान प्रतिपाल।
2- झाँसी गजेटियर, पेज-4, 1965।
3- चन्देल और उनका राजत्व काल, पेज-11, मिश्र।
4- झाँसी गजेटियर, पेज-4।
5- झाँसी गजेटियर, पेज-6, 1965, जोशी ई०बी०।

उपरोक्त नदियों के अतिरिक्त शहजाद एवं सजनाम नदियाँ क्रमश: महरौनी एवं ललितपुर तहसील के मध्य में बहकर जामनी में मिल जाती है ।[1]

पर्वत :

फ्रैंकलिन ने बुन्देलखण्ड के अपने भू-गर्भ वर्णन में विन्ध्याचल की पहाड़ियों का वर्णन किया है जो केशवगढ़, सिन्धु नदी (म०प्र०) के तटों से आरम्भ होकर जिला ललितपुर होकर कालिंजर तक जाती है ।[2] जिला ललितपुर में यह श्रेणी द०प० सीमा से आरम्भ होकर द० पूर्वी सीमा तक जाती है ।[3] सर्वेक्षण करने पर जनपद का अधिकतर भाग पहाड़ी ही दिखाई देता है, जो कहीं पर ग्रेनाईट पत्थरों के रूप में तथा मिट्टी के टीलों के रूप में है । सन् 1892 ई० के दूसरे सैटिल-मेन्ट रिपोर्ट में भी सैटिलमेन्ट अधिकारी इम्पे और मेस्टन ने ललितपुर जिले के विन्ध्य श्रेणी का वर्णन किया है ।[4]

1- मानचित्र जिला ललितपुर.

2- उत्तर प्रदेश सीमा प्रान्त, भाग-1, पृ० 54.

3- मानचित्र जिला ललितपुर.

4- सर्वे रिपोर्ट आफ सैकेण्ड सैटिलमेन्ट आफ झाँसी डिस्ट्रिक्ट, इलाहाबाद 1992, पेज-12.

प्रथम- "द"

भौगोलिक परिस्थितियों का सामाजिक व आर्थिक स्थिति पर असर

किसी भी स्थान का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है । मुख्य रूप से भारत देश का, जो कि मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश है, यहाँ का आर्थिक एवं सामाजिक विकास पूर्णरूप से वर्षा पर आधारित है । इस कारण यहाँ को कृषि जो कि पूर्णरूप से वर्षा पर आधारित "वर्षा का जुआ" कहा जाता है ।

इसी प्रकार इस जनपद का सामाजिक एवं आर्थिक भविष्य वर्षा एवं यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है । यह जनपद कर्क रेखा के उत्तर में पड़ता है और इसका अधिकतर भाग समशीतोष्ण कटिबन्ध में पड़ता है । वर्षा का औसत 34•64" है ।

उपरोक्त भौगोलिक परिस्थितियों पर यहाँ का आर्थिक ढाँचा टिका हुआ है । यहाँ पर जो नदियाँ बहती हैं अथवा जो बरसाती

नाले हैं, वह अधिकतर गर्मियों में सूख जाते हैं । बेतवा एवं धसान को छोड़कर बाकी नदियों का जल-स्तर भी न के बराबर हो जाता है । बेतवा, धसान भी पठारी भाग में बहने के कारण एवं ग्रीष्म ऋतु में जगह-जगह झीलों में परिवर्तित हो जाती हैं । अगर जून से वर्षा आरम्भ नहीं होती है तो यह पानी भी सूख जाता है । इस कारण अगली फसल एवं जानवरों का चारा आदि पूर्ण रूप से वर्षा पर निर्भर रह जाता है । इसलिये यहाँ की खेती एवं व्यापार पूर्ण रूप से वर्षा पर ही निर्भर है ।

पठारी भाग जो कि छोटे और बड़े टीलों या पर्वत का रूप में हैं, उन पर काँटेदार झाड़ियाँ तथा बबूल आदि के पेड़ भी इस वर्षा के कारण उग आते हैं जिससे जलाऊ लकड़ी एवं इमारती लकड़ी मिलती है । लाल एवं पीली मिट्टी भवन-निर्माण में काम आती है । ग्रेनाईट पत्थर एवं भवन-निर्माण पत्थर भी विन्ध्य श्रेणी एवं स्थान-स्थान पर छोटी पहाड़ियों से प्राप्त होती है । इसके अतिरिक्त यहाँ के वनों से कत्था, शहद आदि भी प्राप्त होता है जो कि यहाँ की आर्थिक कड़ी है ।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यहाँ की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों से पूर्ण रूपसे प्रभावित है ।

••••••:0:••••••

अध्याय - द्वितीय
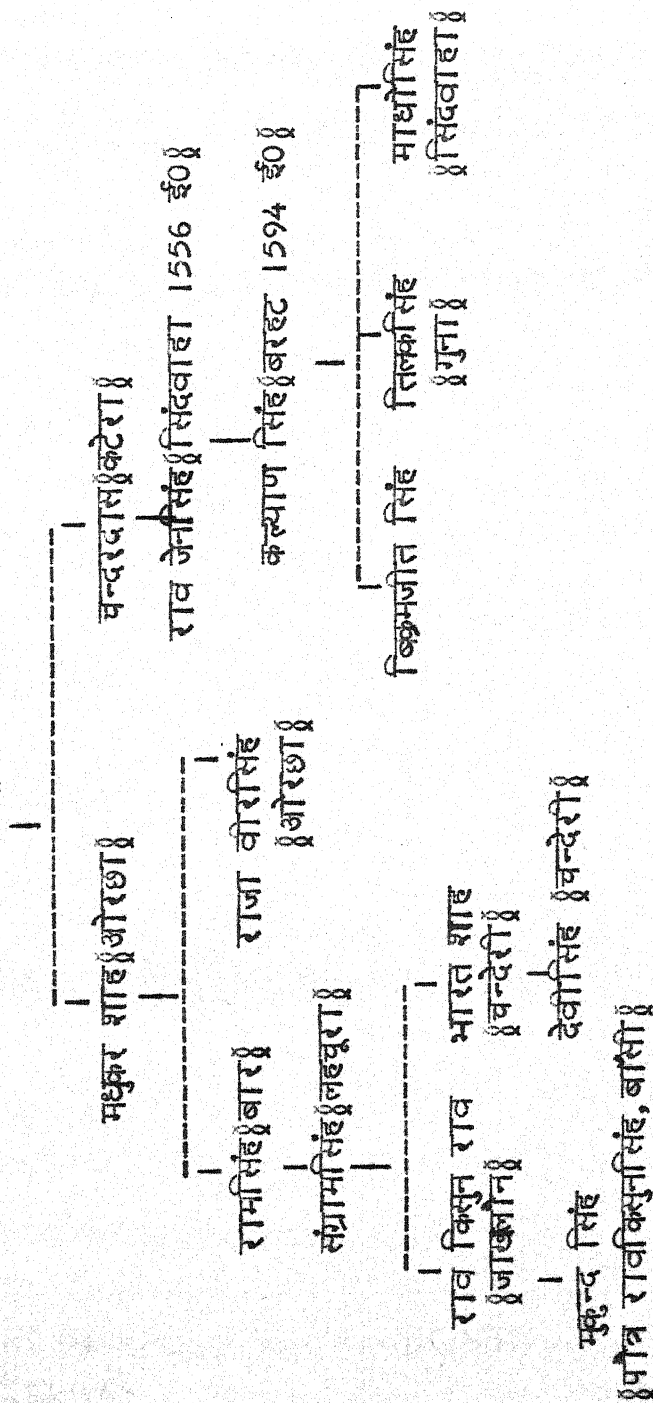
महात्वपूर्ण जमींदारो का इतिहास

1- तवारीखे-बुन्देलखण्ड, मुंशी श्यामलाल देहल्वी 1880, नौगाँव, पेज 47, भाग-4 एवं बुन्देलों का इतिहास पृष्ठ 59, भगवानदास श्रीवास्तव एवं भगवानदास खरे, देहली 1982.

महत्वपूर्ण जमींदार परिवारों का इतिहास

चन्देलों की राज्य सत्ता लुप्त होने के पश्चात् इस भू-भाग पर एक नये राजवंश का उदय हुआ जो बुन्देला राजवंश के नाम से जाना जाता है । शनैः शनैः इस समस्त भू-भाग पर बुन्देले शासकों का अधिकार हो गया । 1531 ई० में इसी वंश के शासक रूद्रप्रताप ने अपनी राजधानी ओरछा बनायी ।[1] तब से बुन्देली राज्य सत्ता का केन्द्र ओरछा हो गया और यहीं से समस्त बुन्देलखण्ड में इस वंश की शाखाएं फूटीं । इनमें से एक राजा रूद्रप्रताप के वंश के नाम से जानी जाती है तथा एक अन्य शाखा ओरछा के सरदार राव चम्पत राय के वंश से जानी जाती है जिनका पुत्र छत्रसाल था । समस्त बुन्देलखण्ड में जितने भी राजा, जागीरदार व जमींदार हैं वह इन दो राज्य-वंशों से कहीं न कहीं जुड़े हैं ।

मराठा जमींदार वजागीरदार :

बुन्देलखण्ड की अनेक जागीर, मराठा जागीरदारों के अधीन हैं । मराठों का आगमन इस भू-भाग पर 1729 ई० से हुआ, जब बुन्देलखण्ड पर मुगल सूबेदार नवाब बंगश ने हमला कर छत्रसाल को जौनपुर के किले में घेर लिया । बाजीराव प्रथम की मदद के कारण छत्रसाल विजयी रहा, तब छत्रसाल ने अपने राज्य का एक चौथाई भाग बाजीराव प्रथम को दिया । बाजीराव के भाग में कालपी• सिरोंज, भेलसा, गुना और

1- बुन्देलों का इतिहास, श्रीवास्तव, खरे, भगवानदास, दिल्ली 1982, पृष्ठ 13-14•

सागर प्राप्त हुए । बाजीराव ने अपना केन्द्र सागर बनाकर बुन्देलखण्ड में मिले अपने भू-भागों पर अपने अधिकारी नियुक्त किये । बुन्देलखण्ड में मराठे जागीरदार व जमींदार इन्हीं अधिकारियों के वंशज अधिकतर हैं ।[1]

जिला ललितपुर के प्रमुख जागीरदार एवं जमींदार :

इस जिले के प्रमुख जमींदार बुन्देला ठाकुर हैं । 1903 ई० के फायनल सेटिलमेन्ट में सेटिलमेन्ट अधिकारी ए०डब्लू०पिम ने झाँसी जिले के सब डिवीजन ललितपुर में निम्न जमींदारों व जागीरदारों का वर्णन किया है :-

पिम महाशय के अनुसार इस जनपद में सबसे मजबूत स्थिति में जाखलौन के ठाकुर हैं इसके अतिरिक्त उन्होंने निम्न जमींदारों का वर्णन किया है उन कस्बों के नाम हैं - राजवाड़ा, दलवाड़ा, गेओरा, गडैरा, सिरसी के महन्त, ललितपुर के चौबे, चन्देरी के चौधरी एवं बमराना के सेठ ।[2]

तवारीखे-बुन्देलखण्ड में श्यामलाल देहलवी ने जिला ललितपुर में निम्न जमींदार व जागीरदारों का वर्णन किया है वह निम्न हैं:-

जाखलौन, राजवाड़ा, दहलवाड़ा, डोंगरा, कोटरा, राजगढ़, भलोनी, मोहदर, नरहट, गुना, गढ़होना, गुगोरा, सिरसई ।[3]

1- महाराजा छत्रसाल बुन्देला, गुप्ता भगवानदास, आगरा 1958, पेज 90.
2- फायनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट झाँसी डिस्ट्रिक इन्क्लूडिंग सब डिवीजन-ललितपुर, इलाहाबाद 1907, पेज-9.
3- तवारीखे बुन्देलखण्ड, भाग-4, पृष्ठ 11, 12, 13, 14, मुंशी श्यामलाल-देहलवी, नौगाँव 1880.

उपरोक्त जमीदारों एवं जागीरदारों कें अधिकार में ललितपुर जिले के अधिकतर गाँव,कस्बे एवं कृषि-भूमि थी ।

खण्ड-2 "ए"

जमीदारों द्वारा अधिग्रहित किया गया क्षेत्र

इस जनपद की अधिकतर जागीर,बुन्देला जागीरदारों अथवा जमीदारों के अधिकार में ही थी जो कि ब्रिटिश सरकार द्वारा एक विशेष सन्धि के तहत उनको अर्जित की गई थी । इस सन्धि का नाम सेटिलमेन्ट अधिकारी पिम तथा एटकिन्शन ने "हक-बटोटा" बताया है ।[1]

हक-बटोटा संधि :

यह संधि ग्वालियर के सिंधिया एवं बुन्देलों के बीच सन् 1830 ई0 एवं 1838 ई0 में चन्देरी के शासक मोर प्रहलाद और सिंधिया हुये थे ।[2]

1- पिम.ए0डब्लू0,फायनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट,पृ0-9.
2- झाँसी गजेटियर,जोशी ई0बी0 1965,पृ0 53.

सन् 1811 में ग्वालियर के सिंधिया ने एक बड़ी सेना कर्नल जीन बापटिस्ट फिलोस के नेतृत्व में चन्देरी पर आक्रमण के लिये भेजी, इस समय चन्देरी के शासक मोर प्रहलाद बुन्देला था जो इस समय अपने परिवार के साथ झाँसी गया हुआ था ।[1] उसकी अनुपस्थिति में उसके दो सरदार, तख्तसिंह एवं कुँवर उमराव सिंह, किले की रक्षा करते रहे । पर एक विश्वासघाती बोधसिंह (जो कि सिलगन का ठाकुर था) द्वारा सिंधिया सेना से परास्त हो गये और कैद कर लिये गये ।[2] इस तरह सिंधिया ने चन्देरी पर अधिकार कर उससे एक संधि की, जो हक बटोटा के नाम से जानी जाती है ।[3]

हक-बटोटा संधि के अनुसार राजा या जागीरदार को राज्य या जागीर का 1/3 भाग ही प्राप्त होता था, बाकी 2/3 सिंधिया को देना[4] पड़ता था । इस तरह की संधि मोर प्रहलाद के साथ की गयी, परन्तु मोर प्रहलाद इस संधि से पूर्णत: सन्तुष्ट नहीं हुआ, इस कारण 1838 ई0 में दोबारा संधि की गयी जिसके अनुसार जागीर या राज्य का मालिक बना रहता था, लगान का आधा भाग सिंधिया को देना पड़ता था ।[5]

1- फ्रीडम स्ट्रगल इन उ0प्र0, भाग-3, पेज-4.
2- झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0 1965, पेज-53.
3- एटकिन्शन ई0टी0, पेज 352-353.
4- झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0, पेज 53.
5- बुन्देलों का इतिहास, पेज 167.

जिला ललितपुर, प्रमुख जागीरें और उनके क्षेत्रफल एवं उनके उत्तराधिकारी:

जाखलौन के जमीदार :

जाखलौन के जमीदार जिला ललितपुर के एक बड़े एवं प्रमुख जमीदार थे। यह जागीर परगना बालाबेहट के अन्तरगत् आती है।[1] जमीदार जाखलौन के परिवार का सम्बन्ध ओरछा के राजा रूद्रप्रताप के वंशज से था। राजा रूद्रप्रताप को पौत्र एवं मधुकर शाह के ज्येष्ठ पुत्र रामशाह ओरछा की गद्दी के अधिकारी थे, परन्तु सम्राट जहाँगीर ने ओरछा की गद्दी उनके छोटे भाई वीरसिंह देव को दी और रामशाह को प्रसन्न रखने के लिये उसे चन्देरी के पास बार की जागीर दी गयी।[2] 1643 में इस जागीर का मूल्य 75000/=रू० था एवं उसका अधिकारी रामशाह का पौत्र एवं संग्राम सिंह का पुत्र रावकिशुन राव हुआ। राव-किशुन राव के पुत्र उदयभान एक लड़ाई में शाहजहाँ की शाही फौज में काबुल में मारा गया। शाहजहाँ ने उसके पुत्र मुकुन्दसिंह के दीवान की पदवी देकर 58 गाँव की जागीर इटावा परगने में (ललितपुर के दक्षिण-पश्चिम में) इनाम स्वरूप दी जो कि बांसी का जागीरदार था। मुकुन्द सिंह का एक पुत्र था नारायण जू, जो कि उसके बाद उसकी जागीर का अधिकारी हुआ। 1737 ई० में वह दतिया के पास एक लड़ाई में मारा गया। उसका पुत्र धुमगद सिंह के बाद 1794 में यह जागीर उनके चार पुत्रों में बाँट दी गयी।[3]

1- झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पाठक एस०पी०, दिल्ली।
2- बुन्देलों का इतिहास, श्रीवास्तव, खरे, दिल्ली, पृ० 58।
3- ड्रेक ब्राउन, पेज 108।

छत्तर सिंह एवं उदय सिंह को 3-8 के हिसाब से तथा बख्त सिंह को 1-8 के हिसाब से जागीर में भाग प्राप्त हुये ।[1] दीवान बख्त सिंह के पूर्वज दीवान विजय बहादुर ने ननौरा की गढ़ी बनवायी थी ।[2] बरोदा-स्वामी की गढ़ी उमराव सिंह ने बनवायी थी जो देवीसिंह जाखलौन का पूर्वज था । छत्तर सिंह एवं उदयजीत सिंह इस परिवार के प्रमुख व्यक्ति हुये ।[3] जाखलौन जमीदारों की जमीदारी निम्न थी - 19 गाँव परगना बालाबेहट में, 8 गाँव परगना ललितपुर में, 6 गाँव बांसी में, 2 गाँव बानपुर में[4] इसके अतिरिक्त 12 अन्य गाँव सिंधिया एवं सागर से प्राप्त हुए थे ।[5]

पाली के जमीदार :

पाली की जागीर थी बालाबेहट परगने में आती है । इसके वंशज भी ओरछा वाले रामशाह (पौत्र रूद्रप्रताप) की शाखा के थे । राजा रामशाह के परपौत्र राजा दुरजनसिंह 1713-1758 तक चन्देरी के राजा रहे,उनके पुत्र राजा जोरावर सिंह को पाली की जागीर उनके पिता दुरजनसिंह ने दी थी । ड्रेक ब्रौक मैन के अनुसार 1780 में चन्देरी की जागीर जब्त करली गई थी,एवजी में केवल 22 गाँव मिले थे । अगले दस वर्ष में 13 गाँव की इसमें और बढ़ौती करदी गई थी । इसी वंश के अन्तिम राजा मोर प्रहलाद हुए ।[6]

1- ड्रेक ब्रोक मैन डी०एल०, गजेटियर आफ झाँसी 1909,इलाहाबाद पेज 108-109.
2- वही.
3- वही.
4- वही.
5- वही.
6- एटकिन्शन ई०टी०, पेज 346.

नरहट :

इस जागीर के वंशज भी ओरछा के बुन्देला सरदार थे। 1594 ई0 में राव जेट सिंह के बड़े पुत्र राव कल्यान सिंह ने सर्वप्रथम इस जागीर पर अपना अधिकार किया था।[1] 1861 में जिला ललितपुर के बनने पर सागर से 15 गाँव इस ताल्लुके में जोड़ दिये गये थे। राजा बख्तबली नरहट के जमीदार परिवारों के प्रमुख व्यक्ति हुये हैं।[2] इस जागीर में राव बख्तबली के अतिरिक्त दीवान परीक्षत सिंह, कुँअर बलवन्त व चहन सिंह आदि जागीरदारों का अधिकार था। इस जागीर का वार्षिक राजस्व 12,000/=रू0 था।[3]

सिंदवाह :

राजा रूद्रप्रताप (ओरछा के संस्थापक) के छोटे पुत्र चन्दरदास (उर्फ चाँद पहाड़)[4] ने 1556 ई0 में सिंदवाह जागीर अपने पुत्र राव जेट सिंह को दी थी।[5] 1857 के बाद यह जागीर नरहट जागीर में शामिल हो गयी थी।[6]

1- ड्रेक ब्राक मैन डी0एल0, पेज 104.

2- एटकिन्शन ई0टी0, पेज 347.

3- तवारिखे बुन्देलखण्ड, पेज 114, श्यामलाल.

4- झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0, 1965, पेज 54.

5- ड्रेक ब्राक मैन, पेज 106.

6- वही.

डोंगरा कलां :

इस जागीर के जागीरदार या जमीदार बुन्देला ठाकुर थे। यह जागीर मंडौरा परगने में आती है। इस जागीर के वंशज उदयभानु पुत्र कल्यान सिंह नरहट वाले थे।[1] 1859 ई० ब्रिटिश सरकार ने 7 गांव डोंगरकलां के ठाकुरों को प्रदान किये थे जिसका राजस्व 1000/= रूपया सरकारी सिक्का था।[2]

गुना :

यह परगना नरहट में आता था। इस जागीर के वंशज, दंगल सिंह व दीवान गनेश जू व दीवान अर्जुन सिंह बुन्देला थे। इस जागीर का वार्षिक राजस्व 6000/=रू० था जिसमें से 1700/= रू० सरकार को देना था।[3]

राजवाड़ा :

इस जागीर के वंशज चन्देरी के बुन्देला ठाकुर थे। इसके अंतिम जागीरदार अर्जुन सिंह थे। इसका राजस्व 10,000/=रू० साल था जिसमें 1900/=रू० सरकार को देना पड़ते थे।[4]

1- झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पेज 127, पाठक एस०पी०.
2- ड्रेक ब्रोक मैन, डी०एल०, पेज 107.
3- तवारिखे बुन्देलखण्ड, श्यामलाल, नौगांव, 1880, पेज 114.
4- वही. पेज 112.

सिरसी :

यह जागीर वंशज महन्त दौलत गुरू चेले महन्त गोकुल थे। इसका वार्षिक राजस्व 10,000/=रू0 है। इस जागीर के राजस्व में से सरकार कोई भाग नहीं लेती।[1]

खण्ड-2 : "बी"

जमीदारों का अपने किरायेदारों के साथ सम्बन्ध

प्राचीनकाल में सम्भवत: इस क्षेत्र में राजा एवं किसानों के मध्य कोई निकट के सम्बन्ध नहीं थे।[2] चन्देल काल में लगान अथवा भूमि, "कृषि-कर" की वसूली राज्य कर्मचारियों द्वारा होती थी जो "पष्ठाधिकृत" कहलाता था।[3] राजा का किसानों से कोई निकट के सम्बन्ध नहीं रहता था। बुन्देला राजाओं के शासनकाल में बड़े लगान की वसूली जागीरदार अथवा जमीदार अपने कर्मचारियों द्वारा करवाते थे।[4] 1734 ई0 में इस क्षेत्र के एक बड़े भाग पर मराठा राजाओं का अधिपत्य हो गया था, जो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक रहा। इस

1- तवारीखे बुन्देलखण्ड, श्यामलाल, नौगाँव 1880, पेज 114-115.
2- ए झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0, पेज 214.
3- हिस्ट्री आफ हिन्दू इन मिडिवियल इण्डिया, वैद्य सी0पी0, पेज 135.
4- ए झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0, पेज 215.

काल में कृषकों एवं जमीदारों में कोई भेद नहीं था,सभी वर्ग के लोग लगान अथवा भूमि-कर सरकार को देते थे । कुछ समय बाद सरकार की ओर से पंचों की नियुक्ति की गयी थी,जिनका कार्य उपज का मूल्यांकन करना था जिसके आधार पर उस उपज पर कर लगाया जाता था । पंचों को यह भी अधिकार था कि उपज कम होने पर अथवा दैवी विपत्ति में नष्ट हो जाने या कम हो जाने पर वह "कर" की वसूली स्थितिनुसार घटा-बढ़ा सकते थे ।[1]

उन दिनों किसानों की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती थी। वह कर देने में अधिकतर असमर्थ ही रहते थे । वह इस योग्य ही नहीं रहते थे कि अच्छे बीज खरीद सकें । बीज एवं धन की आवश्यकता के लिये उन्हें साहूकारों पर निर्भर रहना पड़ता था ।[2] इतना सब कुछ होने पर भी यह कृषक वर्ग अपने राजा अथवा जमीदारों,जागीरदारों के प्रति वफादार रहते थे,जबकि उनसे कर की वसूली बहुत ही अविवेकपूर्ण एवं निर्मम रूप से की जाती थी ।[3] जमीदार अधिकतर उनसे बेगार का कार्य करवाते एवं बंधक के रूप में रखते थे,वह एक प्रकार से जमीदार के गुलाम रहते थे,परन्तु कृषक इतना सब कुछ होने पर भी उनके प्रति प्रत्येक बलिदान को तैयार रहते थे ।[4] जमीदार अथवा जागीरदारों को भी कृषक वर्ग की बाहरी एवं भीतरी विपत्तियों से उनकी रक्षा करना पड़ती थी ।

1- ए झांसी गजेटियर,जोशी ई0बी0,पेज 215.
2- वही.
3- वही.
4- वही.

इसके अतिरिक्त सेना पर, सिंचाई पर एवं सिंचाई के लिये बनाये गये कुंए अथवा तालाबों की मरम्मत पर भी धन व्यय करना पड़ता था ।[1] जमीदारों द्वारा भारी करों की वसूली पर कृषक वर्ग यह सोचकर सब अन्याय सहते रहते कि यह हमारी जान एवं माल की रक्षा करते हैं, समय पड़ने पर धन एवं बीज देते हैं, वह जमीदारों को "अन्नदाता" कहते थे, फिर वह यह सोचकर असन्तुष्ट रहते थे कि हमें जीना-मरना इसी गाँव में है ।[2]

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक इस जनपद पर अंग्रेजों का अधिपत्य हो गया था । ईस्ट इण्डिया कम्पनी का मुख्य उद्देश्य यह रहा कि जीते हुये भाग से अधिकाधिक राजस्व वसूल किया जाये, क्योंकि राजद्रोह को दबाने एवं सेना पर उसका काफी धन व्यय हो चुका था ।[3] उन्होंने जमीदारी प्रथा को समर्थन दिया एवं नया लागू रक्खा एवं नये जमीदारों को प्रोत्साहन दिया ।[4] इस प्रकार ब्रिटिशकाल में भी कृषक वर्ग को कोई राहत प्राप्त नहीं हुई । उनको और लूटा-खसोटा गया, क्योंकि जमीदारों को राज्य का पूर्ण समर्थन प्राप्त था । इसमें कोई संदेह नहीं कि 1858 ई0 के पश्चात् कृषक वर्ग पर ब्रिटिश सरकार एक विपत्ति बनकर ही प्रकट हुये, जिस प्रकार कि अकाल, सूखा, महामारी रूपी अन्य विपत्तियाँ आती थीं ।

1- झाँसी गजेटियर, पेज 215.
2- वही.
3- वही.
4- वही.

खण्ड-2 : "सी"

जमींदारों का सहयोग

इस क्षेत्र में जहाँ तक जमीदारों अथवा जागीरदारों द्वारा आम जनता की भलाई एवं उनकी भूमि पर खेती करने वाले कृषकों की आर्थिक एवं सामाजिक रूप में सहयोग करने की बात नहीं के बराबर थी । कृषक वर्ग पर जो अन्याय प्राचीन काल में होता अया था, वह मध्य काल में बराबर चलता रहा, वह अन्याय एवं उत्पीड़न बुन्देला राजाओं के काल में भी रहा । 1858 के बाद ब्रिटिश सरकार भी इस कार्य को समाप्तनहीं कर पायी, क्योंकि सरकार ने जमीदारी प्रथा को प्रोत्साहन दिया एवं अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त करने का प्रयत्न किया । 1857 ई0 के क्रान्ति के समय एवं 1858 ई0 के मध्य तक ओरछा राज्य ﴾स्टेट﴿ के जागीरदारों ने कानून-व्यवस्था कायम करने के बहाने यहाँ के कृषक वर्गों को बुरी तरह लूटा-खसोटा ।[1]

1858 ई0 के मध्य जब समस्त जनपद में शान्ति स्थापित हुई, उसके बाद अधिकतर जमीदार ब्रिटिश सरकार के वफादार बन गये । ब्रिटिश सरकार ने भी नये जमीदारों को अधिक प्रोत्साहन दिया । जमीदारों ने भी मनमाने रूप में लगान वसूल किया एवं ब्रिटिश सरकार के विश्वासपात्र बने अपनी प्रजा का ध्यान न रखकर विलासिता में डूब गये । जागीरदारों द्वारा अपनाई गई इस नीति के कारण कृषक-वर्ग में

1- जेनकिन्सन ई0जी0, रिपोर्ट आफ झाँसी डिस्ट्रिक, इलाहाबाद 1871, पेज 442-448.

असन्तोष फैल गया । इसका असर उपज पर पड़ा व अधिक विलासता के कारण तथा फिजूल खर्ची एवं दिखावे के कारण जमीदारों की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी । दूसरी ओर फसल अच्छी न होने के कारण लगान की वसूली भी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हुयी ।[1]

उपरोक्त कारणों से जमीदार अपने पट्टेदारों अथवा कृषक वर्ग के सम्बन्ध दिन-पर-दिन बिगड़ने लगे । जमीदारों के फिजूल खर्ची के कारण उनकी फसल अधिक न होना एवं लगान का पूर्ण रूप से सही समय पर न मिलने से जमीदार दिवालिये होने की दशा में आ गये ।[2] बुन्देला ठाकुर जो जनपद के अधिकतर जागीरदार थे, अपने लगान एवं जमीन की पट्टेदारी की दरें ऊँची कर दी ।

सेटलमेन्ट आफीसर पिम ने 1906 की फायनल सेटलमेन्ट-रिपोर्ट में लिखा है कि जाखलौन {सब डिवीजन ललितपुर} के ठाकुरों की अयोग्यता का प्रमाण इस घटना से होता है कि वह अपनी पट्टे के दर बढ़ाते चले गये । इस कारण उनके पट्टेदार अथवा उनकी भूमि पर खेती करने वाले कृषक गाँव छोड़कर चले गये ।[3] उपरोक्त विवरण से यह सिद्ध होता है कि जमीदारों का अपने पट्टेदारों के प्रति सद्भाव अथवा सहयोग का वातावरण नहीं था और न ही वह सहयोग करना चाहते थे, वह केवल ऊँची दरों पर लगान अथवा अपनी जमीन का किराया वसूल कर ब्रिटिश शासकों के प्रिय बने रहना चाहते थे । वह सदा से विलासप्रिय बने रहे, खेतीबारी, प्रजा के सुख-साधनों की ओर उनका रूझान कम रहा ।

1- इम्पे डब्लू०एच०एल०, मेस्टन जे०एस०, रिपोर्ट आफ सेकेण्ड सेटिलमेंट झाँसी डिस्ट्रिक इनक्लूडिंग सब डिवीजन ललितपुर नार्थ-वेस्ट प्राविंस, इलाहाबाद 1892.
2- पिम ए०डब्लू०, फायनल सेटिलमेंट रिपोर्ट आफ रिवीजन आफ द झाँसी डिस्ट्रिक इनक्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन, इलाहाबद 1907, पेज-10.
3- वही.

-----:0:-----

अध्याय - तृतीय

बिट्रिश शासन काल के अन्तर्गत राजस्व बन्दोबस्त

तृतीय-खण्ड

ब्रिटिश शासन-काल के अन्तर्गत् राजस्व बन्दोवस्त

ललितपुर जिले का कुल क्षेत्रफल, 1872 के आंकलन के अनुसार 1947 वर्ग कि0मीटर तथा 624 एकड़ था । इसमें से खेती योग्य भूमि केवल 366 वर्ग कि0मीटर तथा 72 एकड़ तक सीमित था ।[1]

सबसे आश्चर्य जनक बात यह थी कि इसमें केवल 10% भूमि ही सिंचित थी ।[2] जो इस बात का स्पष्ट संकेत देती है कि अवश्य ही यह जिला आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ था । अंग्रेजी शासनकाल के पूर्व यदि हम इस क्षेत्र के प्राचीन प्राखण्डों का उल्लेख करें तो यह पता चलता है कि गौड़ों के समय हर्षपुर व दुधई के जागीरदारों के मध्य ललितपुर के आस-पास के क्षेत्रों का विभाजन हुआ था । आज भी हर्षपुर व दुधई नाम से राजस्व वसूल करने की परम्परा वहाँ प्रसिद्ध है ।[3]

1- एटकिन्शन ई0टी0, सैमीकुलन स्टेटिकल डिसक्रिप्टल एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ द एन0डब्लू0प्राविन्सिस आफ इण्डिया, भाग-1, बुन्देलखण्ड, इलाहाबाद 1874; पृष्ठ 304.

2- वही.

3- वही.

जिस समय यह क्षेत्र मराठों के अधीन रहा उस समय ललितपुर के विभिन्न परगनों की स्थिति इस प्रकार थी । चन्देरी परगने में वे गाँव शामिल थे जो 1862 में ललितपुर परगने बाँसी व वालावेहट परगने में शामिल थे । दूसरा- तालबेहट परगने में कुछ ऐसे गाँव शामिल थे जो 1862 के प्रशासनिक विभाजन के अनुसार ललितपुर व बाँसी परगनों में आते थे[1] तथा बाँसी परगने में वे गाँव शामिल थे जो 1862 के विभाजन के अनुसार ललितपुर, तालबेहट, वानपुर परगने में शामिल थे । परगना महरौनी 1862 के पूर्व वानपुर, तालबेहट, बालाबेहट में शामिल था ।[2] 1862 के पूर्व ललितपुर, चन्देरी जिले के अन्तर्गत् था । उसी वर्ष चन्देरी को ग्वालियर के सिन्धिया के हाथ में हस्तान्तरित कर दिया गया ।[3] इस प्रकार 1862 में ललितपुर जिले के पूर्वी क्षेत्र में दो तहसीलें थीं - 1-बानपुर, 2-महरौनी । किन्तु 1866 में इन्हें समाप्त कर दिया गया तथा महरौनी में एक नयी तहसील की स्थापना कर दी गयी ।[4] ललितपुर तहसील में इस जिले के पश्चिमी क्षेत्र को शामिल कर लिया गया । 1866 में इस जिले के परगनों की स्थिति इस प्रकार थी :-

---

1- एटकिन्शन ई०टी०, सैमीकुलन स्टेटिकल डिसक्रिस्टल एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ द एन०डब्लू० प्राविन्सिस आफ इण्डिया, भाग-1 (बुन्देलखण्ड), इलाहाबाद 1874, पृष्ठ 305•

2- वही•

3- वही•

4- वही•

तहसील	परगना	अंग्रेजी शासन के पूर्व की स्थिति	क्षेत्रफल
1-ललितपुर	1-तालबेहट	ग्वालियर तथा बानपुर में शामिल था ।	288 वर्ग कि0मी0 व 592 एकड़
	2-बाँसी	,, ,,	149 वर्ग कि0मी0 व 256 एकड़
	3-ललितपुर	,, ,,	438 वर्ग कि0मी0 व 11 एकड़
	4-बालाबेहट	,, ,,	18 वर्ग कि0मी0 व 633 एकड़
2-महरौनी	1-बानपुर	वही तथा नारहट में शामिल था ।	329 वर्ग कि0मी0 व 189 एकड़
	2-महरौनी	ग्वालियर, बानपुर व शाहगढ़ में शामिल था ।	153 वर्ग कि0मी0 व 338 एकड़
	3-मड़ौरा	शाहगढ़ व नारहट में शामिल था ।	405 वर्ग कि0मी0 व 165 एकड़
			1947 वर्ग कि0मी0 व 264 एकड़

1866 में इस जिले में केवल दो ही तहसीलें थीं । 1-ललितपुर परगने में 118 गाँव, ग्वालियर के रियासत में तथा 50 गाँव बानपुर रियासत के शामिल थे । इसी प्रकार बाँसी परगने में 47 गाँव ग्वालियर रियासत के

तथा 12 गाँव बानपुर रियासत के शामिल थे । तालबेहट के पगरने में 81 गाँव ग्वालियर रियासत के व 25 गाँव बानपुर रियासत के शामिल थे । बालाबेहट परगने में 57 गाँव ग्वालियर व 24 गाँव बानपुर के थे । महरौनी में 56 गाँव ग्वालियर रियासत के, एक- गाँव बानपुर तथा 3 गाँव शाहगढ़ रियासत के शामिल थे । बानपुर परगने में 31 गाँव ग्वालियर के तथा 81 बानपुर के व एक गाँव नारहट के शामिल थे । मड़ौरा परगने में 123 गाँव शाहगढ़ रियासत के व 35 गाँव नारहट के शामिल थे ।

उपरोक्त प्रशासनिक विभाजन वैज्ञानिक ढंग से ठीक नहीं था । बुन्देलखण्ड के कमिश्नर आर०एम०एडवर्ड ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है कि "ललितपुर जिले में तहसीलों व परगनों का बंटवारा बड़ा ही असुविधापूर्ण दिखाई पड़ता है । दु:ख की बात यह है कि इनके गठन के बाद से लेकर राजस्व व्यवस्था के सर्वे तक उनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया ।[1]

खण्ड-3-(अ)

राजस्व व्यवस्था का प्रारम्भ :

ललितपुर जिले में राजस्व की दरों के निर्धारण के लिये सर्वे का कार्य 1857 के विद्रोह प्रारम्भ होने के पूर्व ही 1853 में चालू कर दिया गया था । किन्तु 1857 में जैसे ही विद्रोह शुरू हुआ वैसे ही

1- एटकिन्शन ई०टी०, सैमीकुलन स्टेटिकल डिसक्रिप्टल एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ द एन०डब्लू०प्राविन्सिस आफ इण्डिया, भाग-1 {बुन्देलखण्ड}, इलाहाबाद 1874, पृष्ठ 305.

राजस्व के सर्वे का कार्य रोक दियागया ।[1] 1858 में शान्ती-व्यवस्था की स्थापना हुई और सर्वे का कार्य पुन: 1859 में प्रारम्भ हुआ । यद्यपि 1857 के विद्रोह के समय जो अराजकता की स्थिति पैदा हो गई थी, उससे बन्दोवस्त से सम्बन्धित लगान व रिकार्ड नष्ट कर दिये गये । भूमि की पैमाईस के लिये जो निशान बनाये गये थे । उन खम्भों को भी नष्ट कर दिया गया । राजस्व निर्धारण का कार्य 1859 में कैप्टन टिलर की देखरेख में[2] शुरू हुआ, लेकिन 1860 में जब टिलर यूरोप वापिस चला गया, तब उस कार्य का दायित्व कैप्टन कार्वेट को सौंपा गया ।[3] अराजकता की स्थिति से उत्पन्न परेशानियों के बावजूद भी कैप्टन कार्वेट ने सर्वे का कार्य 1862 में पूरा कर लिया ।[4] कैप्टन कार्वेट का उसी वर्ष जालौन स्थानान्तरण हो गया, किन्तु इसी बीच कैप्टन टिलर अपना अवकाश समाप्ति के बाद पुन: ललितपुर पदार्पण किया व सर्वे के कार्य को आगे बढ़ाया । बन्दोवस्त का यह कार्य वह अपने जीवन पर्यन्त करता रहा, जबकि अगस्त 1865 में हैजे से उसकी मृत्यु हो गई ।

1- एटकिन्शन ई0टी0, सैमीकुलन स्टेटिकल डिसक्रिस्टल एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ द एन0डब्लू0प्राविन्सिस आफ इण्डिया, भाग-1 {बुन्देलखण्ड}, इलाहाबाद 1874, पृष्ठ 335-336.

2- वही.

3- वही.

4- वही.

राजस्व की दरों के निर्धारण का कार्य तालबेहट परगने में कैप्टन टिलर ने पूरा किया । ललितपुर परगने का सर्वे का कार्य भी 35 गाँव छोड़कर टिलर ने पूरा करने में सफलता प्राप्त कर ली थी ।[1] यद्यपि कैप्टन कार्वेट ने बाँसी परगने का भू-राजस्व निर्धारण कर दिया था, किन्तु न तो कार्वेट ने और न ही टिलर ने इस परगने की कोई रिपोर्ट प्रस्तुत की थी ।[2] टिलर कीमृत्यु के बाद सर्वे-कार्य को आगे बढ़ाने का कार्य कुछ महीने तक मान्टेग्यू ने किया और 1866 में फरवरी के महीने में कर्नल जेम्स डेविडसन ने ललितपुर जिले के प्रथम बन्दोवस्त का कार्य पूरा किया ।[3] इस अधिकारी (डेविडसन) ने ललितपुर परगने के बचे गाँव की भूमि का सर्वेक्षण करते हुये बानपुर, महरौनी, मड़ौरा व नारहट आदि के सर्वे का कार्य 1869 में पूरा किया । यह बन्दोवस्त 16 वर्षों के लिये हुआ ।[4]

खण्ड-3-(ब)

ललितपुर जिले के पहले बन्दोवस्त की कठोरता :

कैप्टन टिलर, कैप्टन कार्वेट व कर्नल डेविडसन ने राजस्व के दरों के निर्धारण की जो प्रक्रिया अपनायी । वह अलग-अलग समय पर अलग-अलग आँकड़ों पर आधारित थी । इन सभी अधिकारियों के

1- एटकिन्शन ई0टी0, सैमीकुलन स्टेटिकल डिसक्रिप्टल एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ द एन0 डब्लू0 प्राविन्सिस आफ इण्डिया, भाग-1 (बुन्देलखण्ड), इलाहाबाद 1874, पृष्ठ 335-336.

2- वही.

3- वही.

4- वही.

निर्णयों से यह स्पष्ट होता है कि इस जिले में इससे पूर्व जितने भी अल्प समय के लिये बन्दोवस्त किये,उसमें राजस्व की दरें अत्यधिक ऊँची थीं । उच्च राजस्व की दरों के होने के कारण ही इस जनपद के भू-स्वामी व किसान निरन्तर आर्थिक पतन की कगार पर आते रहे ।[1] यद्यपि इस समय हमारे पास कोई प्रमाण नहीं जिनके आधार पर इस जिले के अल्प समय के बनाये गये राजस्व प्रबन्धों की वास्तविक स्थिति का अभाव मिल सके,लेकिन बाद वाले सभी राजस्व अधिकारियों ने इस बात को स्वीकार किया कि पूर्ववर्ती बन्दोवस्त अत्यन्त ही कठोर थे ।[2] इसलिये डेविडसन ने अपने प्रथम बन्दोवस्त के समय राजस्व की दरों में रियायत की घोषणा की ।

ललितपुर जिले का जो बन्दोवस्त डेविडसन ने 1869 में तैयार किया था,उसकी अवधि 1889 में समाप्त होनी थी । इस जिले का दूसरा बन्दोवस्त राजस्व अधिकारी होरे ने 1899 में किया । इस समय होरे ने भूमि की पैमाइस व निर्धारित राजस्व की दरों के विस्तृत सर्वे किये बिना जल्दी-जल्दी दरों का पुन:निरीक्षण करते हुये उनका निर्धारण कर दिया । दूसरे बन्दोवस्त की अवधि आगे आनेवाले 30 वर्षों के लिये कर दी गयी ।[3]

ललितपुर जिला जिसका गठन 1862 में हुआ था । वह 1891 तक एक पृथक जिले के रूप में बना रहा,किन्तु 1891 में ही इसे झाँसी

1- एटकिन्शन ई0टी0,सैमीकुलन स्टेटिकल डिस्क्रिप्टल एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ द एन0डब्लू0 प्राविन्सिस आफ इण्डिया, भाग-1 (बुन्देलखण्ड), इलाहाबाद 1874, पृष्ठ 335-336.

2- वही.

3- पिम ए0डब्लू0,फाइनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट आफ झाँसी डिस्ट्रिक इनुक्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन,इलाहाबाद 1907,पृष्ठ 14.

जिले में शामिल कर दिया गया, लेकिन इसके प्रथम व द्वितीय बन्दोवस्त झाँसी से अलग बनाये गये। पहले बन्दोवस्त को पूरा करने का कार्य डेविडसन ने 1869 में किया, जबकि दूसरा बन्दोवस्त होरे ने 1899 में किया। इस जिले का तीसरा बन्दोवस्त झाँसी जिले के साथ ही साथ हुआ, जबकि 1903 में बन्दोवस्त अधिकारी पिम ने इन दोनों क्षेत्रों का सर्वे करते हुये राजस्व की दरों के निर्धारण करने का कार्य पूरा किया।

खण्ड-3-स भूमि का वर्गीकरण

ललितपुर जिले के बन्दोवस्त के समय यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि भूमि का सर्वेक्षण करते समय उसकी विभिन्न किस्मों का वर्गीकरण कर लिया जाय। 1907 में बन्दोवस्त अधिकारी पिम ने ललितपुर सब डिवीजन की भूमि का वर्गीकरण इस प्रकार किया :-

मिट्टी का वर्गीकरण[1]

झाँसी स्थानीय			ललितपुर सब डिवीजन		
मिट्टी का वर्ग	क्षेत्र	कुल जोते हुए क्षेत्र का %	मिट्टी का वर्ग	क्षेत्र	कुल जोते हुए क्षेत्र का %
मार	118,718	28•17	तरेता	8,813	2•93
काबार	108,052	25•64	मोती	72,329	24•06
पाल्जा	83,206	19•74	दुमट	108,515	36•11
राकरमोती	39,750	9•43	पतरी	103,914	34•57
राकरपतरी	68,455	16•24	तारी (एक फसली)	3,321	1•10
तारी	2,911	0•69	तारी (दो फसली)	2,416	0•80
कछार	371	0•09	झाई (दो फसली)	1,283	0•43
टोटल	421,463	100•00	टोटल	300,591	100•00

1- पिम ए०डब्लू०, फायनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट आफ द रिपीसिन आफ द झाँसी डिस्ट्रिक इनक्लूडिंग द ललितपुर सब डिवीजन, इलाहाबाद 1907, पृष्ठ-5.

खण्ड- 3 - द

राजस्व की दरों का निर्धारण

परगना मोंठ, गरौठा, व भाण्डेर के राजस्व बन्दोवस्त सम्बन्धी कागजात 1857 की क्रान्ति में खो गये थे या नष्ट हो गये थे ।[1] अत: कैप्टन गौर्डन द्वारा उक्त परगनों के लिये राजस्व बन्दोवस्त के लिये अपनाये गये नियमों के बारे में निश्चयात्मक रूप से कहना कठिन है, परन्तु जैनकिन्शन जिन्होंने झांसी जिले का बन्दोवस्त सम्बन्धी कार्य 1864 में समाप्त किया । कहा है कि "मैंने कैप्टन गौर्डन के साथ कार्यरत् अधिकारियों और कानूनगोओं से परगना मोंठ, भाण्डेर व गरौठा में अपनाये गये राजस्व-दर तथा उसके अपनाने के ढंग सम्बन्धी प्रक्रिया के बारे में पूछताछ की ।[2] शायद कैप्टन गौर्डन का हिसाब उत्पादकता पर आधारित था ।[3] इसके अनुसार उन्होंने समीप के जिलों में चल रही दरों के आधार पर हर प्रकार की मिट्टी के अलग-अलग राजस्व दरें निर्धारित करके निकालीं[4] तत्पश्चात् इसी आधार पर उक्त परगनों के लिये नयी समानुपात दरें निर्धारित कीं । उन्होंने व्यक्तिगत् रूप से प्रत्येक गांव का सर्वेक्षण किया । और भूमि के प्रकार के आधार पर उन्हें विभिन्न क्षेत्र अथवा "चक्स" में बांटा और उसी आधार पर हर प्रकार की मिट्टी के लिये अलग-अलग दरें निर्धारित कीं ।[5]

1- सी/एफ0, पेज-117.
2- जैनकिन्शन ई0जी0, औफसिट, पेज-86.
3- वही.
4- वही; पेज-88.
5- वही; पेज-86.

बन्दोवस्त अधिकारी जैनकिन्शन ने इंगित किया कि कानूनगो और पटवारियों से एकत्र की गई सूचियों से वह केवल कैप्टन गौर्डन द्वारा विभिन्न प्रकार की भूमि के लिये निश्चित् की गयी दरों के बारे में ही जान सका ।[1] हालांकि उन्होंने किस तरह प्रत्येक गांवों को विभिन्न चकों में बांटा । इससे सम्बन्धित आलेख प्राप्त नहीं होते थे । यद्यपि जैनकिन्शन ने कुछ गलतियां पायीं, पर उन्होंने पाया कि गौर्डन द्वारा निश्चित् किये गये जुम्माज को पटवारियों के आलेखों में सही दर्शाया गया था जो कि गौर्डन द्वारा अपनी रिपोर्ट में आलेखित सरकारी मांग से मेल खाता था ।[2]

कैप्टन गौर्डन द्वारा हस्तलिखित नोट्स से उनके द्वारा मार-भूमि पर राजस्व दरें निम्न प्रकार से निर्धारित की गयीं :-

एक एकड़ मार भूमि को बोने में 37 सेर गेहूं की आवश्यकता होती है । इससे प्राप्त उत्पादन 247 सेर होता है । वर्ष भर गेहूं की दर 25 सेर प्रति रुपया के हिसाब से आंकी गयी । अत: विशुद्ध उत्पादन 1-9-7 (एक रुपया नौआना सात पाई) का हुआ । इसमें से निम्न कीमत घटाना है :-

---

1- जैनकिन्शन ई0जी0, औफसिट, पेज-86.

2- वही; पेज 86-87.

बीज की कीमत	==	1-7-8 (एक रूपया सातआना आठ पाई)
ब्याज	==	0-6-0 (शून्य, छै आना शून्य पाई)
मजदूरी खाना-खर्चा	==	3-3-11 (3 रूपया 3 आना ग्यारह पाई)
बचत	==	3-3-11 (3 रूपया 3 आना ग्यारह पाई)

जो कि दर को निर्धारित करता है जिसका आधा सरकारी भू-राजस्व के लिये लिया गया । उक्त उदाहरण से सिद्ध है कि कैप्टन गौर्डन ने उक्त परगनों के लिये भू-राजस्व दरें उत्पादकता पर आधारित कीं ।

खण्ड-3-(क)

मऊ, पण्डवाहा व झाँसी में राजस्व की दरें :

मऊ, पण्डवाहा परगनों के आँकलन डैनियल द्वारा किया गया । जबकि झाँसी का आँकलन डेविडसन द्वारा किया गया । दोनों ने ही भूमि की दरों को अपनाया ।[1] सर्वप्रथम डैनियल ने उस समय मऊ व पण्डवाहा के ग्रामों में प्रचलित दरों को मालूम किया । तत्पश्चात् भूमि के प्रकार को ध्यान में रखकर हर ग्राम के लिये दरें निश्चित् कीं । उन्होंने भूमि को प्रमुखत: चार प्रकारों में बाँटा ।[2]

1- मार	3- पड़ुआ
2- काबर	4- राकड़

परगना मऊ के 116 गाँवों का सरसरी तौर पर किया हुआ बन्दोवस्त जिससे कि 105124 का भू राजस्व मिलना था, डैनियल द्वारा

1- जैनकिन्शन ई0 जी0, आफ सिट, पेज-107.

2- वही.

नियमित बन्दोवस्त करने पर इसे 82577 रूपये तक घटाकर निर्धारित किया ।[1] इस तरह डैनियल ने 22547 की छूट दी ।[2] इसी प्रकार परगना पडबाहा जिसमें 79 खालसा गाँव थे, इनके लिये गौर्डन ने 93801 भू राजस्व प्रथम दृष्टि में आँका था,[3] पर डैनियल ने इसको घटाकर 73470 तक निर्धारित किया ।[4] माफी भूमि को मिलाने के बाद पडबाहा परगने का राजस्व 78974 रूपया निर्धारित किया ।[5]

मेजर डेविडसन द्वारा झाँसी परगने का आँकलन करते समय गाँवों को दो भागों में बाँटा[6]:-

1- परगने के उत्तर के 31 गाँव, जिनमें मार व काबर भूमि थी ;
2- कुँआबन्दी गाँव जिन्हें चौरासी के नाम से भी जाना जाता है और जो परगना के दक्षिण में थे तथा उनकी भूमि कमजोर थी ।

द्वितीय ग्रुप के ग्रामों के सम्बन्ध में जैनकिन्शन ने लिखा कि परगना के दक्षिण में कुँआबन्दी गाँव थे जिन्हें चौरासी के नाम से जाना जाता था, बहुत समय पहले यहाँ चौरासी गाँव का एक समूह था जिसमें से केवल 53 गाँव अंग्रेज सरकार की अधीनता में थे । इस चौरासी में कोई एक खास परिवार या जाति नहीं रहती थी । इनका नाम चौरासी संख्या पर आधारित था । मेरे पास चौरासी ग्रामों की

1- जैनकिन्शन ई0जी0, औफ. सिट, पेज-97.
2- वही.
3- वही; पेज-100.
4- वही.
5- वही.
6- वही; पेज-107.

एक सूची है, किन्तु मैं इस सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं पा सका कि ये गाँव कब इकट्ठे किये गये थे व किसके द्वारा इकट्ठे किये गये थे, व उसका क्या उद्देश्य था । सर एच इलियट की "ग्लौसरी ऑफ इण्डियन टर्म" में उल्लेखित चौरासियों की सूची में चौरासी उल्लेखित नहीं है ।[1] मेजर डेविडसन ने उक्त दो ग्राम समूहों को प्राकृतिक लाभ और उनकी स्थिति के अनुसार पुनःविभाजित किया।[2] उसने प्रथम समूह के ग्रामों के लिये अपनी राजस्व दरें प्रत्येक प्रकार की भूमि की दरों पर अलग-अलग आधारित की । जहाँतक द्वितीय समूह कुँआबन्दी ग्रामों के समूह की दरें प्रथम प्रकार के समूह की दरों से कम निर्धारित की गयीं;[3] तत्पश्चात् जैनकिन्शन ने छानबीन के बाद कुँआ-बन्दी गाँव की राजस्व को कम कर दिया ।[4] परगना की कुल माँग 46335 रूपये निर्धारित की गयी ।[5]

झाँसी परगने के द्वितीय बन्दोवस्त करते समय इम्पे और मैस्टन ने अपना आँकलन भूमि के प्रकारों पर आधारित किया । इसलिये ग्रामों की प्राकृतिक भूमि के प्रकारों के आधार पर बाँटा गया ।[6] इसके बाद गाँवों के आँकलन क्षेत्रों में एकत्रित किये गये । इस

1- जैनकिन्शन ई0जी0, औफ सिट, पेज-100.

2- वही; पेज 100-101.

3- वही.

4- वही.

5- वही; पेज-102.

6- इम्पे डब्लू0एच0एल0 और मेस्टन जे0एस0, औफसिट, पेज-8.

प्रकार के गाँव का समूह बनाने का उद्देश्य यह था कि उन पर एक प्रकार की दरें लागू की जाये ।[1] दरें जो प्रमुख ग्रामों में पाई गई, अन्त में वही निश्चित् दर के रूप में निर्धारित की गयी ।[2] प्रति एकड़ रेट निर्धारित करने के लिये सरल विधि अपनाई गयी, क्योंकि जिले की निश्चित् दरें स्थान-स्थान पर अलग-अलग थीं ।[3]

ललितपुर में भी भू-राजस्व का आँकलन भूमि के प्रकार पर आधारित था । उस समय फसल की श्रेणी के अनुसार लगान नगद भुगतान किया जाता था ।[4] आँकलन आफीसर हर फसल का उत्पादन का अनुपात तथा शुद्ध लाभ निकालता था, तत्पश्चात् फसल की दरों को भूमि की लगान में परिवर्तित कर देता था ।[5] कार्य की सुविधा के लिये ग्रामों को 3 या 4 क्षेत्रों या भागों में बाँटा गया था, फिर हर प्रकार के भूमि की आनुपातिक दरें हर गाँव के लिये निश्चित् की जाती थी ।[6] भू राजस्व स्थान-स्थान पर प्रकृति व भूमि की उत्पादकता के अनुसार भिन्न-भिन्न होताथा ।[7] उदाहरण के लिये मोटी भूमि की लगान की दरें "दो रूपया आठ आना, जो कि बाँसी

1- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0, औफसिट, पेज 147.

2- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0 और जोशी ई0टी0, औफसिट, पेज 208.

3- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0, औप0सिट0, पेज 147.

4- एटकिन्शन ई0टी0, औप0सिट0, पेज 337.

5- वही.

6- वही; पेज 337-338.

7- वही.

परगने में थी ।" से बारह आना ﴾जो ललितपुर में थी﴿ तक भिन्न-भिन्न स्थिति में थी । उसी प्रकार भू राजस्व दरें दुमट मिट्टी के लिये भू राजस्व दरें दो रूपया से आठ आना तक थीं और पठारी की एक रूपया से चार आना तक थी ।[1] इस प्रकार डेविडसन ने पूर्ण माँग को जिसमें उबारी और माफी शामिल थी,को 147802 तक बढ़ाया जो कि साधारण भू राजस्व रूपया 27538 के अतिरिक्त था।[2]

भूमि की आनुपातिक दरें उत्पादन में से खेती के खाना-खर्चा को घटाकर बचे हुये भाग से आधे हिस्से को लगान के रूप में तय किया जाता था ।[3] वास्तव में आँकलन की यह पद्धति गौर्डन की उसी पद्धति पर आधारित थी जो उसने मोंठ,भाण्डेर व गरौठा परगनों के आँकलन में प्रयोग की थी ।[4]

1899 में ललितपुर के द्वितीय नियमित बन्दोवस्त के समय होरे ने गाँवों को उनके बनावट के आधार पर वर्गों में बाँटा ।[5] भूमि के वर्गीकरण में कोई अन्तर नहीं था ।[6] होरे ने ललितपुर के ग्रामों को तीन भागों में बाँटा और प्रत्येक के सामने आँकलन का ढंग

1- एटकिन्शन ई0टी0 तथा डार्क ब्रौक मैन डी0एल0, औफ0सिट, पेज 142.

2- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0, औफ0सिट0, पेज 142.

3- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0 और एटकिन्शन ई0टी0, औप0सिट0, पेज 337

4- सी/एफ0, पेज 126-127.

5- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0, औप0सिट0 पेज 148 और जोशी ई0टी0, औप0सिट0, पेज 208.

6- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0, औप0सिट0, पेज 148.

अंकित किया गया :[1]

1- 562 गाँव जिनमें कि कोई स्थायी नुकसान नहीं हुआ था । इन गाँवों का आंकलन वार्षिक अभिलेख के आँकड़ों पर आधारित था ।

2- 207 गाँव जिनमें कि स्थायी रूप से नुकसान हुआ था उनका आँकलन सरसरी तौर पर 5 वर्ष के लिये किया गया जो कि 1305 फसली सन या 1897-98 का आँकलित पूँजी पर आधारित था ।

3- 8 गाँव जो साधारण स्थिति में थे,उनका आँकलन वर्ष की आनुपातिक पूँजी पर आधारित था और पूर्ण जामा तीन वर्ष पश्चात् कार्य रूप में परिणित होना था ।

प्रथम वर्ग ने अपनी पुरानी माँग से 8-31 की बढ़ोत्तरी करके भू राजस्व 1352•2% तक आँका गया ।[2] जबकि अन्तिम दो वर्गों में 27•6% की कमी हुई । अर्थात् राजस्व 41957 आँका गया । पूरे (सब डिवीजन) परगने के लिये पूर्ण माँग 197398 थी जिसमें कि पुरानी माँग पर 8•16% की वृद्धि हुई ।[3]

1- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0,तथा जोशी ई0वी0,औप0सिट0,पेज 208•

2- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0,औप0सिट0,पेज 148-149•

3- वही; पेज 149•

खण्ड-3-ख

बुन्देलखण्ड के लिये लचीली राजस्व दरें

1903 में झाँसी जिले के (ललितपुर परगना सहित) अन्तिम बन्दोवस्त के समय पिम बन्दोवस्त अधिकारी ने झाँसी जिले के लिये भी बुन्देलखण्ड के अन्य जिलों की तरह[1] भू राजस्व आँकलन के लिये लचीला रवैया अपनाने की सोची बहुदा अकाल की स्थिति व अन्य आपदाओं के परिणामों को सोचते हुए अंग्रेजों ने इसलिये भी अजमेर की तरह उक्त कार्यक्रम को इस जिले में भी लागू करने की सोची ।[2] परन्तु कम सिंचाई होने के कारण अंग्रेज सरकार का यह सुझाव क्रियान्वयन होने में कठिनाइयाँ थीं, लेकिन 1896-97 के पड़े अकाल से हुई बर्बादी को देखते हुए अधिकारियों के मस्तिष्क में अजमेर में चलाई जा रही क्रिया शैली को यहाँ पर भी लागू करना उचित और आवश्यक समझा ।[3] अत: खेतीहर भूमि को अलग से मालूम करने का बात तय की गयी और पड़ी हुई भूमि को सम्पत्तियों से अलग करने की बात निश्चित् की गयी । केवल खेतिहर भूमि का ही आँकलन के लिये पूर्ण दर पर मूल किया गया और बची हुई भूमि का निम्न दर पर मूल लगाया गया । परिणामस्वरूप भू राजस्व का यह तरीका हर 5 वर्ष बाद जब भी क्षेत्र में खेती का 10% की वृद्धि या कम हो, इसका पूर्ण मूल्यांकन किया जाता था और यदि आवश्यक हुआ और ह्रास 15% से

1- डार्क ब्रौक मैन डी०एल०, औप०सिट०, पेज 148 ·
2- इम्मे डब्लू०एच०एल० और मेस्टन जे०एच०, पेज 62-63·
3- पिम ए०डब्लू०, पेज 21-22·

ज्यादा हुआ तो बीच की अवधि में ही इसका पुन:मूल्यांकन करने की व्यवस्था थी ।[1] इस बन्दोवस्त के कारण भूमि का वर्गीकरण वही का वही रहा और आंकलन के लिये जो चक बनाये गये थे उन्हीं पर विचार किया गया या आंकलन किया गया । नगद जोतों में से बेकार भूमि जिसका क्षेत्रफल ।16252 एकड़ या ।9•42% पाई गई अत: पिम ने तय किये हुये नगद मूल्य में से 47247 रूपया या 5•36% की छूट दी ।[2] उक्त राशियों से ।4 हजार रूपया को शायर आय के रूप में माना गया । शायर आय में प्राकृतिक पैदावार जैसे फल और मछली आदि शामिल थे । खासकर ललितपुर परगना के खेतिहर बहुदा अपनी शायर आय के क्षेत्र को भी अपनी कुल भूमि क्षेत्र में सम्मिलित करते थे ।[3] इसके अलावा आंकलन आफीसर ने उस क्षेत्र के लिये जिसकी दरें शवन्का पर (लमसम तरीका) आधारित थीं, की दरों को दो प्रकार के भागों में निर्धारित किया । इनमें से एक तरेटा (सिंचित भूमि) और दूसरा (भूमि जो अपनी प्राकृतिक स्थिति में थी) के नाम से जाना जाता था ।[4] पूर्ण खेतिहर क्षेत्र में से हार भूमि को घटाकर दरें निर्धारित की जाती थीं ।[5]

जिले में बहुदा प्राकृतिक आपदाओं के कारण लचीला ढंग अपनाया गया । इस तरह एक बहुत बड़ा क्षेत्र खेतिहर क्षेत्र से बाहर रखा गया । कृषकों को विपरीत परिस्थितियों के कारण आने वाले

1- पिम ए0डब्लू0, पेज 21-22•
2- वही•
3- डार्क ब्रौक मैन डी0एल0, व जोशी ई0वी0, पेज ।5। व 203•
4- पिम ए0डब्लू0, औप0सिट0, पेज 21-23•
5- वही•

दबाव से बचाने के लिये यह विधि लागू की गयी । इस बन्दोवस्त में पिम ने नाउतर भूमि (नयी कृषियोग्य बनाई गई भूमि) को भी छूट दी[1] और इस पर एक साल के लिये भू राजस्व को माफ कर दिया गया । आंकलन की यह विधि 1937 तक जब कांग्रेस ने आंशिक शासन संभाला, चालू रही ।[2]

गुरसराय व ककरवई क्षेत्र को छोड़कर झाँसी के अन्तिम बन्दोवस्त के अनुसार भू राजस्व कम हो गया । यह बन्दोवस्त के अन्त में सन् 1892 में 134594 था ।[3] इसी तरह ललितपुर परगना में भी राजस्व 1899 में होरे द्वारा निश्चित की गई मांग से कम 40052 रूपये कम हो गया ।[4]

1868 के लिये हुए बन्दोवस्त का कार्यकाल 10 वर्ष के लिये बढ़ा दिया गया । इसकी अवधि उन्हीं कारणों से बढ़ाई गई जिन कारणों से सम्पूर्ण जनपद में यह 30 जून 1884 से 30 जून 1892 तक बढ़ाई गई थी । सम्बन्धित निरीक्षण 1895-97 से शुरू हुआ । ग्रामों को उनके प्राकृतिक आधार पर क्षेत्रों में बाँटा गया । हर भूमि के लिये उनकी उचित दरें निश्चित की गयीं । भूमि को चार भागों में विभाजित किया गया । वे मोटी, पतरी, तरी और दुमट के नाम से जानी गयीं, जो किसान नगद आधार पर भूमि जोतते थे उसी लगान

1- डार्क ब्रोक मैन डी0एल0, औप0सिट0, पेज 151 तथा जोशी ई0वी0, पेज 209.
2- जोशी ई0वी0, पेज 209.
3- वही.
4- वही.

को आँकलन का आधार बनाया गया । यह बात पाही जोत और उतार-चढ़ाव वाली जोतों पर लागू नहीं होती थी । इन सबकी आनुपातिक दरें निकालकर क्षेत्र का वर्ष भर का भू राजस्व का क्षेत्र दर या नई क्षेत्र दरों पर निकाला गया । सम्पूर्ण भूमि हर जोत से नौं गिरी ﴾नयी जोतें﴿ जिन पर प्रथम वर्ष के लिये लगान माफ था, का मूल्य हटा दिया गया और इस प्रकार की छूटें कई ग्रामों में दी गयीं । कम मूल्य वाले कुछ ग्रामों को काली भूमि के तीन भागों में बाँटा गया । लगभग 562 ग्रामों को जिनमें स्थायी बर्बादी नहीं हुई थी,का आँकलन साल के आलेखों पर किया गया । 207 ग्राम जिनमें स्थायी बर्बादी हुई थी उनका आँकलन 5 वर्ष के लिये सरसरी तौर पर फसलीसन 1305 ﴾1897-98﴿ के आधार पर किया गया । एक साधारण माँग बनायी गयी और पुन:निर्धारित माँगों को 1311 फसलीसन ﴾1903-4﴿ में वसूल करने का फैसला किया गया । इसका आधार 1310 फसली ﴾1902-1903﴿ का आलेखित संख्याओं पर आधारित था । बचे हुये 8 ग्रामों में भू राजस्व माँग का आधार वर्ष के आनुपातिक पूँजी पर आधारित था । इसी को ग्रामों की सामान्य स्थिति का परिचारक बताया गया । इस पूरी माँग का क्रियान्वयन 3 साल पश्चात् होना था ।

1896-97 अकाल का वर्ष था । इसके बाद बहुतायत में काँश द्वारा फसल का नुकशान हुआ । 1901-1902 में जनपद में भू राजस्व माँग को 5,38,816 रूपये से घटाकर 4,49,308 रूपये कर दिया गया । इसमें ललितपुर परगना सम्मिलित नहीं था जिसकी माँग से 1903 में घटाकर 1,62,791 कर दिया गया । तत्पश्चात् जनपद में

एक अस्थिर आँकलन प्रक्रिया लागू की गयी जिसमें भू राजस्व को 5 साल में निर्धारण करना तय हुआ जिसका आधार अच्छी खेती में 10% का उतार-चढ़ाव या खेती में 15% (प्रतिशत) से ज्यादा नुकशान था । बंजर भूमि (बिना खेती वाली भूमि) की आमदनी को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया ।

खण्ड - 3 - ग

ललितपुर जिले के बन्दोवस्त का 1903-1906 का पुन:निरीक्षण -

इस बन्दोवस्त के लिये कोई विस्तृत निरीक्षण नहीं किया गया । आँकलन भूमि के प्रकार पर आधारित था । क्षेत्र 1893-99 के बन्दोवस्त के आधार पर बनाये गये थे । ग्रामों के 1902-1903 के भूमि सम्बन्धी (जिसके पास जितनी भूमि थी) आंकड़ों के आधार पर लगान लगाया गया । 47,247 (जिनमें से 14 हजार को शायर आमदनी आँका गया) और 5·36% की छूट नगदी लगान जोती वाली भूमि के कारण दिया गया । अच्छी कृषि-भूमि और नाउतर का लगान निम्न प्रकार से निर्धारित किया गया । उन क्षेत्रों के लिये जो थन्का (लमसम) (लम्पदर किराया) लगान पर थे, दो प्रकार की दरें लगायी गयीं । प्रथम तरेटा (सिंचित व विकसित भूमि) एवं द्वितीय हार क्षेत्रों के लिये (प्राकृतिक स्थिति वाली जमीन) बनायी गयी थी । तत्पश्चात् पूर्ण कृषि भूमि के लगान से हार भूमि का मूल्य घटा कर कृषि का लगान निकाला गया । ललितपुर परगने को छोड़कर कृषि का आलेखित क्षेत्र 310629 एकड़ था तथा नाउतर भूमि का क्षेत्रफल 110834 एकड़ था जिनका क्रमश: मूल्य 871418 तथा 108554 रूपये था।

दोनों भूमि सम्पत्तियाँ मिलाकर रूपया 9396794 था । जिसपर 4,51,121 रूपये की माँग आँकलित की गयी । ललितपुर में अच्छी कृषि और नाउतर भूमि क्रमशः 127325 एकड़ तथा 173266 एकड़ थी जिनका क्रमशः मूल्य 241180 तथा 107260 रूपये था । कुल भूमि सम्पत्ति 241180 रूपये थी जिस पर 161400 रूपये की माँग निर्धारित की गयी ।

गुरसराय व ककरबई क्षेत्र को छोड़कर 1893 में आँकलित भू-राजस्व में कमी निम्न प्रकार थी । झाँसी में 134594 और 1899 में आँकलित ललितपुर में भू राजस्व में 40,052 रूपये की कमी हुई । विभिन्न प्रकार के भू राजस्व के आँकलनों के कारणों से 50% की कमी जो 174646 रूपये थी, हुई । सम्पत्ति में 38% की हानि लगान की कमी के कारण हुई । पुनःनिरीक्षण का मूल्य 110073 रूपये था । कांग्रेस पार्टी द्वारा अंग्रेजों से सत्ता 1937 में अधिग्रहण करने तक यह आँकलन क्रियान्वित रहा । यूनाइटेड प्रोविन्स टेनेन्सी एक्ट 1939 में पारित किया गया जो कि इस जनपद में भी लगा हुआ था । परिणामतःसभी कानूनी जोतदार तथा कुछ अन्य जोतदारों को वंशानुगत अधिकार प्राप्त हो गये । जोतदारों को निकालने (भूमि-से वंचित करने का अधिकार) सम्बन्धी नियमों पर पाबन्दी लगा दी गयी । भूमि की दरें निश्चित् की गयीं । जबरजस्ती कार्य लेने (बन्धुआ मजदूरी) की प्रवृत्ति तथा नजरानों को समाप्त कर दिया गया और जमीदारों को और भूमि खरीदने की मनाही कर दी गई ।

खण्ड - 3 - च

ललितपुर परगने का 1947 का तृतीय बन्दोवस्त :

इस बन्दोवस्त का प्रारम्भ सितम्बर 1939 में होकर 1 जून 1945 तक चला । इसकी रिपोर्ट 1947 में प्रकाशित की गयी । भूमि के आँकलन के लिये जिले को निम्न प्रमुख भागों में बाँटा गया ।

काली मिट्टी का क्षेत्र, लाल मिट्टी का क्षेत्र, कमजोर मिट्टी का क्षेत्र, खिरैन भूमि क्षेत्र तथा पत्थर वाली भूमि ।

भूमि को निम्न भागों में बाँटा गया :-

1- कछ्याना भूमि - अत्यन्त खाद व सिंचाई वाले ग्रामों के करीब की भूमि ।

2- गोइन्दा भूमि - भूमि जो बस्ती से लगी हुई होती तथा जिसमें खाद सुविधाएं होती ।

3- तरी भूमि - काली उपजाऊ भूमि-जैसे तालाब, नदी के पास आदि जिनमें या तो दो फसलें होतीं या उत्तम रबी की फसल होती ।

4- मार भूमि - यह काली मिट्टी और भुरभुरी होती ।

5- तरेठा भूमि - अच्छी और गहरे रंग की जो बड़े-बड़े गड्ढों या घाटियों में पायी जाती हैं ।

6- काबर भूमि - गहरी, मार भूमि से शक्त व चिकनी होती है ।

7- पड़ुआ भूमि - हल्की पीली मिट्टी ।

8- दुमट भूमि - गहरे रंग की हल्की व मोटी मिट्टी मिली भूमि ।

9- राकड़ भूमि - लाल पत्थरीली भूमि होती है ।

10- कछार भूमि - हल्की कत्थई, जो नदियों के किनारे होती है ।

11- सौरा भूमि - अच्छी मोटी भूमि, दुमट की तरह ।

12- बरेजा भूमि - यह पान की खेती में काम आने वाली भूमि जो ललितपुर तहसील के पाली गाँव में पाई जाती है ।

13- खालिज भूमि - यह नदियों की तलैटी में सूखी भूमि है जो मुख्यत: बालू है और खरबूजा, तरबूजा आदि की जायद की फसलों में काम आती है । यह मुख्यत: मऊरानीपुर तहसील में पाई जाती है ।

जनपद की प्राकृतिक स्थिति के आधार पर आँकलन के क्षेत्र बनाये गये और हर क्षेत्र के लिये भूमि के प्रकार पर लगान की दरें तय की गयीं । इसके लिये भूमि का आनुपातिक हिस्सा लेकर वस्तुओं के मूल्य का मूल्यांकन किया गया । लम्मदर की प्रथा होने के कारण जिसमें जोतदार कई प्रकार की भूमि को एक निश्चित् लगान पर जोतता था । अत: कई प्रकार की भूमि के लिये लगान की दरें निर्धारित करना कठिन था । हर प्रकार की भूमि की दरें निश्चित् करने के लिये दो प्रकार के तथ्यों की सूची बनाई गई ।

क्षेत्र के निरीक्षण के बाद आना में एक निश्चित् प्रकार के भूमि की आनुपातिक दरों का मूल्य । दूसरे प्रकार के भूमि के दरों के मूल्य से निकाला गया और फिर एक ही प्रकार के भूमि के चालू लगानदारों के साथ उन पर विचार किया गया । प्रत्येक गाँव में सम्पूर्ण जोत को क्षेत्र एवं लगान के हिसाब से पट्टे के आधार पर बाँटा गया । हर प्रकार के पट्टे के लिये निश्चित् इकाई की कीमत निकाली गई । बन्दोवस्त का पूरा व्यय 7,38,899 रूपये था जिसमें से 3,17,561

रूपये अभिलेखों को तैयार करने पर खर्च हुआ एवं 4,21,338 रूपये आँकलन के काम पर खर्च हुआ ।

प्रथम प्रकार के खर्च (अभिलेखों पर व्यय) पर 93 रूपया प्रति वर्ग मील हुआ, जबकि द्वितीय काम के लिये (आँकलन पर व्यय) 123 रूपये प्रति वर्ग मील हुआ ।

खण्ड - 3 - च

विभिन्न प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त जोत :

इस जनपद के भू-राजस्व बन्दोवस्त की सबसे प्रमुख बात विशेषाधिकार प्राप्त जोत को मान्यता देना था । वास्तव में विशेषाधिकार प्राप्त बन्दोवस्त अधिकारियों के दिमाग की उपज नहीं थे । वरन् अंग्रेज शासन के पहले ही इस क्षेत्र में अस्तित्व में आ चुके थे ।[1] अत: बन्दोवस्त अधिकारियों ने इन क्षेत्रों में चली आ रही विशेषाधिकार प्राप्त जोत को मान्यता देना अत्यन्त आवश्यक हो गया । वास्तव में यह दो मान्यताओं के बीच एक समझौता स्वरूप था जिसमें नये मालिक व पुराने जोतदार शामिल थे ;[2] में अधिकार (मान्यतायें) मराठा शासन काल से चले आ रहे अधिकारों की ही पुनरावृत्ति था ।[3]

1- पिम ए0डब्लू0, औप0सिट0, पेज 21-23.

2- वही.

3- जैनकिन्शन ई0जी0, औप0सिट0, पेज 192.

प्रथम नियमित बन्दोबस्त के समय जैनकिन्शन ने लिखा - " कुछ विशेष जोतदारों ने भूतकाल में कुछ लगान दिया था और वह भविष्य में भी ऐसा करते रहेंगे ।"[1] उसी अधिकारी ने जनपद के जोतदारों को निम्न भागों में विभाजित किया[2] :-

1- थन्का अथवा थान्सा जोतदार - जो भू राजस्व निम्न दरों पर एक बार में देते थे ।

2- जोतदार - जिनका लगान निश्चित् था और जिसमें वृद्धि नहीं की जा सकती थी ।

3- जोतदार - जिनकी जोत ग्रामन्दर पर आधारित थी अथवा थान्सा और जिनमें वृद्धि की जा सकती थी ।

4- इच्छानुसार जोतदार

प्रथम तीन प्रकारों का यह विशेषाधिकार था कि वह वनों में वृक्ष रख सकते थे । बंगर नामक खेतिहर भूमि को कहीं शामिल कर सकते थे और भूमि के कुछ भाग को चारागाह के रूप में रख सकते थे ।

1- जैनकिन्शन ई0जी0, औप0 सिट0, पेज 192.

2- वही; पेज 369-370.

पर उन सबके लिये कोई भी लगान देय नहीं था ।[1] 1864 में प्रथम नियमित बन्दोवस्त के समय झाँसी जनपद के विभिन्न प्रकार के जोत-दारों का प्रतिशत निम्न था :-

1- जोतदार जो इकट्ठा लगान देते थे और जिसमें वृद्धि नहीं की जा सकती थी 14•1% •

2- जोतदार जो इकट्ठा लगान देते थे,पर उनमें वृद्धि की जा सकती थी 13•6% •

3- इच्छानुसार जोतदार 30•5% •

उपरोक्त भू राजस्व बन्दोवस्तों के अलावा इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं थीं । निम्न भूमि,जो जोतों को मान्यता देना था[2]:-

1- कुआँ बन्दी जोत :

यह प्रमुखत: झाँसी जनपद के दक्षिण में पाया जाता था ।[3] मेजर डेविडसन जिन्होंने इसका आँकलन किया था । इसे कुआँ बन्दी का नाम दिया गया । यह उस कुयें पर आधारित था जो कि जोत के साथ होता था । इस तरह की जोत वाले गाँव की भूमि बहुत कमजोर थी और यह प्राकृतिक वर्षा और केवल कुयें से सिंचाई पर निर्भर थी ।[4] इन ग्रामों में जोत के मालिक थन्का {लमसम} के हिसाब

1- जैनकिन्शन ई0जी0, पेज 281•
2- जैनकिन्शन ई0जी0, औप0सिट0 पेज 373-378•
3- सी0/एफ0 पेज 129•
4- एटकिन्शन ई0टी0,औप0सिट0, पेज 281•

से लगान देते थे । प्रत्येक कुँये का अपना मूल्य था और कुँयें का लगान बदला नहीं जा सकता था ।[1]

2- चक्री जोत :

इस प्रकार की जोत मऊ परगना के कोटरा घाट जिले में पाई जाती थी ।[2] ब्रिटिश शासन के पहले यह गाँव बुन्देलों के अधिकार में था जिन्होंने इसको दो भागों में बाँटा था :-

1- चक्रीय भूमि (उपयोगी भूमि) ।
2- आय वाली भूमि ।[3]

प्रथम प्रकार की भूमि को चार सरदारों को 60 हिस्सों में बाँटा गया[4] जिसमें से प्रत्येक आनुपातिक भूमि का अधिकारी था और दूसरे प्रकार की भूमि की आय कोटरा घाट ग्राम के विकास के लिये व्यय की जाती थी । जब ब्रिटिश सरकार ने उक्त गाँव का शासन लिया तब इसका पूर्ण आय पर आँकलन किया गया, जबकि चक्रीय गाँवों में कोई बदलाव नहीं आया ।[5] इसमें कोई

1- एटकिन्शन ई0टी0, औप0 सिट0, पेज 282.

2- जैनकिन्शन ई0जी0, औप0 सिट0, पेज 373-378. और एटकिन्शन ई0टी0, औप0सिट0 पेज 282.

3- वही.

4- वही.

5- वही.

शक नहीं कि बन्दोवस्त अधिकारियों ने चल रही व्यवस्थाओं को यथावत् चालू रखा, लेकिन कुछ सुधारों के साथ ।

कबीय सरदारों को बाद में नम्बरदार के नाम से जाना गया और उन्हें गाँव के लाभ-हानि के लिये जिम्मेवार ठहराया गया ।[1]

3- उबारी जोत :

उबारी भूमि का तात्पर्य भू राजस्व की पूर्ण माँग पर निर्भर थी ।[2] कुछ मामलों में उबारी विशेषाधिकार वाले को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था और न ही न्यायालय में बुलाया जा सकता था ।[3] यह विशेषाधिकार केवल उन्हें ही प्राप्त थे जिन्होंने 1857 को क्रांति में अंग्रेजों का साथ दिया था और उनके आचरण अच्छे थे ।[4] गुरसराय के राजा और ककरबई के रहीस इस जिले के प्रमुख उबारीदार थे ।[5] इसके अलावा कुछ ऐसी भी जोतें थीं जिन पर भू राजस्व पूर्णरूप से माफ था और ये उन्हीं लोगों को दी गयी थी जो 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों के वफादार थे ।[6]

1- जैनकिन्शन ई0जी0, औप0सिट0 पेज 373-378 और एटकिन्शन ई0टी0, औप0सिट0 पेज 282.
2- एटकिन्शन ई0टी0, औप0सिट0, पेज 284.
3- वही.
4- वही.
5- जेनकिन्शन ई0जी0; औप0सिट0, पेज 373-378.
6- एटकिन्शन ई0टी0, औप0सिट0, पेज 347.

एक आयोग यह जाँच करने के लिये बैठाया गया कि उन व्यक्तियों का, जिनके पास बिना राजस्व के भूमि है, व्यवहार कैसा है ? यह जाँच दस साल के बाद 1868 में पूर्ण हुई ।[1] जैनकिन्सन ने लिखा है कि "मौजा वसुनेव (झाँसी में) जगजीत सिंह के पट्टे को 1860 में समाप्त कर दिया गया, क्योंकि उन्होंने 1857 में अँग्रेजों का विरोध किया था । यह गाँव गुरसराय के राजा के पुत्र सीताराम को कम उबारी जुमा रूपया 800/= में इनाम दी गयी । क्योंकि इन्होंने 1857 की क्रान्ति में ब्रिटिश सरकार की महत्वपूर्ण मदद की थी । कुछ समय बाद इसी गाँव से एक अलग मौजा बनाया गया जिसको माधोपुरा के नाम से जाना गया ।[2] ललितपुर परगना में भी उन लोगों को जिन्होंने 1857 के विद्रोह में ब्रिटिश सरकार की सहायता की थी । इस तरह के पुरस्कार दिये गये ।[3] इस तरह के पुरस्कार बिना लगान के जमीन के रूप में थे ।[4] शाहगढ़ के राजा की जमीदारी का भी वही हाल हुआ जो वसुनेव के जगजीत सिंह का हुआ था ।[5] राजा से छीनी हुई भूमि को उन बहुत से व्यक्तियों में बाँट दिया गया जिन्होंने 1857 की अशान्ति में अँग्रेजों की मदद की थी ।[6]

1- जेनकिन्सन ई0जी0, औप0सिट0, पेज 373-378 और एटकिन्सन ई0टी0, औप0सिट0, पेज 282.
2- वही.
3- वही.
4- एटकिन्सन ई0टी0, औप0सिट0, पेज 284.
5- वही.
6- वही.

इस तरह यह सिद्ध होता है कि जनपद में 19वीं शदी के अन्तिम भाग में भूमि की कई प्रकार के जोतें पाई जाती थीं ।[1]

खण्ड - 3 - द

राजस्व बन्दोवस्त की समीक्षा

ललितपुर तथा झाँसी जनपदों के कई प्रकार के भू बन्दोवस्त के इतिहास को कई बन्दोवस्त अधिकारियों के हाथों से गुजरना पड़ा । अत: राजस्व के आँकलन की कोई एक नीति नहीं अपनायी गयी । परिणामत: आँकलन की दरें असमान थीं । तथ्यों से यह सिद्ध होता है । जबकि कैप्टन गौडन ने उत्पादकता दरों को अपनाया और दूसरे बन्दोवस्त अधिकारी डेनियल व डेविडसन ने राजस्व दरें निकालने के लिये भूमि की दर को आधार बनाया । फिर भी जैनकिन्सन ने जिसने 1864 में झाँसी जनपद के बन्दोवस्त के कार्य को अन्तिम रूप दिया । भू राजस्व जुम्मा को महत्व दिया । उसने लिखा है कि लगभग 3 साल के अनुभवों के बाद और जनपद के ग्रामों की उत्पादकता एवं क्षमता को जानने के बहुत अवसर करीब से मिलने के कारण मैं निर्णय पूर्वक कह सकता हूँ कि इस जनपद का आँकलन निष्पक्ष रूप से किया गया । जुम्मा कम दरों पर आँका गया, लेकिन यह बहुत कम नहीं था ।

1- जैनकिन्सन ई0जी0, औप0सिट0, पेज 347.

जमीदार इस माँग को बगैर किसी कठिनाई के पूरा कर सकते थे । परगना झाँसी के सम्बन्ध में मैं कह सकता हूँ कि जनपद में इस परगने का आँकलन बहुत ही निष्पक्ष व समानतापूर्ण था ।[1]

निष्पक्षता के बारे में जैनकिन्सन ने कुछ भी दावा किया हो, पर यह बात निश्चितापूर्वक कही जा सकती है कि सम्पूर्ण जनपद में नया आँकलन समान नहीं था । यदि कुछ परगनों में यह आँकलन कम था, तो दूसरों में यह अत्यधिक था ।[2] सही आँकलन के बारे में जैनकिन्सन ने स्वयं ही अपने वक्तव्य का खण्डन किया है । उसने कहा कि "यह कहना कि भाण्डेर में सरकारी माँग जनपद के अन्य स्थानों से कम है । यह एक चालाकी और शकपूर्ण वक्तव्य है ।"[3] मऊ और पड़वाहा परगनों के दरों के आँकलन की असमानता चुभने वाली गलती थी ।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि इन परगनों में कुछ ग्रामों का आँकलन बहुत कम दरों पर था, जबकि कुछ ग्रामों का आँकलन बहुत ऊँची दरों पर किया गया था ।[4]

डेनियल जिन्होंने इन परगनों का आँकलन किया । या तो इस असमानता को दूर करने के लिये ध्यान ही नहीं दिया, या इस बारे में यह पूर्ण जानकारी नहीं थी । राजस्व के इस बोझ के दूरगामी

1- जैनकिन्सन ई0जी0, औप0सिट0 पेज 1-5.
2- वही.
3- वही.
4- वही.

परिणाम हुए । इससे इन दो परगनों के रहने वालों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गयी । जे०एस०पोर्टर द्वारा मऊ परगना के जमीदारों के अविकास को समीक्षा करते हुए यह निश्चित किया गया कि राजस्व को दरों को कठिनाइयाँ ही नागरिकों की परेशानियों के लिये उत्तरदायी है ।[1]

प्राकृतिक आपत्तियों के भयावह परिणामों के कारण झाँसी जनपद का प्रथम नियमित बन्दोवस्त का कार्य अनियमित हो गया ।[2] मुश्किल से नया बन्दोवस्त कार्य रूप में परिणित हुआ था कि यह जनपद 1868-69 के अकाल की तबाही में डूब गया ।[3] स्थिति 1872 में और बिगड़ गयी जब अत्यधिक वर्षा के कारण 40,000 एकड़ क्षेत्र में काँश उग आया ।[4] इन सब कारणों से किसानों की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और किसान,साहूकारों के हाथों में खेलने (बिकने) को मजबूर हो गये ।[5] इस तरह उक्त बन्दोवस्त सुचारू रूप से नहीं चल सका ।

1- इम्पे डब्लू०एच०एल० और मेस्टन जे०एस०, औप०सिट०, पेज 55-56.

2- वही; पेज 88.

3- वही.

4- डार्क ब्रौक मैन डी०एल०, औप०सिट०, पेज 140.

5- वही.

द्वितीय नियन्त्रित बन्दोवस्त जनपद में जब शुरू किया गया तब वहाँ की दशा बिगड़ी हुई थी । फिर भी खेती के उत्पादन में 18•81% की वृद्धि हुई थी ।[1] शायद इसी कारण भू राजस्व 12% बढ़ गया था ।[2] कुछ हद तक यह वृद्धि माफी वाली भूमि पर फिर से भू राजस्व लगाने के कारण भी थी,[3] लेकिन आर्थिक कठिनाइयों का यह समय, प्रथम राजस्व बन्दोवस्त में समाप्त नहीं हुआ और बार-बार काँश का उगना अकाल और अन्य प्राकृतिक आपदायें जनपद में समय-समय पर आती रहीं ।[4] इसलिये इस बन्दोवस्त से भी किसानों को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये जादा प्रोत्साहन नहीं मिल सका ।

ललितपुर जनपद के बन्दोवस्त की आलोचनात्मक समीक्षा करने से यह प्रकट होता है कि वे समान नहीं थे । वरन् अत्यधिक कठोर थे । तथ्यों से यह भी ज्ञात होता है कि बन्दोवस्त द्वारा निर्धारित किया हुआ जुमा बाद में अधिकारियों द्वारा कम कर दिया गया ।[5] हालाँकि ललितपुर में प्रथम नियमित बन्दोवस्त के समय भू राजस्व घटा दिया गया था, फिर भी विकसित ग्रामों में जो उद्योगपति मालिकों के हाथों में थे, भू राजस्व बहुत अधिक था ।

1- पिम ए० डब्लू०, औप०सिट०, पेज 4;
2- वही•
3- वही•
4- सी०/एफ०, पेज 88 से 90 तक•
5- पिम ए० डब्लू०, औप०सिट०, पेज 14•

जबकि उन ग्रामों मेंजो ठाकुर जमीदारों के अधिकार में थे,भू राजस्व बहुत कम था ।[1] इस तरह मेहनती मालिकों को कोई प्रोत्साहन नहीं दिया गया । वरन् उससे ज्यादा भू राजस्व वसूला गया,जबकि ठाकुर जमीदार जो क्षेत्र में असरदार थे,उनको छूट दी गयी ।

यद्यपि होरे ने ललितपुर के द्वितीय नियमित बन्दोवस्त के लिये 30 वर्ष का समय निर्धारित किया था,लेकिन यह अकाल के भयावह परिणामों के कारण,कांश और अप्राकृतिक आपदाओं के कारण निर्धारित समय में पूरा नहीं हो सका ।[2] इसलिये इस बन्दोवस्त को 1903 में झाँसी के द्वितीय बन्दोवस्त के साथ पुन:निर्धारण करना पड़ा ।हालाँकि भू राजस्व के पुन:निर्धारण से इसमें कमी आयी,लेकिन खेतिहरों को प्राकृतिक आपदाओं के कारण आयी बर्बादी से छुटकारा नहीं मिल सका ।[3]

उक्त समीक्षा से यह तथ्य प्रकाश में आया कि झाँसी और ललितपुर जनपदों में समान रूप से राजस्व प्रशासन के कार्यों से परेशानियाँ हुयीं । दोनों ही स्थानों पर बाद में आये दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास से परेशानियाँ हुयीं । दोनों ही हिस्सों में बन्दोवस्त अपना कार्यकाल आसानी से पूरा नहीं कर सके । इस तरह यह कहा जा सकता है कि इन बन्दोवस्तों से इन जनपदों की जनता को मुश्किल से ही कोई लाभ हुआ ।

1- पिम ए० डब्लू०,औप० सिट०, पेज 14.
2- सी०/एफ०, पेज 88-90.
3- जोशी ई०वी०,औप०सिट०,पेज 143.

------:0:------

अध्याय - चतुर्थ

कृषि की आर्थिक स्थिति

अध्याय-4

❨ भाग-1 ❩

कृषि की आर्थिक स्थिति

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के इस जनपद के लोगों का जीविकोपार्जन का मुख्य आधार कृषि है । यह उद्यम यहाँ का प्राचीन उद्यम है । यह प्रदेश अपनी वन उपज,कपास,तिल एवं गन्ना के लिये प्रसिद्ध था, उसका उल्लेख चन्देल शासक मदन वर्मन के ननयौरा-दान लेख में मिलता है ।[1]

यह बात जहाँ तक सत्य प्रतीत होती है कि इस क्षेत्र का मुख्य आर्थिक आधार कृषि है । नि:सन्देह बुन्देलखण्ड इतना उपजाऊ नहीं,जितना गंगा-यमुना का मैदानी भाग । फिर भी वर्षा एवं नदियों की सिंचाई द्वारा खेती की जाती है ।

1- इण्डियन एoटीoकुटीस, भाग-16, पेज 201.

ए० कालविन, सेक्रेटरी बोर्ड आफ रेवेन्यू के अनुसार 1892 की सेटिलमेन्ट रिपोर्ट में झाँसी जनपद एवं सब डिवीजन ललितपुर की कुल जन संख्या का 53·25% भाग कृषि पर आधारित था ।[1]

ललितपुर नगर उस समय तिलहन (तिल, सरसों, अलसी) एवं घी की एक बड़ी मण्डी माना जाता था ।[2] 1903 में फायनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट में सेटिलमेन्ट अधिकारी ए०डब्लू० पिम ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है- झाँसी जनपद के मुख्य नगर, झाँसी के अतिरिक्त मऊ, गुरसरायं एवं कटेरा का भी मुख्य व्यवसाय कृषि मिर्तित वस्तुएं एवं घी था । ऐसी स्थिति सब डिवीजन ललितपुर की भी थी । केवल कुल जन संख्या का एक छोटा भाग सब - डिवीजन ललितपुर में व्यापार एवं भूमि क्रय-विक्रय का धंधा करता था ।[3]

जिस प्रकार जिला ललितपुर व्यापार के क्षेत्र में काफी पिछड़ा था । उसी प्रकार कृषि के मामले में भी पूर्ण रूप से स्वावलम्बी नहीं था । इसका प्रमुख कारण यहाँ की मिट्टी का खेती-योग्य न होना ।[4] इस जनपद की लाल मिट्टी में उत्पादन

1- जेनकिन्सन ई०जी० (फोरवर्ड नोट- ए०कालविन) पेज-4·
2- इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग-13, पेज 604·
3- पिम ए०डब्लू०, फायनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट आफ झाँसी जनपद सब डिवीजन ललितपुर, इलाहाबाद 1907, पेज-1
4- जोशी ई०जी०, पेज 96-97·

क्षमता बहुत ही कम थी, इसके अतिरिक्त समय-समय पर मौसम की खराबी, वर्षा सही समय पर न होना आदि कारण इस जनपद की कृषि उत्पादन पर हमेशा प्रभावी रहे ।

विभिन्न वर्षों के स्टेटिस्टिकल सर्वे रिपोर्ट एवं सेटलमेन्ट रिपोर्ट के अनुसार का काफी बड़ा भाग बंजर या ऊसर था । सन् 1869 ई0 के सर्वे के अनुसार ललितपुर जनपद का कुछ क्षेत्रफल 1213,022 एकड़ में खेती लायक भूमि 288,600 एकड़ थी, जिसमें 23·79% भूमि जुताई योग्य एवं उपजाऊ थी, 23·7% भूमि जुताई योग्य ही नहीं थी ।[1]

विभिन्न वर्षा में इस जनपद की कृषि योग्य एवं उपजाऊ एवं बंजर जुताई के लायक भूमि का वर्णन निम्नलिखित सूची में दिया गया है ।[2]

1- जोशी ई0 वी0, पेज 96-98·

2- जोशी ई0 बी0, झाँसी गजेटियर, पेज 98·

जोतने योग्य भूमि की सूची[1]

जिला	वर्ष	कुल एकड़	जोती हुई भूमि एकड़ में	जोते हुए क्षेत्र का प्रतिशत	जोतने के अयोग्य क्षेत्र का %	जोतने योग्य क्षेत्र का प्रतिशत
झाँसी	1864	845,519	393,401	46•33	22•22	31•45
ललितपुर	1869	1213,022	288,600	23•79	23•7	52•51
झाँसी	1862	923,146	385,810	41•79	16•6	41•61
ललितपुर	1899	1153,872	272,980	23•65	12•7	63•65
झाँसी, ललितपुर सब-डिवीजन सहित•		2194,721	717,308	32•67	14•88	52•45

1- ड्रेक ब्रौक मैन डी0 एल0, स्टेटिस्टिकल केलकुलेशन, पेज 38•

उपरोक्त सूची से स्पष्ट होता है कि इस जनपद की कृषि की स्थिति अच्छी नहीं थी, बल्कि अत्यन्त दयनीय थी । 1903 के फायनल सेटिलमेन्ट के अनुसार झाँसी जनपद एवं सब - डिवीजन ललितपुर का एक तिहाई भाग ही खेती योग्य था ।[1] इसका एक मुख्य कारण यह भी था कि जनपद के सीमा-निर्धारण के समय इस जनपद एवं सब डिवीजन ललितपुर का एक अच्छा उपजाऊ बड़ा भाग ग्वालियर स्टेट में चला गया था ।[2] इस जनपद के भाग में अधिकतर बंजर, ऊसर भाग आये थे ।

इस जनपद के पिछड़ेपन एवं उन्नति न करने का कारण ड्रेक ब्रोक मैन ने एक बंजर, ऊसर क्षेत्र एवं खेती की कमी होना बताया है ।[3]

इस जनपद की उपजाऊ भूमि को बेकार करने में अनावश्यक घास "काँस" के उत्पादन का भी प्रमुख कारण है जिसने 1872 में अकाल जैसी स्थिति उत्पन्न कर दी थी ।[4]

1- जोशी ई0बी0, पेज 98.

2- पाठक एस0 पी0, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड, पेज 46.

3- झाँसी गजेटियर, इलाहाबाद 1909, पेज 39.

4- ड्रेक ब्रोक मैन डी0 एल0, पेज 40.

दो फसली क्षेत्र

इस जनपद की अधिकतर भूमि बंजर, अउपजाऊ एवं जंगली तथा कांटेदार झाड़ियों से ढके होने के कारण जनसंख्या छितर कर रह गई थी ।[1] इसलिये उपजाऊ भूमि में दो फसलें उपजाने का काम कहीं-कहीं लिया गया । इसके लिये बेहतर खाद एवं अधिक सिंचाई की आवश्यकता अधिक होती थी ।[2] इस प्रकार के क्षेत्र प्रथम सेटिलमेन्ट रिपोर्ट में सही तरह से नहीं अंकित किये गये थे । 1896 के सेटिलमेन्ट रिपोर्ट के अन्दर इन क्षेत्रों को अंकित किया गया था ।[3] ललितपुर जनपद में दो फसली क्षेत्र 43,000 एकड़ में था ।[4]

ड्रेक ब्रोक मैन के अनुसार 1892 में दो फसली क्षेत्र झाँसी जनपद में 3% था, जबकि सब डिवीजन ललितपुर में यह क्षेत्र 12.5% था । अर्थात् इस प्रकार अधिकतर क्षेत्र दक्षिणी तहसीलें ललितपुर एवं मेहरौनी में अधिक उपलब्ध था ।[5]

1- जोशी ई० बी०, झाँसी गजेटियर, पेज 99.

2- वही.

3- वही.

4- वही.

5- ड्रेक ब्रोक मैन डी० एल०, पेज 42.

खण्ड- अ

प्राकृतिक फसलें

इस जनपद की प्राकृतिक उपज को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है । शरद् ऋतु में कटने वाली फसलें, जिसका कृषि कार्य आषाढ़ (जून-जुलाई) में आरम्भ होता है । खरीफ या स्यारी, कहलाता है । बसंत (मार्च-अप्रैल) में कटने वाली फसल को रबी या उन्हारी, कहते हैं ।[1] इसके अतिरिक्त कुछ अतिरिक्त फसलें भी होती हैं जो दोनों से बचे समय में उत्पन्न की जाती हैं ।[2]

खरीफ की फसल :

खरीफ की फसल में उत्पन्न होने वाले अनाजों में मुख्यत: ज्वार, मूंग, उड़द, कोदों, राली, कुटकी, काकुन, मोंठ और रौंसा हैं ।[3]

1- मिश्र के०सी०, चन्देल और उनका राजत्वकाल, पेज-19.

2- वही.

3- वही.

जनपद ललितपुर खरीद के फसल का एक अच्छा उत्पादक जनपद है । इस जनपद की लाल मिट्टी उपयुक्त है अनाजों के लिये । इस लाल मिट्टी के क्षेत्र के एक बड़े भाग पर कोदों और कुटकी की फसल होती है ।[1]

-----:0:-----

1- जोशी ई0बी0, झाँसी डिस्ट्रीक गजेटियर, पेज 122

खरीफ के अन्य अनाजों में सर्वप्रथम ज्वार का उत्पादन इस जनपद में अधिक होता है । इसके प्रमुख क्षेत्र ललितपुर एवं मेहरौनी तहसील हैं । धान के प्रमुख क्षेत्र ललितपुर, मेहरौनी, तालबेहट एवं बानपुर तथा इन अनाजों के अतिरिक्त कोदों, मक्का, दालें, गन्ना एवं तिलि के प्रमुख क्षेत्र क्रमशः ललितपुर एवं मेहरौनी तहसीलें हैं ।[1]

जिला ललितपुर में खरीफ की फसल के प्रमुख अनाज[2]

अनाज	तहसील व परगना
ज्वार	ललितपुर, मेहरौनी
धान	ललितपुर, मेहरौनी, तालबेहट, बानपुर
कोदों	ललितपुर·
मक्का	ललितपुर, मेहरौनी
अरहर, मूंग आदि	ललितपुर, मेहरौनी
गन्ना	ललितपुर
तिलि	ललितपुर

1- जोशी ई०बी०, झाँसी गजेटियर, पैज 122-126·
2- वही·

रबी की फसल

रबी की फसल इस जनपद में मोटी भूमि पर बाँध एवं तालाब के किनारे एवं वहाँ पर जहाँ कूपों से सिंचाई की व्यवस्था अथवा प्रबन्ध सुलभ हो सके, की जाती है ।[1] रबी की फसल के प्रमुख अनाज गेहूँ, चना एवं जौ हैं ।[2]

गेहूँ, रबी की फसल का एक प्रमुख अनाज है । यह मेहरौनी एवं ललितपुर तहसील में कबार मिट्टी पर उत्पन्न किया जाता है ।[3]

(गेहूँ (मिश्रित) क्षेत्र)[4]

जिला	वर्ष	क्षेत्रफल
झाँसी व ललितपुर सब डिवीजन.	1889-90	100,810
झाँसी व ललितपुर सब डिवीजन.	1903-06	26,478
चार उत्तरी तहसीलें- झाँसी, मऊ, गरौठा व मोंठ	1903-06	26,471
दो दक्षिणी तहसीलें- ललितपुर व मेहरौनी	1903-06	7

1- मिश्र के0सी0, चन्देल और उनका राजत्काल, पेज 19.
2- जोशी ई0बी0, पेज 119.
3- वही.
4- जोशी ई0बी0, स्टेटिस्टिकल कैलकुलेशन्स, पेज 120.

1903-1906 के फायनल सेटिलमेन्ट की सूची के अनुसार झाँसी जनपद की उत्तरी तहसील में 26,471 एकड़ भूमि पर गेहूँ की मिश्रित फसल होती थी । सब डिवीजन ललितपुर में केवल 7 एकड़ भूमि पर मिश्रित गेहूँ की फसल होती थी ।[1]

गेहूँ की मिश्रित फसल की सूची[2]

स्थान	वर्ष	गेहूँ का क्षेत्र एकड़में
दो दक्षिणी तहसीलें- ललितपुर व मेहरौनी.	1894-95	57.811
दो दक्षिणी तहसीलें- ललितपुर व मेहरौनी.	1903-06	17.159
चार उत्तरी तहसीलें- झाँसी, मऊ, मोंठ व मरौठा.	1889-90	11.159
चार उत्तर तहसीलें- झाँसी, मऊ, मोंठ व गरौठा.	1903-06	13.392

1- जोशी ई0 बी0, पेज 120.

2- जोशी ई0 बी0, स्टेटिस्टिकल कैलकुलेशन, पेज 120.

जौ

जौ, रबी की फसल का एक दूसरा प्रमुख अनाज था जो 1903-06 के फायनल सेटिलमेन्ट के अनुसार ललितपुर एवं मेहरौनी तहसील पर 20,537 एकड़ भूमि पर उत्पन्न होता था ।[1]

ललितपुर एवं मेहरौनी तहसील में जौ उत्पादन की सूची[2]

स्थान	वर्ष	जौ का क्षेत्रफल एकड़ में
चार उत्तरी तहसीलें- झांसी, मऊ, मोंठ व गरौठा.	1889-90	12,514
चार उत्तरी तहसीलें- झांसी, मऊ, मोंठ व गरौठा.	1903-06	12,739
दो दक्षिणी तहसीलें- ललितपुर व मेहरौनी.	1896-97	8,144
दो दक्षिणी तहसीलें- ललितपुर व मेहरौनी.	1903-06	20,537

1- जोशी ई0 बी0, पेज 120-121.

2- जोशी ई0 बी0, स्टेटिस्टिकल कैलकुलेशन, पेज 120-121.

चना

चना भी रबी की प्रमुख फसलों में है । इसका उपयोग दालों में भी होती है । जौ एवं चने का उपयोग इस जनपद की मध्यम श्रेणी एवं गरीब जनता करती है । 1903-06 के फायनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट के अनुसार ललितपुर एवं मेहरौनी तहसील में 33,868 एकड़ क्षेत्र में इसकी खेती होती थी ।[1]

चना की खेती का क्षेत्रफल[2]

स्थान	वर्ष	चना का क्षेत्रफल एकड़में
चार उत्तरी तहसीलें- झाँसी, मऊ, मोंठ व गरौठा.	1889-90	33,347
चार उत्तरी तहसीलें- झाँसी, मऊ, मोंठ व गरौठा.	1903-06	81,226
दो दक्षिणी तहसीलें- ललितपुर व मेहरौनी.	1896-99	28,663
दो दक्षिणी तहसीलें- ललितपुर व मेहरौनी.	1903-06	33,868

1- जोशी ई0 बी0, पेज 121-122.

2- जोशी ई0 बी0, स्टेटिस्टिकल कैलकुलेशन, पेज 121-122.

अन्य फसल (जायद)

1896-97 ई0 में यह फसल जो, रबी, खरीफ फसल के बचे समय पर होती थी, जायद कहलाती है। यह 2,446 एकड़ भूमि पर होती थी।[1]

जायद के फसल की प्रमुख वस्तुएं सौदा, धान, तरबूज, खरबूज, सब्जी (जिसमें आलू) प्रमुख है।[2]

-----:0:-----

1- जोशी ई0 बी0, पेज-126.

2- मिश्र केशव चन्द्र, पेज-19.

खण्ड - ब

रबी एवं खरीफ की फसलों का प्रतिशत्

इस जनपद में अन्य जनपदों की तरह वर्ष में मुख्य रूप से दो फसलें उगायी जाती हैं। इस प्रकार के सूचक उपलब्ध हैं, जिससे ज्ञात होता है कि रबी की फसल से खरीफ की फसल की खेती अधिकाधिक क्षेत्र पर होती है। 1903 में फायनल-सैटिलमेन्ट के सूची के अनुसार खरीफ की खेती 5,76,922 एकड़ में होती थी, जबकि रबी की फसल केवल 2,16,114 एकड़ में लगायी जाती थी! जिसका अनुपात 5:2 का था।[2] ड्रेक-ब्रौक मैन के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी से अन्तिम दशक तक खरीफ की फसल 4,87,740 एकड़ के क्षेत्र में फैली हुई थी। जबकि रबी की फसल कुल खेतिहर भूमि के क्षेत्रफल के 2,23,083 के क्षेत्र में लगायी गयी थी।[3]

1- ड्रेक ब्रौकमैन डी० एल०, (एपेनडिक्स में दी गयी सूची).

2- वही.

3- वही.

रबी की फसल का प्रतिशत्

सन् 1903 ई0 में रबी की फसल का प्रतिशत् तहसीलों के अनुसार निम्नलिखित सूची के अनुसार था ।[1]

तहसील	रबी की जोते हुए क्षेत्र का प्रतिशत्
झाँसी	33•2
मऊ	27•9
मोंठ	48•5
गरौठा	41•4
ललितपुर	18•8
मेहरौनी	17•1

उपरोक्त सूची के अनुसार जनपद झाँसी के मोंठ तहसील में इसका प्रतिशत् सर्वाधिक था । काली मिट्टी का उपजाऊ क्षेत्र इस तहसील में "मार" मिट्टी, रबी के फसल के उपयुक्त मानी जाती है ।

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, स्टेटिस्टिकल कैलकुलेशन, पेज 41-42•

झाँसी जनपद के मऊ, गरौठा तहसीलों में भी रबी-फसल का प्रतिशत् अधिक था, परन्तु इसके बावजूद सब डिवीजन ललितपुर में बहुत ही गिरा हुआ एवं कम था । इसका प्रमुख कारण सब डिवीजन ललितपुर में जो लाल मिट्टी उपलब्ध होती थी वह उपजाऊ कम थी एवं रबी की फसल के लिये उपयुक्त नहीं थी । इस कारण झाँसी-जनपद की द० तहसीलों में केवल कुल खेतिहर भूमि के केवल 18·8 एकड़ में तहसील ललितपुर एवं 17·1 में मेहरौनी तहसील में रबी की फसल लगायी जाती थी ।[1]

खरीफ की फसल का प्रतिशत्

जहाँतक खरीफ की फसल का सम्बन्ध है, उसके लिये झाँसी जनपद के स्पर्धा में सब डिवीजन ललितपुर का प्रतिशत अधिक है ।[2] सब डिवीजन ललितपुर का एक बड़ा भाग जो लाल मिट्टी का क्षेत्र है जिसमें खरीफ की फसल के अनाज कौदों, राली, सौदा की

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी० एल०, पेज 41-42·

2- एटकिन्सन ई० टी०, पेज 230·

खेती अधिक मात्रा में की जाती है ।[1] 1896 में खरीफ की फसल की खेती के क्षेत्र का 50% भाग पर कोदों की खेती सब डिवीजन ललितपुर में की गयी थी, जबकि जनपद झाँसी में की गयी कोदों की खेती का प्रतिशत 68% था ।[2] परन्तु खरीफ की एक अन्य अनाज ज्वार की खेती झाँसी जनपद में कुल खेतिहर भूमि के 37% पर की जाती थी, जबकि सब डिवीजन ललितपुर में केवल 20% खेतिहर भूमि पर ।[3]

----:0:----

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 230.

2- ड्रेक ब्रौक मैन डी0 एल0, पेज 41-43.

3- वही; पेज 43-44.

खण्ड - स

नगदी फसलें

इस जनपद में मुख्य रूप से कपास, तिलहन, पान एवं अल-पलाँट की खेती होती थी जो कि इस जनपद के कृषकों की नकद आमदनी का जरियाँ है । 1903 के फायनल सेटिलमेन्ट के अनुसार मऊ, गरौठा कपास की उपज के प्रमुख क्षेत्र थे ।[1] सब डिवीजन ललितपुर में अधिकतर लाल मिट्टी के क्षेत्र होने के कारण कपास की उपज न के बराबर थी ।

तिलहन :

तिलहन में तिली की फसल इस जनपद की प्रमुख नकद फसलों में एक थी । 1869 के प्रथम सेटलमेन्ट रिपोर्ट के अनुसार सब डिवीजन ललितपुर की कुल खेतिहर भूमि का 10·7% भाग

1- जोशी ई0 बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 121-122·

पर तिली की खेती होती थी ।[1] ललितपुर नगर उस समय तिलहन की एक बड़ी मण्डी था ।[2] यद्यपि तिलहन-खेती, समस्त जनपद के खेतिहर भूमि क्षेत्र को देखते हुए बहुत ही सीमित क्षेत्र पर होती थी तो भी इस जनपद का आर्थिक पिछड़ापन को देखते हुए यह एक उपयोगी फसल थी एवं नकद आमदनी का साधन थी ।[3]

पान

पान ललितपुर जनपद में एक विशेष रूप से मुख्य नकद फसल है ।[4] इस फसल का एक बड़ा भाग देश के अन्य भागों को भेजा जाता है । पान उत्पादन का मुख्य क्षेत्र इस जनपद में पाली परगना है । 1860 में 21 एकड़ की भूमि पर इसकी खेती होती थी ।[5]

-----:0:-----

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 250-251.

2- ऐनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, पेज 604, भाग-13.

3- ड्रेक ब्रौक मैन, पेज 44-45.

4- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 316.

5- वही; पेज 346.

खण्ड - द

पान एवं अल-प्लान्ट की खेती

यह तो ज्ञात है कि पान इस जनपद की एक विशेष फसल है[1] जिसका एक बड़ा भाग देश के अन्य भागों को भेजा जाता है । बिलहरी एवं कपूरी पान की खेती मुख्यतया इस क्षेत्र में की जाती है ।[2] ललितपुर में पान की खेती पाली परगने में अधिक होती है ।[3] 1860 में इसकी खेती 21 एकड़ में होती थी ।[4] 21 एकड़ में यह पान के बागान राव हमीर-सिंह की जागीर का एक भाग थे जिन्होंने 1857 ई0 में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था ।[5] 1858 ई0 के अन्त में इस

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 316.

2- मिश्र के0सी0, चन्देल और उनका राजत्वकाल, पेज 19.

3- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 346.

4- वही; पेज 316.

5- वही; पेज 316.

जनपद में शान्ति-व्यवस्था कायम हो जाने पर ब्रिटिश सरकार ने इस पान बागान को अपने अधिकार में कर लिया था ।[1] उसके बाद इन पान-बागानों की देख-भाल का अधिकार जिला-अधिकारी के पास आ गया था ।[2] एटकिन्सन के अनुसार 1874 में इस पान बागान के पान बहुत प्रसिद्ध थे एवं जनपद व्यापार का एक भाग था ।[3]

1909 में इन पान-बागानों की वार्षिक आमदनी 1,288/= रुपया थी ।[4] पाली के चाय के बागान के अतिरिक्त बानपुर एवं ललितपुर में भी कुछ पान की उपज होती थी जिससे कुछ आमदनी होती थी ।[5] समस्त खेतिहर भूमि पर नजर डालें तो यह प्रतीत होता है कि पान की खेती बहुत ही कम मात्रा में होती थी ।[6]

अल-प्लान्ट

इस जनपद में अल-प्लान्ट की खेती भी की जाती है, इसका उपयोग खरुआ कपड़े के बनाने एवं रंगने में किया जाता है । इसकी

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 316.
2- वही.
3- वही.
4- वही.
5- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पेज 47.
6- वही.

बुआई उत्तम मार मिट्टी में की जाती है । एक एकड़ में 10 मन में जड़ों के रूप में इसकी उपज की जाती है ।[1]
1873 में इस पौधे की जड़ों का बिक्री रेट 8/=रु0 प्रत्येक मन था जो कि उत्तम क्वालिटी का माना जाता था ।[2]
1858 के बाद ब्रिटिश सरकार का इस जनपद पर अधिकार हो जाने पर इसकी खेती में गिरावट आ गई थी ।

----:0:----

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 252.

2- वही.

खण्ड - च

कृषकों द्वारा कृषि-यन्त्रों का उपयोग

इस जनपद में कृषि-कार्य एवं उत्पादन में पिछड़ेपन का एक मुख्य कारण यह भी था कि कार्य अत्यन्त प्राचीन समय से चले आरहे रीति पर आधारित था एवं कृषि कार्य में जिन कृषि-यन्त्रों का प्रयोग होता था वह भी काफी प्राचीन थे ।[1] किसान अधिकतर स्थानीय कारीगरों के बनाये हुए लकड़ी के हल का प्रयोग खेती की जुताई के लिये करते थे । खेत को सपाट करने के लिये भी लकड़ी के पट्टे का प्रयोग करते थे ।[2]

एक विशेष प्रकार का हल जो कि केवल बुन्देलखण्ड में कृषि-कार्य के लिये प्रयोग होता है जिसमें एक चौड़ा लोहे का ब्लेड जो कि 4"इंच चौड़ा एवं 2 इंच लम्बा होता है जो कि इस क्षेत्र की मिट्टी में आसानी से प्रयोग हो जाता, विशेष रूप से काली एवं लाल मिट्टी के क्षेत्र में कृषि कार्य की तैयारी के लिये इसका अधिकतर प्रयोग होता है ।[3] आधुनिक ढंग की खेती एवं यन्त्रों के प्रयोग का प्रचलन एवं जनपद-निर्माण भी नहीं किया जाता था ।

----:0:----

1- जोशी ई0 बी0, पेज 127•
2- वही•
3- वही•

खण्ड - छ

क्या कृषि उत्पादन पर्याप्त था ?

जनपद ललितपुर कृषि के क्षेत्र में अधिक पिछड़ा जनपद माना गया है । यहाँ पर जो उपज होती है वह यहाँ की स्थानीय आवश्यकता के लिये पर्याप्त नहीं थी । इस जनपद में रबी की फसल में उत्पादन की मात्रा अधिक दयनीय है । गेहूँ, चना आदि अधिक मात्रा में नहीं होता । केवल खरीफ की फसल पर आधारित रहना पड़ता है, परन्तु खरीफ के फसल में जो अनाज उपजाया जाता है उसका स्तर काफी नीचा है । कोदों, सौवा एवं कुटकी जैसी निम्न स्तर के अनाज जो कि निर्धन वर्ग के लोगों के प्रयोग में ही आती है । 1864-65 ई0 में डिप्टी कमिश्नर एवं सेटिलमेन्ट अधिकारी ने इस सम्बन्ध में काफी खोज की उनके अनुसार 1865-66 में कुल खेती योग्य भूमि 4,20,348 थी जिसमें से 1/8 में अन्य अनाज एवं 3,64,082 एकड़ पर खाने का अनाज होता था ।[1] कुल अनाज का उत्पादन 14,75,711 मन था जिसमें 1/8 तिलहन आदि में निकल जाता था जिसमें कुल 12,91,247 मन अनाज बच रहता था । 1865 की

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 258.

जनगणना के हिसाब से यह अनाज एक व्यक्ति के भाग में केवल आधा सेर आता (पड़ता) था ।[1] इसका वार्षिक खपत 3,57,742 × 18•5 या 16,30,829 मन होती थी, इसमें से 3,39,582 अथवा 1/5 भाग खाने के अनाज या गेहूँ बाहर से मंगवाना पड़ते थे ।[2] इस प्रकार जो उत्पादन यहाँ के कृषक कृषि में अनाज के रूप में करते थे वह यहाँ की आवश्यकता के लिये काफी नहीं था ।

-----:0:-----

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 258•

2- वही•

अध्याय - 4

कृषि के अलावा आर्थिक-स्थिति का विवरण

भाग - 2 : खण्ड - अ

व्यापार तथा उद्योग

1872 की जनगणना के अनुसार जनपद झाँसी एवं सब डिवीजन ललितपुर में केवल 6,222 व्यापारी थे ।[1] एटकिन्सन के अनुसार सब डिवीजन ललितपुर उस समय महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र नहीं था । इसका कारण वहाँ पर कोई बड़े महत्वपूर्ण नगर भी नहीं थे एवं आने-जाने के साधनों में भी कमी थी ।[2] ललितपुर नगर में कुछ जैनी व्यापारी अनाज,तम्बाकू एवं भूमि क्रय-विक्रय का व्यापार करते थे ।[3] इसके अतिरिक्त टेहरी से भी अनाज एवं पाली में पान अन्य स्थानों को बाहर भेजा जाता था ।[4] वनों से भी कम मात्रा में लाख,शहद प्राप्त ---

---

1- स्टेटिकल डिस्क्रिपटिव एण्ड हिस्ट्रीकल एकाउन्ट आफ द एन0डब्लू0 प्रोविंस आफ इण्डिया,भाग-1 {बुन्देलखण्ड},इलाहाबाद 1874, पेज 269.

2- वही; पेज 348.

3- वही; पेज 332.

4- वही; पेज 348.

होता था जिसका कुछ भाग अन्य जनपदों में भेजा जाता था ।[1] उपरोक्त वस्तुओं के अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्य कपड़ा, घी, तिलहन एवं रूई का व्यापार भी होता था ।[2] 1880-81 में झाँसी-ललितपुर जिले से कच्चा कपास, दलहन, तिलहन 4,49,862 मन बाहर भेजे गये एवं कुछ अनाज, नमक, शक्कर एवं सूती थान अन्य स्थानों से क्रय किये गये जिनका भार 7,50,308 मन था ।[3]

- उद्योग -

उपरोक्त व्यापार के अतिरिक्त इस जनपद में कुछ छोटे-छोटे उद्योग भी स्थापित थे, जो अत्यन्त प्राचीन और पारिवारिक थे ।

तालबेहट परगने में कोरी जाति के लोग मोटे कम्बल बनाते थे एवं कुष्टे सूती रूमाल {साफी} बनाते थे ।[4] मडावरा परगने में नक्काशीदार पीतल और काँसे के बर्तन बनाते थे ।[5]

1- स्टेटिकल डिस्क्रिपटिव एण्ड हिस्ट्रीकल एकाउन्ट आफ द एन0डब्लू0 प्रोविंस आफ इंडिया, भाग-1, {बुन्देलखण्ड} इलाहाबाद 1874, पेज 348.

2- वही.

3- ड्रेक ब्रोकमैन डी0 एल0, पेज 73.

4- वही; पेज 75.

5- वही;

ललितपुर नगर में भारतीय इलाई वर्ग के कुछ लोग सूअर की खाल के घोड़े पर बैठने की जीन वगैरह बनाते थे ।[1] चन्देरी के मुस्लिम जुलाहे रंगीन बेल-बूटेदार चुनरी, दुपट्टे बनाते थे जो कि ललितपुर में आकर बस गये थे ।[2] प्राचीन काल से यह जनपद तिलहन की पैदावार का केन्द्र रहा है । तेली जाति के लोग इस उद्योग को चलाते थे । पहले पुरानी रीति अर्थात् कोल्हू द्वारा सरसों, तिल, अलसी आदि का तेल निकालते थे जो अन्य स्थानों को भेजा जाता था ।[3] इस जनपद में बड़ी मात्रा में खस एवं केवड़ा भी प्राप्त पर्याप्त मात्रा में होता है जिससे यहाँ पर सुगन्धित इत्र एवं तेल बनाया जाता था ।[4] उपरोक्त उद्योगों के अलावा बीड़ी बनाना, लकड़ी चीरना एवं कृषि-यन्त्र बनाने के उद्योग भी स्थापित थे ।[5]

------:0:------

1- ड्रेक ब्रौक मैन डी० एल०, पृष्ठ 75.

2- एटकिन्सन ई० टी०, पृष्ठ 348.

3- जोशी ई०बी०, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 147.

4- वही; पृष्ठ 154.

5- वही; पृष्ठ 146-148.

खण्ड - ब

खनिज सम्पदा का उपयोग

इस जनपद में खनिज पदार्थ भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं जो खनिज पदार्थ इस जनपद में प्राप्त होते हैं, वे हैं - लोहा, पत्थर, ग्रेनाइट-पत्थर एवं तांबा ।[1]

1- जैनकिन्सन ई0 जी0, पृष्ठ 68.

-ए-

लोहा (आयरन) :

शुद्ध एवं मुलायम लोहा इस जनपद के मड़ावरा परगने के सालदा नामक स्थान पर पाया जाता है जिसका एक बड़ा भाग सागर जनपद एवं दक्षिण में भेजा जाता था ।[1] लोहे की चट्टानें पर्याप्त मात्रा में मड़ावरा परगने के गिरार स्थान पर भी पायी जाती थी, परन्तु उन दिनों उसका उपयोग नहीं किया जाता था।[2] लोहे की यह पट्टी सोराई से 3·2 कि0मी0 दक्षिण, सालदा 3·2 कि0मी0 दक्षिण तक, 1·6 कि0मी0 दक्षिण-पश्चिम् से लेकर सगरा से ठीक उत्तर में कुरात तक स्थित है ।[3]

तांबा (कौपर) :

इस जनपद में तांबा ललितपुर नगर से 20 कि0मी0 दक्षिण सोनराई नामक स्थान पर प्राप्त होता है ।[4] सोनराई स्थित तांबे की खोज सर्वप्रथम मैलइट नामक एक अंग्रेज अधिकारी ने की थी । कुछ समय बाद यह सूचना तत्कालीन सहायक कमिश्नर मि0 ह्विक्स को ललितपुर जेल के एक बन्दी ने दी थी, उसने तांबा प्राप्ति का स्थान

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पेज 323-324·

2- वही·

3- जोशी ई0बी0, झांसी गजेटियर, पेज 8-9·

4- वही·,   पेज 8·

एवं तांबा, भूमि से खोदकर निकालने वाले व्यक्तियों के नाम भी बताये थे ।[1]

पत्थर {बिल्डिंग-स्टोन एण्ड रोड मेटेरियल} :

इस जनपद में मुख्य रूप से तीन प्रकार के पत्थर पाये जाते हैं जिनका उपयोग भवन-निर्माण एवं सड़क-निर्माण में होता है । प्रथम प्रकार का पत्थर शीघ्र कटने वाला एवं कम चटकने वाला होता है[2] जिसका प्रयोग यहाँ पर चन्देल कालीन कलाकृतियों में हुआ । यह हल्के पीले एवं भूरे रंग का होता है । दूसरे प्रकार का पत्थर ठोस स्लेटी रंग का चमकदार होता है, इसका प्रयोग भवन-निर्माण में होता है । नवीं शताब्दी में चन्देल शासकों ने इसका प्रयोग अपनी विशाल मन्दिरों एवं भवनों में किया है ।[3] तीसरे प्रकार का पत्थर अच्छा एवं कड़ा होता है जो ग्रेनाइट कहलाता है, यह पत्थर गिट्टी के रूप में परिवर्तित करके पक्की सड़कें बनाने के काम आता है ।[4]

------:0:------

1- एटकिन्सन ई0टी0, पेज 324.
2- जैनकिन्सन ई0जी0, पेज 68.
3- वही.
4- जोशी ई0बी0, पेज 8.

खण्ड - स

स्थानीय उद्योग धन्धों का विनाश (मतन)

एक विशाल आबादी वाले एवं प्राकृतिक सुविधाओं से परिपूर्ण क्षेत्र को देखते हुये इस जनपद में उद्योगों की स्थिति नगण्य थी। जिला ललितपुर में कोई ऐसा बड़ा उद्योग स्थापित नहीं हो पाया था जिससे यहाँ के लोगों को धन्धा या नौकरी मिल सके। 1891 के बाद जबकि यह जनपद, झाँसी जनपद में मिला दिया गया था, तब तक यहाँ पर न तो कोई बड़ा नगर था एवं न ही एक मुख्य व्यापारिक केन्द्र।[1] यद्यपि इस क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में लोहा, ताँबा एवं अन्य कच्चा माल, रूई आदि मिलता था। ललितपुर नगर में सर्वप्रथम कैप्टन टिलर ने कुछ उद्योग चलाने का प्रयास किया था। उसने कुछ मुस्लिम जुलाहों को चन्देरी से बुलाकर यहाँ बसवाया था, परन्तु यह उद्योग 1865 के भयानक महामारी (हैजा) के कारण सफल नहीं हो पाया था, क्योंकि अधिकतर मुस्लिम जुलाहे इस महामारी से मर गये या भाग गये।[2]

सम्पूर्ण ब्रिटिश काल में इस जनपद में केवल तालबेहट में कम्बल उद्योग, ललितपुर में जीन-उद्योग, मड़ावरा में बर्तन-उद्योग के अतिरिक्त सम्पूर्ण जनपद में कहीं पर कोई उद्योग नहीं था।

1- एटकिन्सन ई0टी0, पेज 348.

2- वही.

उस समय ललितपुर नगर तिलहन, घी की एक बड़ी मण्डी माना जाता था। परन्तु तेल पिरौना का कार्य पुरानी कोल्हू-रीति से निकाला जाता था । 1940 में सर्वप्रथम मोहन आयल-मिल्स नाम का तेल स्पेलर लगाया गया था ।[2] कुछ उद्योग धन्धे इस क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के आने से भी नष्ट हो गये । ब्रिटिश शासन से पूर्व इस क्षेत्र में ऊनी कालीन बनाने का उद्योग था जो अंग्रेजों के आने से नष्ट या बन्द हो गया ।[3] इसका मुख्य कारण ब्रिटिश शासन की स्थानीय उद्योग में रूचि न होना था ।

जनपद का कम लागत का व्यापार तथा घरू उद्योग धीरे-धीरे काम करता रहा । उस व्यापार से आम आदमी को कार्य तथा भरपेट भोजन उपलब्ध हो जाता था, किन्तु जब जनपद व पूरे भारत पर अंग्रेजों का दबाव बढ़ा तो उनके उद्योगों को भी नुकशान होने लगे जिससे उनके उद्योग धन्धे व व्यापार चौपट हो गये । इससे हमारा ललितपुर जनपद भी विनाश की ओर अग्रसर हुआ एवं पूर्ण जनपद अंग्रेजों की कुरीति का शिकार हो गया ।

1947 तक विदेशी शासक पूरे देश की भाँति इस क्षेत्र में भी छाया रहा । यहाँ की स्थिति सामरिक-महत्व तथा शौर्यपूर्ण इतिहास के कारण तथा कुटीर उद्योग का अच्छा व्यापार होने के

1- एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग-13, पेज 604.
2- जोशी ई0बी0, पेज 148.
3- मेमोरी आफ बुन्देलखण्ड, 21 मई 1825, पेज 277.

कारण विदेशी शासक इस क्षेत्र में भी अपना पूर्ण नियन्त्रण स्थापित करना चाहते थे और इस दिशा में उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई। अंग्रेजी शासनकाल में पूरे देश का आर्थिक शोषण हुआ और ललितपुर जनपद में उससे पीछे नहीं रहा। धीरे-धीरे ईस्ट इण्डिया कम्पनी सारे भारत में छाने लगी तथा इंगलैण्ड में हो रहे उत्पादन को भारत में लाकर बेचने लगी। बुन्देलखण्ड के क्षेत्रों में भी इसकी बिक्री प्रारम्भ की गयी। विदेशी वस्तुओं की ख्याति बनाने के लिये इस बात की आवश्यकता महसूस की गयी कि यहाँ के उद्योग धन्धों का विनाश किया जाय और यदि यहाँ का व्यापार समाप्त हो जाये तो ऐसी स्थिति में लोगों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये इंग्लैण्ड के उद्योग पर निर्भर होना पड़ेगा। अंग्रेज सरकार की इस नीति के फलस्वरूप सन् 1876 में लिटन भारत का गवर्नर जनरल बना तो उसने सम्पूर्ण भारत में इंग्लैण्ड से आने वाली वस्तुओं पर कर को समाप्त कर दिया एवं भारत से जाने वाली वस्तुओं पर अत्यधिक कर लगाया जिससे भारतीय आय का प्रमुख साधन व कपड़ा-व्यापार, नील-व्यापार, लोहा-उद्योग आदि बनाने के लिये कच्चे माल की आवश्यकता पड़ी। अत: ब्रिटिश सरकार ने उसे भारत से लाना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार भारत ब्रिटेन के हितों की पूर्ति करने का एक साधन बन गया। इससे भारत में धन-निस्कासन होने लगा जिससे सम्पूर्ण जनपद दरिद्रता की श्रेणी में आ गया।

"धन निष्कासन" से तात्पर्य, वह धन जो भारत से बाहर इंग्लैण्ड को भेजा जाता था और उसके बदले भारत को कुछ भी प्राप्त नहीं होता था (अप्रतिदत्त निर्यात) "धन निष्कासन" कहलाया।

यह धन-निष्कासन धातु-मुद्रा के रूप में कम, और वस्तुओं के निर्यात-व्यापार के रूप में अधिक होता था। सामान्यतया यह समझा जाता है कि किसी देश के सम्पन्न होने अथवा आर्थिक स्थिति के दृढ़ होने का एक मात्र प्रमाण यह है कि उस देश का आयात की अपेक्षा निर्यात-व्यापार अधिक होता है। भारत में धन निष्कासन का माध्यम वह अतिरिक्त निर्यात-व्यापार ही था।

किसी देश या राष्ट्र के स्तर पर जिन वस्तुओं को देश से बाहर भेजा जाता था उनका मूल्य उस व्यक्ति को अवश्य दिया जाता था, लेकिन देश को उसके बदले में कुछ भी प्राप्त नहीं होता था। कम्पनी जितना राजस्व भारत से कमाती थी उसी से वस्तुएं खरीदकर बाहर भेजती थी। उन वस्तुओं के बदले धातु-मुद्रा उपलब्ध नहीं होती थी।

सोने-चाँदी को देश से बाहर इंग्लैण्ड ले जाना, धन-निष्कासन का बहुत छोटा अंश था जो कम्पनी के प्रशासनकाल में हुआ। निष्कासन की इस पद्धति को सामान्य भारतीयों की समझ में बहुत देर से आया।[1] भारतीय नेताओं में दादा भाई नौरोजी ही पहले ऐसे व्यक्ति थे, जो इस प्रक्रिया के दूरगामी परिणाम को

1- एटकिन्सन ई० टी०, झांसी गजेटियर, 1965, पेज 252.

समझ सके । दादाभाई नौरोजी ने ही सबसे पहले यह तर्क प्रस्तुत किया कि "अंग्रेजी साम्राज्य की नीतियों का परिणाम भारत को निर्धन बनाना था ।[1] उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत से अतिरिक्त निर्यात किया जाना वास्तव में धन-निष्कासन का एक साधन था ।"

यद्यपि उनकी अंग्रेजों के प्रति अटूट श्रद्धा थी, इसीलिये इन्होंने अपनी मौलिक पुस्तक का नाम "पावर्टी एण्ड ब्रिटिश रूल इन इण्डिया" रखा, जिसका अभिप्राय यह था कि अंग्रेजी नीति अंग्रेजी लक्ष्य के अनुरूप नहीं थी ।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों तथा तत्कालीन गवर्नर जनरलों ने इतनी लूटमार की कि सारा भारत दरिद्रता की श्रेणी में आ गया ।[2] विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिये यह आवश्यक समझा गया कि इस क्षेत्र के भी हो रहे औद्योगिक उत्पादन तथा कुटीर उद्योग धन्धों को नष्ट कर दिया जाय । इसी नीति के अन्तर्गत् बुन्देलखण्ड के उद्योग तथा धन्धों का विनाश कर दिया गया ।

अंग्रेजों ने भारत में जिस नीति का सृजन किया था उससे भारत के पिछड़े हुए क्षेत्र बुन्देलखण्ड के लघु(कुटीर) उद्योग को गहरा धक्का लगा और वह नष्ट हो गये जिससे जनता का आर्थिक पिछड़ापन और बढ़ गया और वह अत्यधिक गरीब हो गये ।

1- हिस्ट्री आफ इंगलेण्ड, पारसारथी जी, पेज 30.
2- फ्रीडम स्ट्रगल, नयी दिल्ली.

जनपद में उद्योगों का विनाश

अंग्रेजी शासनकाल में बुन्देलखण्ड की अच्छी किस्म की मार भूमि में "अल" नामक पौधे की खेती की जाती थी ।[1] इस पौधे की जड़ को खोदकर तथा उसे भट्ठियों में जलाकर विभिन्न प्रकार के रंगों का निर्माण किया जाता था जिसका उपयोग वस्त्रों के रंगने के कार्य में होता था ।[2] मुख्यत: उसको नील का रंग के नाम से जाना जाता था । यह रंगाई का उद्योग मुख्यत: इस क्षेत्र में मऊरानीपुर तथा उसके आसपास के क्षेत्रों तक फैला हुआ था । इस क्षेत्र में एक प्रकार के वस्त्र की बुनाई होती थी जिसे खरूआ वस्त्र उद्योग के नाम से जाना जाता था ।[3] खरूआ उद्योग का प्रधान केन्द्र मऊरानीपुर में स्थित था । इस कपड़े की रंगाई में जो विभिन्न प्रकार के रंग प्रयोग होते थे, वे अल पौधे की जड़को पकाकर तैयार किये जाते थे । उन दिनों यह बड़ा ही प्रसिद्ध उद्योग था जिससे इसकी खेती करनेवाले किसान लाभान्वित होते रहते थे ।

अल नामक पौधे की खेती अच्छी किस्म की मार भूमि में की जाती थी और लगभग एक एकड़ भूमि में इस पौधे की 10 मन जड़ का उत्पादन हो जाता था ।[4] 1873 में यह अनुमान लगाया

1- एटकिन्सन ई०टी०, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 252.
2- पाठक एस०पी०, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 57.
3- वही.
4- एटकिन्सन ई०टी०, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 252.

गया था कि यह जड़ 8 (आठ) रूपये प्रति मन के हिसाब से बेची जाती थी ।[1]

यह बड़े आश्चर्य का विषय है कि यह पौधा जो कि जनपद के कृषकों के लिये एक प्रमुख आमदनी का श्रोत था । उसकी खेती का पतन अंग्रेजी शासनकाल में हुआ । ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजी शासक इस क्षेत्र के रंग-उद्योग को नष्ट करना चाहते थे । इसके पीछे उनका इरादा यह था कि इंगलैण्ड में जिस रंग का उत्पादन हो रहा है,उसे भारत में बेचा जाय । यही कारण था कि अल पौधे की खेती को अंग्रेजी शासकों का संरक्षण नहीं मिला । 1892 में हूपर ने लिखा कि - इस पौधे की खेती इस क्षेत्र के किसानों के लिये एक लाभप्रद उद्योग था । लेकिन 1892 तक इसकी खेती काफी कम हो गयी । परिणामस्वरूप न केवल ललितपुर बल्कि बुन्देलखण्ड के सम्पन्न क्षेत्रों में जहाँ पर यह पौधा उगाया जाता था । वहाँ के किसानों को आर्थिक रूप से भारी नुकशान हुआ ।[2] क्षेत्र का प्रसिद्ध वस्त्र उद्योग जो अल पौधे के रंग से रंगा जाता था,उसको भी गहरा धक्का लगा । इससे जिले के दरी-उद्योग की रंगाई व चन्देरी के साड़ी उद्योग को विशेष क्षति पहुँचा जिससे उद्योग ही नष्ट हो गये । इस इस पौधे की खेती के नष्ट होने के निम्नलिखित कारण प्रतीत होते हैं-

---

1- एटकिन्सन ई0टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 252.

2- इम्पे डब्लू0एच0एल0 तथा मेस्टन जे0एस0,सेटिलमेन्ट रिपोर्ट ,झाँसी, इलाहाबाद 1892, पृष्ठ 3.

एक तो पौधे की खेती का लाभ का अनुपात कम था । दूसरा इस पौधे की खेती की देखरेख की बहुत ही आवश्यकता थी, क्योंकि इसमें कीड़े भी लग जाते थे । तीसरी-इस पौधे की जड़ें काफी गहराई में जाती थीं तथा इनकी खुदाई के लिये काफी पैसा खर्च करना पड़ता था ।[1] इसके साथ ही सरकार की ओर से अल पौधे की खेती को कोई प्रोत्साहन नहीं दिया गया अतः नील-उद्योग तथा रंगने का उद्योग नष्ट हो गया ।

कुटीर उद्योगों का पतन

जहाँ पर क्षेत्र या जनपद के किसान आर्थिक रूप से नष्ट हो रहे थे, वहीं दूसरी ओर व्यापारी तथा उत्पादन वर्ग भी खुशहाल नहीं था । इसका कारण स्पष्ट था- अँग्रेज अधिकारियों को बुन्देलखण्ड के क्षेत्रीय विकास में कोई रुचि नहीं थी और वे तो इस क्षेत्र को औद्योगिक रूप से पिछड़ा बनाये रखना चाहते थे, ताकि 1857 के विद्रोह में भाग लेने की उचित सजा यहाँ के निवासियों को दी जा सके । 1872 में एटकिन्सन ने लिखा था कि "झाँसी जिले में कुल 6222 व्यक्ति व्यापारिक कार्यों से जुड़े हुये हैं । इसके अलावा कुछ ऐसे लोग हैं जो आयात-निर्यात तथा ऋण लेन-देन का काम भी किया करते हैं ।[2] यद्यपि 1891 तक ललितपुर जिला एक

1- एटकिन्सन ई0टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पेज 252-253.

2- वही; पेज 269.

पृथक जिला था । यहाँ पर कुछ ऐसे जैन व्यापारी थे जो गल्ला, तम्बाकू तथा ऋण का लेन-देन का व्यापार करते थे ।[1] प्राप्त आँकड़ों से प्रतीत होता है कि इस जिले से अन्य क्षेत्रों को मोटा अनाज, दालें, तिलहन, सूती कपड़ा तथा घी का व्यापार यहाँ के लोगों को अधिक प्रेरणा प्रदान नहीं कर सका । यद्यपि जिले से बड़ी मात्रा में सामान अन्य जिलों को निर्यात किया गया, लेकिन दूसरी तरफ विदेशी गल्ले के आयात, नमक, चीनी, सूती कपड़े आदि वस्तुएं तथा 750308 मन तक के मूल्य के सामान इस क्षेत्र में मंगाने पड़े थे । इस प्रकार व्यापार का संतुलन बिगड़ता ही चला गया और इस क्षेत्र के लोगों की भयानक आर्थिक स्थिति हो गयी । वे दरिद्रता तथा भूख से मरने लगे तथा क्षेत्र को छोड़कर भागने लगे । जिसे सरकार तथा तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारियों ने रोकने का कोई प्रयत्न नहीं किया । उनके जाने के बाद न केवल उद्योग धन्धे बल्कि खेती भी बेकार हो गई तथा इस क्षेत्र के लोगों को आयात-निर्यात की दृष्टि से कोई लाभ नहीं हुआ ।

बुन्देलखण्ड में ब्रिटिश शासन की स्थापना के 100 वर्ष पूर्व ही यह क्षेत्र व्यापारिक तथा औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ । पहले यह एक छोटा-सा कस्बा था, किन्तु बाहर से कारीगरों के आकर बस जाने से यहाँ पर उद्योग धन्धों का विकास हुआ जिसमें वस्त्र-उद्योग प्रमुख था । यहाँ कारीगर दरी, साड़ी, बोरियाँ, चटाइयाँ

1- एटकिन्सन ई0टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 347-348.

आदि का निर्माण हाथों से करते थे । यहाँ के कुछ बुन्देला सरदारों ने कारीगरों को संरक्षण दिया । अतः इन व्यापारियों ने इस क्षेत्र में अपने औद्योगिक प्रतिष्ठान खोलने प्रारम्भ किये ।[1] तभी से इस क्षेत्र में यह व्यापारिक प्रतिष्ठान के रूप में विकसित होने लगा ।

खरूआ वस्त्रों का उद्योग सम्भाग के मुख्यतः मऊ क्षेत्र में अधिक था एवं अंग्रेज शासन के पूर्व ही यह क्षेत्र खरूआ वस्त्रों के लिये प्रसिद्ध हो चुका था । इन्हीं खरूआ वस्त्रों को जनपद के कई भागों में भी लघु उद्योग के रूप में विकसित हो गया ।

खरूआ वस्त्र एक प्रकार के रंग से रंगा जाता था ।[2] यही कारण था कि अल पौधे की खेती जनपद तथा बुन्देलखण्ड के कई क्षेत्रों में प्रसिद्ध हो गई थी । इस उद्योग के अन्तर्गत कई प्रकार के वस्त्र बनाये जाते थे । यह उद्योग काफी विकसित हुआ एवं सम्भाग के मऊ क्षेत्र में आज भी प्रसिद्ध है । किन्तु यह उद्योग शीघ्र ही नष्ट हो गया, क्योंकि इसको सरकार ने कोई प्रोत्साहन नहीं दिया । इसके साथ ही विदेशी रंग आ जाने के कारण इस उद्योग को कोई संरक्षण नहीं मिला[3] तथा निषेधात्मक नीति अपनाकर ब्रिटिश सरकार ने इसके पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इंगलैण्ड से

1- एटकिन्सन ई० टी०, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 289.

2- पाठक एस०पी०, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पेज 61.

3- वही.

भारत आने वाले कपड़ों पर कर न होने के कारण वे कपड़े बुन्देल-खण्ड या झाँसी सम्भाग के बाजारों में सस्ते दर पर बिकने लगे। ऐसी स्थिति में यह लघु उद्योग नष्ट हो गया।

अन्य लघु उद्योग

क्षेत्र के कुछ अन्य उद्योग धन्धे, जिनका पतन भी अंग्रेजी शासनकाल में हुआ, जिसमें कालीन व ऊन के लघु उद्योग थे जिनका आगे आने वाले दिनों में सरकार की निषेधात्मक व्यापारिक नीति के कारण एवं संरक्षण के अभाव के कारण क्षेत्र के यह उद्योग धन्धे भी नष्ट हो गये। इसके अतिरिक्त तालबेहट परगने में कम्बल बुनाई का कार्य होता था।[1] तथा मऊरानीपुर में पीतल के व लोहे की अनेक कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती थीं।[2] जनपद में अमेरिकन मिशनरियों ने सूअर की चर्बी से मस्क बनाने के कार्य को प्रारम्भ किया था।[3] साथ ही समीप के गाँवों के मुसलमान कलात्मक चुनरी बनाते थे।[4] इसके अतिरिक्त ललितपुर जनपद में चन्देरी में

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, झाँसी गजेटियर 1909, पृष्ठ 75.

2- वही.

3- वही.

4- इम्पे डब्लू०एच०एल०, एण्ड मेस्टन जे०एस०, झाँसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1892, पृष्ठ 23.

बनने वाली अच्छी प्रकार की साड़ी जैसा कुटीर उद्योग प्रारम्भ करने के लिये कुछ जुलाहे आकर बस गये थे, किन्तु 1865 में हैजा के फैल जाने के कारण उनमें से अधिकांश जुलाहे मर गये ।[1] इसके बाद कभी भी ऐसा प्रयास नहीं किया गया जिससे ये प्राचीन हस्त-कलात्मक उद्योगों को पुन:शुरू करके जनपद की समृद्धि तथा विकास को आगे बढ़ाया जाये ।

ललितपुर के विभिन्न स्थानों में खाना पकाने के लिये पीतल तथा तांबे के बर्तन बनाने के कार्य भी होते थे तथा जगह-जगह सोने व चाँदी के अच्छे किस्म के आभूषण बनाये जाते थे ।[2] जिले में सूती व ऊनी वस्त्रों की बुनाई के अलावा कहीं-कहीं पर टाट भी बुना जाता था ।[3]

ललितपुर जिले में चट्टानों का अत्यधिक व्यापार था । यहाँ से चट्टानों को खदानों से निकालकर एक लम्बी चादर जैसी काटकर बाहर भेजा जाता है जो मुख्यत:मकान के काम में आती है । इसका व्यापार अत्यधिक है । इसके अतिरिक्त पत्थरों को काटकर उन पर पालिस करके सुन्दर अलंकृत किया जाता है ।[4] इस जिले का सर्वप्रसिद्ध उद्योग पत्थरों की कटाई तथा उस पर

1- एटकिन्सन ई0टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 348.
2- ड्रेक ब्रौकमैन डी0एल0, बुन्देलखण्ड गजेटियर 1909, इलाहाबाद पृष्ठ 77.
3- वही.
4- वही; पृष्ठ 76-77.

पालिश करना था ।[1] बेतवा नदी की तलहटी में जो छोटे-छोटे किस्म के पत्थर पानी की रगड़ से मुलायम व चिकने हो जाते थे उन्हें लेकर यहाँ के कारीगर पालिस करके उन्हें अच्छी किस्म के चमकीले पत्थरों के रूप में उन्हें कलात्मक सौन्दर्य प्रदान करते थे ।[2] इन पत्थरों पर लकड़ी के टुकड़ों पर एक ऊँची ऊँचाई से मढ़कर अच्छी हस्त-निर्मित चीजें बनाई जाती थीं । इस कलात्मक कार्य ने यहाँ के कारीगरों को, देश के विभिन्न तथा दिल्ली प्रदर्शनी में पुरूस्कृत किया था;[3] किन्तु दुर्भाग्यवश अंग्रेजी शासनकाल में इन छोटे-छोटे उद्योगों को कोई संरक्षण नहीं दिया गया, बल्कि सरकार ने निषेधात्मक तरीके अपनाकर इन्हें हतोत्साहित किया । आश्चर्य की बात तो यह थी कि सरकार ने बुन्देलखण्ड के व्यापार को नष्ट करने की योजना-सी बना ली थी । उनके कारण कई छोटी-छोटी मिलें बन्द हो गयीं जिससे तमाम लोग बेरोजगार हो गये ।[4] उन्होंने गरीबी के सूत्र को और आगे बढ़ाया जिसका परिणाम हम आज भी गरीब हैं एवं अभीतक पूर्णतया समृद्ध नहीं हो सके । लगभग 70% लोग या परिवार आज भी गरीब है, यह अंग्रेजों की नीति के परिणामस्वरूप ही सम्भव हो सका जिसके कारण आर्थिक सामाजिक पिछड़ापन आया और बेरोजगारी बढ़ी ।

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, बुन्देलखण्ड गजे0 1909, इलाहाबाद, पृ0 76-77.
2- वही.
3- वही.
4- सेटिलमेन्ट रिपोर्ट 1881, इलाहाबाद, पेज 102.

जनपद में कपास व तिलहन की खेती का विनाश

अंग्रेजी शासनकाल से पूर्व ही जनपद की अच्छी प्रकार की काली मिट्टी में उच्च किस्म की कपास पैदा होती थी । यह जनपद के तथा बुन्देलखण्ड के वस्त्र उद्योग के लिये महत्वपूर्ण खेती की फसल थी जिससे जनपद के लोगों को कारोबार मिलता था एवं उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती थी । क्षेत्र में इसकी खेती का बड़ा भाग क्षेत्रफल के रूप में शामिल था । अधिकांश परिवार इसकी खेती में भाग लेते थे । 1903 में बन्दोवस्त अधिकारी पिम ने[1] लिखा कि "इस जिले में 10%[2] के लगभग खेती योग्य भूमि में कपास का उत्पादन होता है । यद्यपि जनपद ललितपुर में कपास के उत्पादन के लिये उपयुक्त कुछ भूमि को छोड़कर अधिकांश जमीन निम्न कोटि की भूमि के कारण इस फसल का उत्पादन अधिक नहीं हो सका ।[3]

1874 में एटकिन्सन ने लिखा था[4] कि "ललितपुर में कपास की जितना उत्पादन होता है, वह अत्यन्त कम है । इससे केवल स्थानीय आवश्यकताओं की ही पूर्ति होती है, बल्कि आस-पास के जिलों से भी ललितपुर में कपास मंगानी पड़ती है ।[5]

1- पाठक एस0पी0, झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 55.

2- वही.

3- एटकिन्सन ई0टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 316.

4- वही.

5- वही.

किन्तु क्रमशः इसकी बोवाई का क्षेत्रफल होता गया ।[1] धीरे-धीरे कपास का उत्पादन और कम होता गया । ऐसा लगता है कि बुन्देलखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में कपड़ा उद्योग होने के कारण यहाँ से कपास वहाँ भेजी जाती थी, किन्तु जैसे ही बुन्देलखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों जैसे मऊ, कोंच, कालपी, एरच, चन्देरी, तालबेहट आदि क्षेत्रों में उद्योग समाप्त हुआ । वैसे ही इस क्षेत्र से कपास की माँग कम होने लगी । इससे कपास उत्पादकों को गहरा धक्का लगा । अतः सरकार द्वारा संरक्षण का अभाव तथा विदेशी कपड़ों के आगमन से जनपद का कपास उद्योग बन्द हो गया । इससे इस क्षेत्र का सामाजिक, आर्थिक पिछड़ापन निरन्तर बढ़ता गया ।

कपास के अलावा ललितपुर जनपद के क्षेत्रों में तिलहन का भी अच्छा उत्पादन होता था । इससे मुख्यतः तिली का उत्पादन उच्च स्तर पर किया जाता था ।[2] ललितपुर जनपद में तिलहन का झाँसी से अधिक प्रसिद्ध था । 1869 के बन्दोबस्त के समय यह पता चलता है कि वहाँ की 10·7%[3] खेती योग्य जमीन में तिली बोई गयी थी, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि तिलहन के उत्पादन में भी किसानों की अभिरूचि कम होती चली गयी । उत्पादन में अधिक लागत तथा कम पारिश्रमिक की प्राप्ति के कारण यह उद्योग भी नष्ट

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झाँसी गजेटियर, इलाहाबाद 1909, पृ0 43-44·
2- एटकिन्सन ई0टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 250-251·
3- वही; पृष्ठ 316·

हो गया । यदि सरकार ने गरीब किसानों की मदद की होती तथा उनको आधुनिक यन्त्र व आर्थिक सहायता दी होती तो यह व्यापार काफी लाभप्रद था,पर अंग्रेजों को अपना वस्त्र-व्यापार भारत में जमाना था जिसके कारण उन्होंने किसी प्रकार की मदद यहाँ की जनता की नहीं की । दूसरे बेवक्त अकाल व खराब मौसम के कारण भी यह कृषि उद्योग समाप्त-सा हो गया । इस प्रकार कपास,तिलहन आदि की खेती का पतन अंग्रेजी शासनकाल में हुआ जिससे इस जनपद में तथा सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में गरीबी, भुखमरी और मंहगाई बढ़ती चली गयी एवं उद्योग व किसान बर्बाद हो गये जिसका प्रमुख कारण अंग्रेजों की जनपद व बुन्देलखण्ड के विकास को रोकने की नीति का प्रत्यक्ष परिणाम था ।

------:0:------

खण्ड - द

वन सम्पदा

इस जनपद की जलवायु एवं प्राकृतिक बनावट का यहाँ की वनस्पतियों पर गहरा प्रभाव पड़ा है । जनपद की अधिकतर भू-भाग पर वन अथवा जंगल फैले हुये हैं जो कहीं-कहीं पर एकदम घने हो गये हैं । मैदानी भागों में जहाँ वन है, वहाँ पर लम्बी-लम्बी घास विस्तृत रूप से फैली है जिसको काँस, सरका, लंवा, दूब, पनवसा आदि कहा जाता है ।[1] मैदानी भाग में जो वृक्ष पाये जाते हैं वह प्राय: बबूल, ढाक, छेवला, तेंदू, गूलर आदि के होते हैं ।[2] पर्वतों के ऊपर झरबेरी, करौंदा, मकोया, रियाँ, बिठार आदि की झाड़ियाँ बहुतायत रूप से पायी जाती हैं ।[3]

1901 में इस क्षेत्र में (झाँसी-ललितपुर) में सबसे अधिक 58•69 इंच वर्षा हुयी थी जो पिछले 40 वर्षों में सर्वाधिक थी जिससे यहाँ पर चारों ओर प्राकृतिक वनस्पतियों के लिये वरदान सिद्ध हुयी थी ।[4]

1- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल, पेज-17•
2- वही; पेज-18•
3- वही; पेज-17•
4- ड्रेक ब्रौकमैन डी०एल०, पेज-33•

एटकिन्सन के अनुसार जिला ललितपुर का एक बड़ा क्षेत्र निजी जंगलों से ढका हुआ है ।[1] राजकीय वन-विभाग, झाँसी के अनुसार 23,133 एकड़ एवं 90,694 एकड़ की सीमा में सरकारी जंगल है ।[2]

वनों से प्राप्त वस्तुएं (लकड़ी)

इस जनपद में फैले हुये इन विशाल वनों से बड़ी मात्रा में जलाऊ लकड़ी एवं ईमारती लकड़ी प्राप्त होती है । खैर, खरूआ, करधई, ढाक आदि की लकड़ी जलाने के काम आती है । साल, सागौन एवं तेंदू की लकड़ी, फर्नीचर आदि के काम में आती है । बाँस एवं ढाक के पत्तों से टोकरी, दोना आदि बनाये जाते हैं ।

घास

इस जनपद के वनों की मुख्य प्राकृतिक उपज "घास" है । प्रत्येक वर्ष पशुओं के बड़े समूह यहाँ पर घास चरने आते हैं । 1868-69 के सूखे एवं अकाल वाले वर्षों में जबकि इस क्षेत्र में चारों ओर घास सूख गई थी, तब बड़ी संख्या में पशुओं के समूह बालाबेहट एवं लखनजीर भेजे गये थे ।[3]

1- एटकिन्सन ई०टी०, पेज 258-259 एवं 307.
2- वही.
3- वही; पेज 308.

अन्य वस्तुएं

इस क्षेत्र में सहरये नामक जाति जंगलों की वस्तुओं का व्यापार करती है ।[1] इस जनपद के जंगलों से जो अन्य वस्तुएं प्राप्त होती हैं वह हैं - महुआ, चिरोंजी, लाख, शहद, मोम एवं गोंद ।[2]

जड़ी-बूटियों में लोयान, हर, बहेड़ा, आँवला, अशोक, कदंब, काफड़, हर सिंगार, अमलतास, सिरस, कपूर आदि ।[3]

ललितपुर जनपद के वनों से प्राप्त सम्पत्ति का विवरण

घास
जलाऊ लकड़ी
इमारती लकड़ी
शहद
लाख
मोम
गोंद
जड़ी-बूटियां

1- एटकिन्सन ई0टी0, पृष्ठ 308.
2- वही.
3- मिश्र केशवचन्द्र, पेज 18.

इन सब वस्तुओं के अलावा वहाँ पर लकड़ी का उद्योग बड़ा महत्वपूर्ण उद्योग है । यहाँ पर साल, सागौन, शीशम की लकड़ी बहुतायत मिलती हैं जिसका उपयोग इमारती कार्यों के अतिरिक्त जहाजों, फैक्टरियों आदि में किया जाता है । यहाँ पर कत्था भी पैदा होता है उसके अलावा कुछ स्थानों पर गोंद भी मिलती है ।

ललितपुर के कुछ क्षेत्र में कई किस्म की दवाइयाँ भी पायी जाती हैं जिनको वहाँ के जंगलों से प्राप्त किया जाता है जो मनुष्य के जीवन के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है । उन्हीं लकड़ी से कोयला की भी प्राप्ति होती है ।

ललितपुर के जंगलों में तथा उसके आसपास के क्षेत्र में तेंदू के पत्ते का भी उत्पादन होता है जिसका प्रमुख उपयोग बीड़ी के उद्योग में होता है । उसकी पत्तियों को चुना जाता है, फिर उन पत्तियों का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है जिससे हजारों व्यक्तियों को रोजगार मिलता है । यह पत्तियों को बाहर भेजा जाता है इससे आय में भी काफी वृद्धि होती है । इस प्रकार ललितपुर जिले की वन-सम्पदा काफी महत्वपूर्ण है ।

------:0:------

खण्ड - च

सारांश

1860 में जनपद पर ब्रिटिश सरकार का शासन लागू हुआ था । 1860 से 1947 ई० तक के सम्पूर्ण ब्रिटिश काल में इस जनपद के व्यापार, उद्योग-धन्धों का मूल्यांकन करने पर निम्नलिखित सारांश निकलता है :-

(1) व्यापार को प्रोत्साहन न मिलना :

इस जनपद में ब्रिटिश शासकों ने प्रारम्भ से व्यापार को प्रोत्साहन नहीं दिया, इस कारण व्यापार की स्थिति दिनोंदिन गिरती गयी एवं व्यापारियों में असन्तोष फैल गया । समस्त ललितपुर जनपद का व्यापार कुछ जैन व्यापारियों के हाथ में था । जमीन क्रय-विक्रय का धन्धा भी उन्हीं के हाथ में था ।[1]

1- एटकिन्सन ई० टी०, पृष्ठ 269.

जो वस्तुएं बाहर भेजी जाती थीं, वह मोटे अनाज, दालें, तिलहन, कपास और घी मुख्य थीं । परन्तु इन वस्तुओं के व्यापार से इस जनपद को आर्थिक लाभ कम ही प्राप्त होता था ।[1] मुख्य रूप से इन वस्तुओं के जैन व्यापारी स्थानीय कृषकों व उत्पादकों से मनमानी भाव से खरीदते थे जिससे स्थानीय छोटे व्यापारियों को लाभ कम होता था । ब्रिटिश शासकों को स्थानीय उत्पादकों की समस्याओं पर ध्यान न देने पर उनमें असन्तोष की भावना पनपने लगी ।

§2§ पुराने उद्योगों की समाप्ति :

ब्रिटिश शासन से पूर्व, इस क्षेत्र में कई कुटीर उद्योग स्थापित थे । जैसे- कालीन, रूमाल बनाना, कम्बल बनाना, सूती वस्त्र बनाना, सुगन्धित इत्र आदि । इन उद्योगों में निर्मित वस्तुएं यहाँ के स्थानीय बाजारों में काफी मात्रा में बिक जाती थीं एवं बाहर के अन्य जनपदों को भेजी जाती थीं । ब्रिटिश शासन के लागू होते ही कुछ उद्योग पूर्ण रूप से बन्द हो गये एवं कुछ चलते रहे जो कि नगण्य थे ।

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 332.

1883-1889 में इस क्षेत्र को रेल-पथ से इण्डियन मिडलेण्ड द्वारा देश के अन्य भागों से जोड़ा गया जो यहाँ के उद्योगों के लिये अभिशाप साबित हुआ । समस्त बाजार ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं एवं कपड़ों से पट गये जिससे स्थानीय उद्योग में निर्मित वस्तुओं की बिक्री स्थानीय बाजारों में कम हो गयीं ।[1] पुराने उद्योग धन्धे धीरे-धीरे बन्द होने लगे ।

शुरू से ही अंग्रेजों की यही नीति रही कि भारत का पूर्णत: आर्थिक शोषण किया जाये एवं भारत से अधिक से अधिक मात्रा में कच्चे माल का उत्पादन करवाना, अपने अनुकूल खेती करने के लिये किसानों को बाध्य करना एवं कच्चे माल को इंगलैण्ड में भेजना एवं वहाँ से तैयार माल को भारत में लाकर बेचना था । भारत का कपड़ा उद्योग संसार में प्रसिद्ध था । यहाँ के सूती व रेशमी वस्त्र तथा ढाका का मलमल संसार प्रसिद्ध था । अत: अंग्रेजों ने भारत के इस व्यापार को नष्ट करना प्रमुख उद्देश्य बनाया । उन्हीं के तहत इंगलेण्ड से आने वाले माल पर , कर कम लगाये एवं भारत से जाने वाले माल पर अत्यधिक कर लगाये । जिससे भारत का उद्योग नष्ट हो गया । भारत का व्यापार

1- जोशी ई0 बी0, पृष्ठ 144.

भारत के पक्ष में नहीं रहा । अंग्रेज लोगों ने दस्तक का भी गलत प्रयोग किया । उन्होंने उसे भारतीयों को सौंपकर व्यापार व राजस्व को हानि पहुँचायी । अंग्रेजों द्वारा भारतीय कारीगरों को एक निश्चित् समय पर अच्छा व सस्ता वस्त्र तैयार करने के लिये वाध्य करते थे और यदि कारीगर उनकी माँग को समय से पूर्व पूरा नहीं कर पाते तो उनके हाथ के अंगूठे काट लिये जाते थे । अतः हजारों पैतृक कारीगरों ने यह व्यापार छोड़कर मजदूरी करने लगे । जिससे वस्त्र तथा अन्य छोटे-छोटे उद्योग पूर्णतः समाप्त हो गये ।

डलहौजी द्वारा 1854 में भारत में रेल-लाइन डालने का उद्देश्य भारत का विकास न करके, उसका प्रमुख उद्देश्य भारत का आर्थिक शोषण करना था जिसमें वह पूर्णतः सफल रहे । मुख्यतः सभी गवर्नर जनरलों की नीति भारत की आर्थिक शोषण था । उन्हें पूर्ण विकेन्द्रीकरण की नीति अपनायी एवं स्वतन्त्र व्यापार की नीति को भारत में लागू किया जिससे भारत का बड़ी मात्रा में आर्थिक शोषण हुआ ।

लार्ड लिटन ने 1876 में स्वतन्त्र व्यापार की नीति को अपनाया । उसने इंगलेण्ड से आने वाले माल पर कम कर लगाये जिसके कारण भारत का व्यापार नष्ट हो गया ।

तथा भारत ले जाने वाले माल पर अधिक कर लगाये जिसका भारत के व्यापार पर बहुत ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ा । अन्य छोटे-छोटे उद्योगों पर भी अंग्रेज सरकार ने दमनात्मक रवैया अपनाया जिसके कारण भारत का किसान वर्ग मजदूरों की श्रेणी में आ गया । उसका व्यापार पूर्ण नष्ट हो गया एवं देश में बेरोजगारी, भुखमरी व लूट-मार को जन्म दिया जिसका पूर्ण दायित्व विदेशी अंग्रेजी सरकार पर था ।

§3§ अंग्रेजों की दमन-नीति :

ब्रिटिश शासकों ने 1757 की दमन नीति स्थानीय उद्योग धन्धों को समाप्त करने के लिये अपनायी थी, वह समस्त भारत में लागू करना प्रारम्भ करदी अर्थात् ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं का स्थानीय व्यापारियों पर लादना एवं देश में निर्मित वस्तुओं को समाप्त करना, इस व्यापार उद्योगों में बहुत कमी हो गयी ।[1]

------:0:------

1- जोशी ई० बी०, पृष्ठ 144.

अध्याय - पंचम

जनता द्वारा उठायी गयी। अन्य आर्थिक कठिनाइयों का इतिहास

अध्याय - 5

जनता द्वारा उठाई गयी। अन्य,
आर्थिक कठिनाइयों का इतिहास

भारत वर्ष का यह मध्यवर्ती भू-भाग, जो बुन्देलखण्ड कहलाता है, एक खुशहाल एवं कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है । यहाँ के निवासी शान्तिप्रिय एवं मेहनती रहे हैं, परन्तु समय-समय पर यहाँ के निवासियों को अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा जिनमें कुछ दैवी और कुछ राजनैतिक हैं ।

इस भू-भाग पर सत्ता के लिये अनेक संघर्ष हुए । चौहानों, मुस्लिमों, मराठों एवं ब्रिटिश शासकों के अनेक आक्रमण हुए । इन आक्रमणों का प्रभाव यहाँ के नागरिकों एवं यहाँ की अर्थ-व्यवस्था पर पड़ा ।

उपरोक्त आक्रमणों के अतिरिक्त यहाँ के निवासियों को अनेक दैवी प्रकोप का भी सामना करना पड़ा । जैसे- अकाल, बाढ़ एवं विषयुक्त घास "काँस" को अनावश्यक उपज ।

झाँसी एवं ललितपुर जनपदों में मुख्य रूप से अकाल एवं विषयुक्त फसल "काँस" के रूप में दैवी विपत्तियाँ जो समय-समय पर आयीं जिससे यहाँ की अर्थव्यवस्था एवं जनजीवन काफी प्रभावित हुआ ।

-----:0:-----

अध्याय - 5

खण्ड - अ

महादुर्भिक्ष का प्रकोप

भारतीय कृषि के लिये एक कहावत कही गयी है - "वर्षा का जुआ।" यह कहावत जिला ललितपुर की खेती के ऊपर भी सही उतरती है अर्थात् यहाँ की खेती-बारी पूर्णरूप से वर्षा पर आधारित है। समयानुसार अगर वर्षा हुयी तो फसल अच्छी होगी, नहीं तो सूखा। क्योंकि यहाँ पर अन्य कोई सिंचाई का साधन उपलब्ध नहीं है।[1]

इस वर्षा की कमी के कारण यहाँ पर समय-समय पर अनेक अकाल पड़े जिससे इस जनपद की आर्थिक व्यवस्था ही प्रभावित नहीं हुयी, वरन् यहाँ के जनजीवन को भी अस्त-व्यस्त कर दिया था। इस क्षेत्र में 1783, 1833, 1837 एवं 1847-48 में पड़े अकाल ने यहाँ के जनजीवन को बहुत प्रभावित किया था।

1- ड्रेक ब्रोक मैन डी० एल०, पृष्ठ 61.

सन् 1733 का अकाल इतना भयंकर एवं विनाशकारी था जिसकी याद यहाँ के लोगों को काफी समय तक बनी रही, जिसे "चालीसा" कह कर पुकारा जाता रहा ।[1]

1857 के संघर्ष के बाद 1868-69 में फिर अकाल का सामना करना पड़ा, यह भी बहुत भयंकर अकाल था ।[2] क्षेत्रीय नागरिक इसे "पच्चीसा" कह कर पुकारते हैं, क्योंकि यह संवत् वर्ष 1925 में पड़ा था ।[3] एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार प्रत्येक पाँच साल बाद बुन्देलखण्ड में अकाल की छाया मंडराती है ।[4]

संवत् 1925 का विनाशकारी अकाल "पच्चीसा"

सम्भवतः संवत् 1925 के नाम पर ही इस भयंकर अकाल का नाम पच्चीसा पड़ गया । इस विनाशकारी अकाल का वर्णन एक ब्रिटिश अधिकारी "हेन्वे" ने बड़े ही रोमांचक शब्दों में किया है । उसकी सूचना के अनुसार वर्षा, प्रारम्भिक वर्षा ऋतु में भी

1- बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, दीवानसिंह प्रतिपाल, पृष्ठ 101.

2- श्रीवास्तव एच0एस0, फेमीन एण्ड फेमीन पोलिसी आफ द गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया, पृष्ठ 94.

3- बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, दीवानसिंह प्रतिपाल, पृष्ठ 253.

4- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 253.

30 इंच से 40 इंच तक हुयी थी । 1867 में 30 इंच; 1869 में 46 इंच; वर्षा हुयी थी ।[1] इस प्रकार अधिक वर्षा के कारण चारों ओर बाढ़ की विनाशकारी लीला प्रारम्भ हो गयी । मार्च के माह में अचानक बारिश आरम्भ हो गयी जो कि खेतों में खड़ी फसल को नष्ट कर गयी । 1869 में शरद् ऋतु में ही तेज वर्षा आरम्भ हो जाने के कारण चारों ओर की भूमि जल-मग्न हो गयी । 1869 के जुलाई के अन्तिम सप्ताह में लगातार 6 घन्टे वर्षा होती रही जो लगभग 15 इंच थी । इस वर्षा से इस क्षेत्र की सड़कें पानी के तेज बहाव से कटकर बह गयीं और पुल टूट गये।[2]

इस प्रकार 1867 की कम वर्षा के कारण (जो लगभग 30 इंच थी) सूखे की स्थिति उत्पन्न हुयी । 1868-69 की तेज वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी । 1868 की खरीफ की फसल लगभग बरबाद हो गयी और 1869 की रबी की फसल भी लगभग आधी नष्ट हो गयी ।[3]

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 254.

2- वही.

3- वही.

अकाल का जनजीवन पर प्रभाव :

1868-69 के इस विनाशकारी अकाल से जो कि सूखे के रूप से प्रारम्भ होकर, बाढ़; अन्त में महामारी में परिवर्तित हो गया । खरीफ और रबी की फसल के नष्ट होने के कारण लोगों में असन्तोष फैल गया था । उस पर भी चारों ओर से संक्रामक रोगों का आक्रमण होने लगा । 1869 के प्रथम 6 माह में चेचक रोग चारों ओर फैल गया ।[1] तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर के अनुसार -"जनता में बहुत असन्तोष फैल गया था, वे बड़े खिन्न हुये और परेशान थे । अन्न की कमी के कारण भूख एवं प्यास से बहुत कमजोर हो गये थे । अनेक लोग भूख-प्यास से मर गये ।[2] 1869 की वर्षा ऋतु में हैजे रोग का प्रकोप हो गया इसके अतिरिक्त मलेरिया-बुखार भी चारों ओर फैल गया । 1869 में लगभग 20,331 लोग मलेरिया-रोग से काल के ग्रास में समा गये ।[3] इस पच्चीसा अकाल से ललितपुर जनपद की स्थिति दिनोंदिन खराब होती चली गयी । हेन्वे के अनुसार "लगभग समस्त ललितपुर जनपद अकाल की लपेट में था, परन्तु परगना ताल-बेहट, बाँसी एवं बानपुर की स्थिति बहुत खराब थी ।[4] 1869 में

1- एटकिन्सन ई0 टी0 ﴾कुटेड﴿, पृष्ठ 254.

2- वही; पृष्ठ 253-254.

3- वही.,

4- वही; पृष्ठ 318.

इस जनपद में हैजे का प्रकोप, जून माह से हो गया था ।[1]

1872-73 में अकाल का प्रभाव :

1868-69 ई0 की विनाशकारी पीड़ा को लोग भुला भी नहीं पाये थे, कि 1872-73 ई0 में फिर अकाल की छाया मंडराने लगी;[2] परन्तु इस अकाल का प्रभाव कठोर अथवा विनाशकारी नहीं था । वर्षा औसत से कुछ कम हुयी थी जिससे अकाल की आशंका टल गयी थी ।[3]

1877-78 में अकाल का प्रभाव :

1872-73 ई0 की तरह 1877-78 में भी कम वर्षा के कारण एक बार फिर ललितपुर जनपद में अकाल की आशंका बल पकड़ने लगी थी, परन्तु अक्टूबर-नवम्बर की अच्छी बारिश ने इस स्थिति को समाप्त कर दिया ।[4]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0 एल0, पृष्ठ 63.

2- वही.

3- वही.

4- वही.

1895-96 का अकाल :

1894-95 में अकाल की स्थिति फिर उत्पन्न हो गयी थी । अति वर्षा के कारण खरीफ की फसल लगभग नष्ट हो गयी और रबी की बुआयी भी समयानुसार नहीं हो पायी ।[1] भारी वर्षा के कारण चारों ओर अनावश्यक घास अथवा वनस्पति उग आयी जिसमें विषयुक्त घास "काँस" प्रमुख थी ।[2] फसल अच्छी नहीं होने पर बाजार भाव लगातार ऊँचे होते गये । जिला ललितपुर का दक्षिणी भाग इस अकाल से अधिक प्रभावित हुआ ।[3] यद्यपि यह अकाल 1868-69 ई० की तरह लम्बा एवं भयंकर नहीं था, परन्तु गरीब जनता इससे काफी प्रभावित हुयी ।

1896-97 ई० का अकाल :

1896-97 का अकाल अन्य वर्षों के अकाल से हट कर था । वर्षा ऋतु के प्रारम्भ के महीनों में अर्थात् जून, जुलाई, अगस्त में अच्छी वर्षा हुयी, परन्तु इसके बाद एकदम समाप्त हो गयी[4] जिससे खरीफ की फसल को काफी हानी हो गयी । अनाज की एक बार फिर

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी० एल०, पृष्ठ 63.
2- वही; पृष्ठ 63-64.
3- वही.
4- प्रोसिडिंग रिपोर्ट, जनवरी 1897. इंटेली० रिफा० 1-91 ए.

कमी हो गयी ।[1] इस क्षेत्र के एक काफी बड़े भाग पर खरीफ की फसल होती थी । खरीफ की फसल नष्ट होने से भारी आर्थिक नुकसान इस क्षेत्र को उठाना पड़ा । इस अकाल का असर न केवल जनता पर पड़ा, वरन् जानवरों अथवा घरेलू पशुओं को भी इस अकाल के कोप का भाजन बनना पड़ा, क्योंकि चारे की एकदम कमी हो गयी ।[2] वर्षा की कमी के कारण रबी की बुआयी पर भी बुरा असर पड़ा । बाजार-भाव ऊँचे हो गये । सितम्बर माह में गेहूँ का भाव 9 सेर 4 छटांक एवं चना 11 सेर 6 छटांक प्रति रुपया हो गया ।[3]

अन्य प्रकोप :

अकाल के अतिरिक्त अन्य दैवी प्रकोप जो यन्त्र की कृषि पर आधारित थे जिससे अकाल जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती थी, जो समय-समय पर आते रहे । जैसे- फसल में फफूँद लगना तथा अन्य कृषि रोग, ओलावृष्टि एवं पाला आदि प्रमुख हैं ।[4]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी० एल०, पृष्ठ 63-64.

2- वही.

3- वही.

4- वही.

1894-95 में इस जिले के काफी बड़े क्षेत्र में रबी की बुआयी के बाद पौधों में फफूँद लग गयी थी, इसी वर्ष जनपद ललितपुर में ओलावृष्टि एवं पाले से भी खेती को काफी नुकसान पहुँचा था ।[1] एक अन्य तथ्य यह है कि जनपद में प्राकृतिक आपदाओं जैसे- अकाल, बाढ़, सूखा, ओलावृष्टि, काँस घास के कारण न केवल भूमि की उर्बरा शक्ति ही नष्ट हुई, बल्कि इससे लोगों को आर्थिक परेशानी तथा गरीबी का सामना भी करना पड़ा ।[2] उन दिनों कृषि ही जीविका का मुख्य साधन था । अत: अकाल पड़ जाने के कारण जो क्षति होती थी उसे पूरा करना सम्भव नहीं था । फलत: किसानों को कर्ज लेना पड़ा और उन्हें अपनी भूमि ऋणदाताओं को बेच देनी पड़ी ।[3] यद्यपि अंग्रेजी सरकार ने समय-समय पर कुछ सहायता देने का प्रयास किया, किन्तु अंग्रेजों द्वारा अपनाये गये ये तरीके न तो सामयिक थे, और न ही पर्याप्त थे ।[4] इसके अतिरिक्त बुन्देलखण्ड की रियासतों के कुछ राजाओं ने भी 1857 के विद्रोह में व्याप्त अराजकता का लाभ लेने के लिये अपने समीप के क्षेत्रों में कृषकों से बलपूर्वक कर वसूल किये ।[5] सबसे आश्चर्य

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी० एल०, पृष्ठ 63-64.

2- पाठक एस०पी०, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 67.

3- वही.

4- वही.

5- इम्पे डब्लू०एच०एल० तथा मेस्टन जे०एस०, झाँसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट इलाहाबाद 1892, पृष्ठ 56.

की बात तो यह थी कि शान्ति व्यवस्था की स्थापना हो जाने के बाद ब्रिटिश सरकार ने उन्हीं क्षेत्रों में कर वसूल किये। निःसन्देह इन सब घटनाओं ने इस क्षेत्र की जनता को आर्थिक उत्पीड़न की कगार पर खड़ा कर दिया । इसके साथ ही पशुओं के लिये चारे की भी कमी हुई । पानी के अभाव में रबी की बुवाई भी कम हुई । इससे खाद्यान्न की पैदावार कम हुई । अकाल के अलावा अन्य प्राकृतिक आपदायें जैसे-टिड्डी, पाला, गेरू आदि भी समय-समय पर कृषि व्यवस्था को प्रभावित करती रही । 1894-95 में ललितपुर में ओला पड़ जाने के कारण फसल को काफी नुकसान पहुँचा ।

सरकार द्वारा अकाल-पीड़ितों की सहायता के उपाय :

ब्रिटिश शासनकाल में अकाल से पीड़ित लोगों को सहायता देने के लिये कुछ नाममात्र के राहत कार्य किये गये ।[1] क्षेत्र में एक सहायता समिति बनाई गयी जिसमें कुछ स्थानीय लोगों के अलावा सैनिक तथा राजस्व विभाग के अधिकारी थे ।[2] 1868 में ग्वालियर रियासत ने भी इस क्षेत्र की कुछ रुपयों से मदद की ।[3] सस्ते दर पर अकाल-पीड़ितों के श्रम को

1- पाठक एस०पी०, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 72.
2- वही.
3- एटकिन्सन ई०टी०, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 255.

प्राप्तकर सड़कों तथा पुलों का निर्माण कराया गया । इसी समय सिंचाई के लिये परगने में बाँध बनाये गये । इन कार्यों में काफी लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ ।[1]

राजस्व की वसूली स्थगित कर दी गयी तथा कुँए, ट्यूबवैल इत्यादि बनाने के लिये तकावी तथा ऋणों का वितरण किया गया ।[2] ललितपुर जनपद के अन्य क्षेत्रों जैसे-तालबेहट, बाँसी, बानपुर, महरौनी तथा जाखलौन में सहायता के केन्द्र खोले गये ।[3] ऐसी ही व्यवस्था अन्य क्षेत्रों में भी की गयी । उदाहरण के लिये 1868-69 के अकालों से निपटने के लिये सरकार ने सहायता-कार्य के लिये 10 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की ।[4] उसके पीछे उद्देश्य, अकाल द्वारा हुयी क्षति को कम करना था । इस जनपद में लगभग 11 हजार लोगों को सहायता देने के लिये अस्थायी श्रम लेने के उद्देश्य से नियुक्त किया गया ।[5] 1895-96 में सार्वजनिक निर्माण-विभाग में अकाल-पीड़ितों को काम के बदले वेतन देने का

1- एटकिन्सन ई0टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 255.

2- पाठक एस0पी0, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 73.

3- एटकिन्सन ई0 टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 319.

4- भाटिया बी0 एम0, फेमिन्स इन इण्डिया, पृष्ठ 118 तथा
एटकिन्सन ई0 टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 71-72.

5- ड्रेक ब्रोकमैन, डी0 एल0, पृष्ठ 65.

प्रबन्ध किया, किन्तु यह सहायता 758 रुपये खर्च हो जाने के बाद बन्द कर दी गयी ।[1] 1897 के अकाल में भी लोगों को कुछ सहायता दी गयी ।[2]

प्रश्न यह उठता है कि क्या सरकार द्वारा प्रदान किये गये ये तरीके बुन्देलखण्ड के सामाजिक व आर्थिक रूप में पिछड़े हुए, इलाकों का स्थायी हल निकालने के लिये सक्षम थे ? यह देखते हुये जब इस क्षेत्र में अकाल तथा अन्य प्राकृतिक आपदाएं निरन्तर पड़ रही थीं तो क्या इन सहायता कार्यों से निदान कुछ सम्भव था ? सरकार द्वारा दी गई सहायता की विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि केवल अस्थायी तौर पर ये राहत-कार्य प्रदान किये गये । इस क्षेत्र को भविष्य में अकाल से बचाने के लिये कुछ निश्चित् स्थायी कार्यक्रम की आवश्यकता थी, वह नहीं अपनाई जा सकी । सिंचाई की सुविधा से इस समस्या का कुछ हल हो सकता था, लेकिन सरकार का इस ओर ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ ।[3] यदि जनपद में तथा बुन्देलखण्ड में सिंचाई का उचित बन्दोवस्त रहा होता तो यह निश्चित् था कि निरन्तर पड़ने वाले अकाल से हो रही क्षति को कुछ कम किया जा सकता था ।[4]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी० एल०, पृष्ठ 65, तथा इम्पीरियल गजेटियर्स आफ इण्डिया, कलकत्ता 1908, पृष्ठ 36.

2- वही.

3- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, पृष्ठ 69.

4- पाठक एस०पी०, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 74.

उपरोक्त अकाल के दूरगामी परिणाम निकले । इससे कृषकों के मस्तिष्क में अनिश्चितता पैदा हुई । अधिकांश लोगों ने अपने क्षेत्रों को छोड़,मालवा तथा अन्य क्षेत्रों में शरण ली ।[1] सरकारी सहायता से कोई विशेष मदद नहीं मिली और यह देखा गया कि न तो लोग जानवर ही रख सके,और न ही कुंए की मरम्मत करायी जा सकी । फलत:अधिकांश खेतों में कोई खेती करने वाला नहीं था । जनपद ललितपुर पूरे बुन्देलखण्ड में सबसे अधिक प्रभावित रहा । एटकिन्सन ने लिखा है कि "इस जिले में खेती योग्य अधिकांश भूमि खाली पड़ी है,किन्तु व्यक्ति तथा जानवरों की कमी के कारण खेती नहीं हो पा रही है[2]" इन अकालों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह हुआ कि लोग खेती को जुआ समझ बैठे । इससे उसकी ओर झुकाव कम हो गया ।[3]

अकालों का एक महत्वपूर्ण कारण सिंचाई-सुविधाओं का अभाव :

अंग्रेजी शासनकाल में न केवल ललितपुर जनपद में बल्कि पूरे बुन्देलखण्ड में सिंचाई की सुविधाओं का समुचित विकास नहीं किया जा सका । इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि सरकार

1- एटकिन्सन ई0 टी0, बुन्देलखण्ड गजेटियर, पृष्ठ 320•

2- पाठक एस0पी0,झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 74•

3- वही•

ने 1862 में बुन्देलखण्ड में सिंचाई विभाग का उन्मूलन कर दिया ।[1] इससे पहले चन्देलों तथा बुन्देलाओं के शासनकाल में बुन्देलखण्ड में सिंचाई के समुचित साधन उपलब्ध थे । 1825 में कैप्टन फ्रैंकलिन ने अपने संस्मरण में लिखा था कि-"बुन्देला राजाओं ने इस क्षेत्र में सिंचाई के साधन के विकास के लिये काफी धन खर्च किया था ।"[2] मराठाकाल में भी सिंचाई के समुचित साधन इस क्षेत्र में विद्यमान थे, लेकिन अंग्रेजी शासनकाल में इस ओर ध्यान नहीं दिया गया । जेनकिन्सन ने 1864 में लिखा था कि"कृषकों को सिंचाई की सुविधाओं के विकास के लिये सरकारी सहायता तथा ऋण प्रदान किये जाने चाहिये । उसने पहले से ही चले आ रहे तालाबों तथा नहरों की मरम्मत कराने के लिये भी सरकार का ध्यान आकृष्ट किया ताकि कृषकों को राहत पहुँच सके । जेनकिन्सन ने जनपद के तालाबों, कुंओं, झीलों आदि की सूची बनाते हुए यह आशा व्यक्त की थी[3] कि इनका पुन:निर्माण किया जाना चाहिये, लेकिन आश्चर्य का विषय है कि सरकार ने इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया ।

1- इम्पे डब्लू0एच0एल0 तथा मेस्टन जे0एस0; झाँसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1892, पृष्ठ 70.
2- मैमायर्स आन बुन्देलखण्ड, 21 मई 1825, पृष्ठ 274.
3- जेनकिन्सन ई0जी0, झाँसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1871, पृष्ठ 71-72.

लगातार पड़ रहे अकालों से सरकार की निगाहें खुलीं । 1868-69 में जेनकिन्सन की रिपोर्ट पर सरकार ने ध्यान दिया ।[1] अत:पुराने तालाबों तथा नहरों के पुन:निर्माण की ओर भी ध्यान दिया गया ।

यह उल्लेखनीय है कि वर्षा ऋतु में इस क्षेत्र में जो पानी बर्बाद हो रहा था उसी को इकट्ठा करके सिंचाई के लिये उपयोग किया जाय तो इससे सरकार को लगभग 4 लाख रुपये केवल पानी की बिक्री के रूप में ही प्राप्त होते । कर्नल स्मिथ ने भी इसी प्रकार का आंकलन किया था ।[2]

इन तमाम सुझावों के बावजूद भी जनपद में सिंचाई का समुचित विकास नहीं किया जा सका । जनपद में बेतवा नहर के निर्माण का सुझाव जो 1855 में दिया गया था उसकी योजना 1881 से पहले स्वीकृत नहीं हो सकी ।[3] इसका उद्देश्य था कि इस क्षेत्र में पड़ रहे लगातार अकालों से गाँवों को राहत पहुँचाई जा सके ।[4] चूँकि सरकार की नीति अधिक लागत वाली योजनाओं

1- पाठक एस0पी0, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 80.

2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झाँसी गजेटियर, इलाहाबाद 1909, पृ0 54.

3- वही; पृष्ठ 59.

4- वही.

को क्रियान्वित न करने की थी । अतः इस योजना को काट-छाँट के बाद काफी समयके पश्चात् लागू किया गया और 1896-97 से पहले इसका कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ ।[1] इस प्रकार की सिंचाई सुविधाओं के अभाव के कारण जनपद को तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र की कृषि-सुविधाओं को गहरा आघात पहुँचा । अंग्रेजों की इस नीति के कारण यह क्षेत्र ही नहीं, बल्कि सभी जगह सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़ापन स्थिति का शिकार रहा । यहाँ की कृषि, लघु उद्योग धन्धों के विनाश के कारण भी गरीबी निरन्तर बढ़ती गयी जिसका दायित्व अंग्रेज सरकार के ऊपर अधिक आता था ।

------:0:------

1- ड्रेक ब्रोकमेन डी0एल0, झाँसी गजेटियर, इलाहाबाद 1909, पृष्ठ 59.

खण्ड - ब

जनपद में बाढ़ आपदायें

जनपद ललितपुर की मुख्य बड़ी नदी बेतवा है जो वर्षभर बहती है,परन्तु यह मुख्य रूप से ललितपुर की पश्चिमी सीमा पर बहती है । जनपद के अन्दर छोटी बरसाती नदियाँ प्रमुख रूप से बहती हैं,इनमें कुछ के नाम हैं - शहजाद,सनजाम एवं जामनी । यह नदियाँ अधिक वर्षा के कारण बारिस में विकराल रूप धारण कर लेती हैं जिससे आसपास के ग्रामों में बाढ़ का प्रकोप हो जाता है । बेतवा नदी मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में ही उफान पर आती है । अति वर्षा से इसमें भी बाढ़ आ जाती है ।

ललितपुर जनपद में बाढ़ का प्रकोप 1868-69 में प्रमुख रूप से हुआ था जिसने अकाल का रूप ले लिया था । अति वर्षा (जो लगभग 46 इंच[1] से भी ऊपर थी) ने चारों ओर बाढ़ की तबाही एवं बर्बादी फैला दी थी । समस्त फसल नष्ट हो गयी थी । सड़कें एवं पुल बह गये थे[2] एवं महामारी फैल गयी थी ।[3] इस बार सरकार को काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ी थी ।[4]

1- एटकिन्सन ई0 टी0,पृष्ठ 254.
2- वही.
3- वही.
4- इम्पे व मेस्टन, पृष्ठ 2.

------:0:------

खण्ड - स

काँश का उदय

1892 में इलाहाबाद प्रखण्ड के कमिश्नर राइट ने एक टिप्पणी में लिखा था कि "कोई भी व्यक्ति बुन्देलखण्ड के बारे में तब तक नहीं बोल सकता जबतक कि वहाँ की काँश घास से उत्पन्न असन्तोष को न समझ ले ।[1] वास्तव में न केवल ललितपुर जनपद में बल्कि सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के आर्थिक पिछड़ापन के लिये काँश घास की उपज एक महत्वपूर्ण कारण था । इससे भूमि की उर्बरा शक्ति नष्ट हो जाती थी । तथा कृषकों में अराजकता व्याप्त होती थी । यह काँश घास लम्बी होती थी जो जुताई के अभाव में खेतों में उग आती थी । इसकी जड़ें काफी गहराई में चली जाती थीं और इस प्रकार हल चलाने में बाधा उत्पन्न करती थी ।[2] 10 तथा 15 वर्षों के बाद इसकी जड़ों से दूसरी घास निकल आती थी और तभी वह भूमि जोतने योग्य हो सकती थी ।[3]

1- इम्पे डब्लू0एच0एल0 तथा मेस्टन जे0एस0, झाँसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट इलाहाबाद 1892, पृष्ठ 56.

2- वही.

3- पाठक एस0पी0, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 75.

झाँसी के डिप्टी कमिश्नर जेनकिन्सन ने 1871 में इस घास के उग आने के कारण कृषकों को व्यापक हानि का विस्तृत वर्णन किया है ।[1] जनपद के कई क्षेत्रों में इस घास से जमीन काफी प्रभावित हुई । इससे कृषकों में इतनी अराजकता की स्थिति पैदा हुई कि वे वापस होकर क्षेत्र खाली कर गये और इस क्षेत्र का प्रबन्ध अंग्रेज सरकार को लेना पड़ा ।[2] सम्भवतः अत्यधिक वर्षा इस घास के उत्पन्न होने की कारण थी ।

काँश के अतिरिक्त इस क्षेत्र में भूमि कटाव भी बराबर होते रहे हैं जिससे भूमि की उर्बरा शक्ति नष्ट होती रही है । यही कारण था कि इस क्षेत्र में विशेषतः ब्रिटिश शासनकाल में अच्छी खेती नहीं की जा सकी । झाँसी के बन्दोवस्त अधिकारी ने लिखा था कि 1864 से पहले इस क्षेत्र में अच्छी खेती होती थी, किन्तु लगातार भूमि के कटाव के कारण कुछ गाँवों की उर्बरा शक्ति नष्ट होती गयी । फलतः 1892 तक आते-आते ये गाँव खेती की दृष्टि से बेकार साबित हुए ।[3] झाँसी क्षेत्र की गरौठा तहसील जहाँ अच्छी खेती होती थी, वह भी कटाव के कारण काफी कम हो गयी ।[4] ललितपुर जनपद में यद्यपि बेतवा ने अधिक

1- ड्रेक ब्रौकमैन डी0एल0, झाँसी गजेटियर 1909, पृष्ठ 96.

2- कैन्डिल ए सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1881, पृष्ठ 6.

3- इम्पे डब्लू0एच0एल0 तथा मेस्टन जे0एस0, झाँसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1892, पृष्ठ 10.

4- वही.

कटाव पैदा नहीं किया, किन्तु सहजाद बाँध, सजनम बाँध तथा जामिनी नदियों ने पर्याप्त भूमि का कटाव किया ।[1] सरकार की ओर से इन कटावों को रोकने के लिये अल्प प्रयास किये गये । कुछ बाँधों की योजनाएं भी बनाई गयीं, किन्तु अत्यधिक रूपया खर्च होने की सम्भावनाओं के कारण सरकार ने यह प्रयास छोड़ दिये ।[2]

अत: अकाल तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं व काँश के उदगम् व कटाव से क्षेत्र की कृषि व्यवस्था अवश्य प्रभावित होती रही । इस क्षेत्र में दैवी विपत्तियों में एक प्रकोप "काँस" की अनावश्यक उपज थी, जो समय-समय पर समस्त खेतीहर भूमि पर उग आती थी । काँस, घास जाति की एक उपज थी इसके उग आने से खेतिहर भूमि की उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती थी ।[3]

काँस एक लम्बी एवं पतली घास होती थी जो बहुत तेजी से बढ़ती और चारों ओर फैलती थी । समस्त खेतीहर भूमि को बेकार कर देती थी । इसकी लम्बाई 6-7 फुट होती थी । यह जिस खेत में उग आती थी उसमें लगी हुई फसल की बढ़त रूक जाती थी एवं यह फसल को दबा देती थी ।[4]

1- पिम ए0डब्लू0, फाइनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट आफ झाँसी, इलाहाबाद 1907, पृष्ठ 3.

2- वही.

3- इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, भाग-1, पृष्ठ 91.

4- वही.

अधिक वर्षा में इस कांस घास की उपज अधिक होती थी । जिस समय औसत से अधिक वर्षा होती थी, यह समस्त खेतों में उग आती एवं फसल के स्थान पर कांस ही कांस दिखलाई देती थी । 1868-69 की वर्षा में जो अकाल पड़ा था उसका कारण अधिक वर्षा थी । इस वर्ष फसल को नष्ट करने में कांस का भी योगदान था । यह अधिक वर्षा के कारण चारों ओर फैल गयी थी । 1872 ई० में यह केवल झांसी में 40,000 एकड़ में फैल गयी थी ।[1] 1874 में स्थानीय अधिकारियों द्वारा कर वसूली एवं लगान वसूली के समय, सूखे एवं कांस की उपज के कारण, कर-निर्धारण करते समय सरकार से लगान एवं कर में छूट अथवा कमी के लिये दबाव डाला गया था । 1874 में सरकार ने लगान वसूलीमें काफी नरमी बरती थी ।[2]

कांस घास की एक विशेषता यह भी थी कि सूखने पर जड़ से उखाड़ने पर नष्ट नहीं होती थी । यह 10,15 वर्ष के बाद फिर उग आती थी ।[3] 1877 के सूखा में यह नष्ट हो गयी थी, परन्तु पूर्णरूप से नष्ट नहीं हुई थी । 1896-97 के अकाल के समय यह झांसी जनपद एवं सब डिवीजन ललितपुर में फिर, उग आयी थी ।

1- ड्रेक ब्रोकमेन डी० एल०, पृष्ठ140.

2- इम्पे डब्लू०एच०एल० एण्ड मेस्टन जे०एस०, पृष्ठ 56.

3- इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, भाग-1, पृष्ठ 118.

इस क्षेत्र के अलग-अलग बड़े भागों में यह फैल गयी थी । इससे अकाल जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी । इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति पर काफी असर डाला था ।

कांस द्वारा सरकार को आर्थिक क्षति :

स्थानीय अधिकारियों की सूचना एवं अनुरोध पर सरकार ने 1874 में लगान करों में काफी छूट दे दी थी, क्योंकि कांस ने अधिकतर खेती को नष्ट कर दिया था ।[1] 1892 के द्वितीय सेटिलमेन्ट के समय झांसी जनपद एवं ललितपुर सब डिवीजन के सेटिलमेन्ट अधिकारी के सामने दो मुख्य समस्याएं थीं जो उनके लिये परेशानी का कारण बनी थी । प्रथम- यहां के जमीदारों का ऋण, एवं द्वितीय- कांस की अनावश्यक पैदावार । प्राचीन समय से कांस, जमीदारों की आर्थिक स्थिति को हानि पहुँचाती आयी थी ।[2] कांस की इस बर्बादी से सरकार को लगभग 6 लाख रुपये की हानि प्रथम सेटिलमेन्ट के समय उठानी पड़ी थी ।[3]

1- इम्पे डब्लू0एच0एल0 एण्ड मेस्टन जे0एल0, पृष्ठ 56.

2- वही.

3- इम्पे डब्लू0एच0एल0 एण्ड मेस्टन जे0एस0, (फारवर्ड नोट पर एफ0एन0 राईट द्वारा) पृष्ठ 2.

निःसन्देह जमींदारों की आर्थिक स्थिति कांस घास के प्रकोप के कारण ही खराब हुई । इस कांस घास से खेतों को क्षति हुई जिससे केवल झांसी जिले में ही सरकार को 6 लाख रूपये के राजस्व की हानि हुई । आगे आने वाले वर्षों में भी कांस ने इस क्षेत्र की कृषि व्यवस्था को प्रभावित तथा क्षतिग्रस्त किया ।

अकाल समाप्त करने के लिये उठाये गये कदम :

राजस्व की भारी हानि के कारण ब्रिटिश सरकार ने "कांस" रूपी विपत्ति से निपटने के लिये अनेक उपाय किये । एक अंग्रेज अधिकारी डब्लू०ई०नीले ने इसके नष्ट करने के निम्नलिखित उपाय बताये :-

(1) यह कि इसको जलाकर नष्ट कर दिया जाय ।

(2) गहराई से खोद कर इसे नष्ट कर दिया जाय अथवा गहरी जुताई की जाय ।

(3) खेतों में खाद न डाली जाय एवं सिंचाई न की जाय ।[1]

उपरोक्त सब प्रकार के उपाय बुन्देलखण्ड क्षेत्र के समस्त जिलों में किये गये, परन्तु सफलता नहीं मिली ।[2] इसे जलाने का

1- हमीरपुर सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1880, पृ0 118 (पुनःप्रकाशित)

2- इम्मे डब्लू0एच0एल0 एण्ड मेस्टन जे0एस0, पृष्ठ 8.

प्रयोग सर्वप्रथम गरौठा तहसील में किया गया, परन्तु इसका परीक्षण करने पर पता चला कि नये अंकुरों के जलाने पर अगली साल यह दुगने और मजबूत स्थिति में फिर निकल आते थे ।[1]

जनपद सहारनपुर के वनस्पति अधीक्षक के अनुसार कांस वहां पर नहीं पाई जाती, जहां पर खाद आदि ठीक से डाली जाती है ।[2]

परन्तु उपरोक्त उपाय करने पर भी इस अनावश्यक विपत्ति से छुटकारा नहीं मिल पाया । इसका मुख्य कारण था उन दिनों खेती प्राचीन रीति से की जाती थी और जो खाद डाली जाती थी वह अच्छी एवं आधुनिक नहीं थी ।

1892 के द्वितीय सेटिलमेन्ट आफीसर के निरीक्षण के अनुसार यद्यपि कांस के फैलने का मुख्य रूप से मिट्टी की खराबी तो थी ही, परन्तु सदियों पूर्व चन्देलों के समय से सकरी घाटियों में खराब मिट्टी एवं जंगली वनस्पतियां उगना, जमा होना एवं सड़ना, फिर उसके ऊपर मिट्टी की परत जमना था । यह कार्य अनेक सालों से होता चला आ रहा था जिसमें

1- इम्पे डब्लू० एच० एल० एण्ड मेस्टन जे० एस०, पृष्ठ 131.

2- वही;

इस अनावश्यक काँस घास के बीज रहते थे ।[1] इस तरह की गहरी, सकरी घाटियाँ सब डिवीजन ललितपुर में बेतवा नदी के अतिरिक्त शहजाद, सनजाम एवं जामिनी नदियों के किनारे पर्याप्त मात्रा में पायी जाती थीं ।[2] सरकार ने इन घाटियों का निरीक्षण करवाकर इन सकरी घाटियों पर डैम अथवा बाँध के निर्माण करवाये ।[3]

-----:0:-----

1- इम्पे डब्लू० एच० एल० एण्ड मेस्टन जे० एस०, पृष्ठ 10.

2- पिम ए० डब्लू०, पृष्ठ 3

3- वही.

अध्याय -- षष्टम

अन्य प्राकृतिक आपदायें

अध्याय - 6

अन्य-प्राकृतिक आपदायें

खण्ड - अ

जमीदारों का ऋणग्रस्त होना

जनपद में समय-समय पर पड़ने वाली विपदाओं के कारण, जैसे अकाल, बाढ़, कांस की अनावश्यक उपज के कारण एवं सरकार की ओर से कृषि कार्य में उदासीनता के कारण किसान आर्थिक रूप से दिवालिया हो गये । वह लगान देने में असमर्थ रहे । लगान न मिलने के कारण स्थानीय जमीदार जो कि मराठों एवं पड़ोसी राज्यों जैसे- ओरछा, ग्वालियर स्टेट । इन राज्यों को स्थानीय जमीदारों को 1858 ई0 के पूर्व "चौथ" के रूप में एक अच्छी रकम देना पड़ती । चौथ न देने के कारण दिन पर दिन कर्ज में डूबने लगे । 1864 ई0 में तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर जेनकिन्सन के अनुसार कि यह बढ़ा हुआ लगान जो "चौथ" कहलाता था, मराठों द्वारा चलाया गया था ।[1] जेनकिन्सन के अनुसार 1857 ई0 की क्रान्ति के समय पड़ोसी राज्य ओरछा के द्वारा

1- जेनकिन्सन ई0जी0, रिपोर्ट आफ द सेटलमेन्ट आफ झांसी डिस्ट्र0 इलाहाबाद 1871, पृष्ठ 442.

बकाया लगान अविवेकपूर्ण तथा जबरन वसूला गया जिससे जनता में दरिद्रता फैल गयी एवं भू-स्वामी ऋण में डूब गये ।[1] ठीक इसके बाद 1858 ई0 में ब्रिटिश सरकार द्वारा फिर लगान की वसूली आरम्भ कर दी गयी, जबकि यहाँ के कृषक पहले से ही क्रान्ति के समय पड़ोसी राज्यों द्वारा पीड़ित किये गये थे । इन सबका नतीजा यह निकला कि जनपद में दरिद्रता[2] का बोलबाला हो गया, क्योंकि वह चारों ओर से लूटे गये थे, पहले जमींदारों द्वारा फिर ब्रिटिश सैनिकों द्वारा 1857 में जिस तरह वह अकाल एवं अन्य प्राकृतिक विपदाओं में बर्बाद हो गये थे ।

जमींदारों का ऋण-ग्रस्त होने का एक अन्य प्रमुख कारण अंग्रेजों की दमनात्मक नीति एवं 1857 के विद्रोह में जिन जमींदारों ने अंग्रेजों का विरोध किया था उनसे अंग्रेजों ने बदला लेने की नीति को अपनाया । यही प्रमुख कारण था कि अंग्रेजों ने यहाँ पर किसी प्रकार के विकास की योजनाओं को लागू नहीं किया । यहाँ की सिंचाई सुविधाओं के लिये अच्छी से अच्छी नीति को निर्धारण किया जाय, किन्तु अंग्रेजों के दमनात्मक रवैये के कारण वह सभी योजनायें क्रियान्वित न हो सकीं ।[3] और कहीं-कहीं पर यदि योजनाओं को लागू भी किया गया तो इतनी देर बाद कि उसका लागू करने

1- जेनकिन्सन ई0जी0, रिपोर्ट आफ द सेटलमेन्ट आफ झाँसी डिस्ट0 इलाहाबाद 1871, पृष्ठ 448.

2- पाठक एस0पी0, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 86

3- जेनकिन्सन ई0जी0, सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1871, पृ072.

का औचित्य ही समाप्त हो जाता था । उन योजनाओं के रूप को विस्तृत करने के बजाय, कम कर दिया जाता था । जब प्रकृति की दैवी शक्ति से यहाँ विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का उदय हुआ । जैसे फसलों में रोग लगना, अत्यधिक वर्षा का होना, ओला-वृष्टि का होना तथा तेज आँधी-तूफान से फसल का नुकशान आदि आदि । तब भी ब्रिटिश सरकार ने किसानों की किसी प्रकार से कोई मदद नहीं की और जैसे ही थोड़ी शान्ति कायम हुई, उन्होंने तुरन्त ही लगान को विधिवत् वसूल करना शुरू कर दिया ।[1] जिससे उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती चली गयी, जबकि विभिन्न आपदाओं के कारण पहले ही उनकी स्थिति खराब थी । इसको ब्रिटिश सरकार ने और बढ़ावा दिया । उसका परिणाम यह हुआ कि जमीदारों इत्यादि ने बड़ी-बड़ी रियासतों या राजाओं से ऋण लेना आरम्भ कर दिया जिससे एक बड़ा भाग ऋण के बोझ से दब गया और अधिकांशत: लोग आर्थिक दिवालिया हो गये । यही उसका एक प्रमुख कारण था जिससे यहाँ के जमीदारों को मजबूरन ऋणग्रस्त होना पड़ा ।

जमीदारों की ऋण-समस्या और उसका समाधान :

संयोगवश ब्रिटिश सरकार ने इस समस्या को काफी समय बाद समझा कि किस प्रकार छोटे जमीदार अपनी जमीन अथवा सम्पत्ति रहन रखकर भूमि क्रय-विक्रय साहूकारों के चंगुल में फंस

1- पाठक एस0पी0, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 87.

जाते हैं एवं ऋण में डूब कर परेशान रहते हैं, क्योंकि उनका सारा जीवन कर्ज अदा करने में निकल जाता था, कारण मूलधन से अधिक ब्याज हो जाता था जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी । सर्वप्रथम जेनकिन्सन तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर ने इस समस्या को समझा एवं इस क्षेत्र के जमीदारों को "सम्पत्ति-अधिकार" का अधिकार दिया ।[1] उसने सरकार को बताया कि सरकार तुरन्त इन भूमि रहन रखनेवालों के यहाँ इन ऋणों एवं पट्टों की जाँच राजकीय अधिकारियों द्वारा करायी जाये,[2] परन्तु सरकार ने इसकी स्वीकृति नहीं दी एवं न ही इस समस्या के प्रति कोई सावधानी बरती, जबकि इस मार्मिक समस्या का हल आवश्यक था । अन्त में 15 वर्षों के बाद सरकार ने डिप्टी कमिश्नर जेनकिन्सन के द्वारा की गयी समस्या समाधान के तरीके के महत्व को समझा, जबकि यह समस्या अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी ।

नवम्बर 1873 ई0 में अस्थायी कमिश्नर बी0कालविन द्वारा इसकी घोषणा की गयी कि 1869 के अकाल के पूर्व का राजस्व सम्पूर्ण लिया जाये अर्थात् 1864 ई0 के प्रथम सेटलमेन्ट का बाद का लिया गया राजस्व का आधा 5 वर्ष के लिये ऋण के रूप

1- जेनकिन्सन ई0 जी0, पृष्ठ 442.

2- वही; पृष्ठ 448.

में दिया जाय । जनपद का 28% राजस्व जो लगभग 7 लाख रुपये होता था, जिसमें कुछ सम्पत्ति रहन रखकर वसूल किया गया था ।[1]

फरवरी 1872 ई0 में लेफ्टीनेन्ट गवर्नर सर विलियम मूर, जब इस क्षेत्र में सरकारी दौरे पर आये तो इस समस्या का समाधान के लिये उनको बतलाया गया ।[2] वह इस समस्या से काफी प्रभावित हुये एवं इसके अनुबन्ध-पत्रों की जांच का तुरन्त आदेश दिया जिनमें जमीदारों ने लगान माफी का "अनुबन्धपत्र" भरे एवं सरकार को इस आदेश के परिणाम को अवगत कराने पर राजी हो गये ।[3] इसके परिणाम स्वरूप लेफ्टीनेन्ट गवर्नर बी-कालविन के निर्देश में एक जांच करा कर एक सूचना तैयार की गयी ।[4] मार्च 1874 ई0 में प्रान्तीय सरकार ने भी भारत सरकार को अनुबन्ध पत्रों की जांच कर रुकी हुयी भूमि को बेचने का प्रस्ताव भेजा गया ।[5]

1- इम्पे डब्लू0एच0एल0 एवं मेस्टन जे0एस0, रिपोर्ट आफ द सैकिण्ड सेटिलमेन्ट आफ झांसी {इन्क्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन} नार्थ-वेस्ट प्रोविन्स, इलाहाबाद 1882, पृष्ठ 55.

2- वही.

3- वही.

4- वही.

5- वही; पृष्ठ 56.

इस प्रकार सरकार के इस प्रस्ताव से जमींदारों को मदद अवश्य मिली । यद्यपि समस्या का पूर्ण तरीके से निदान तो नहीं हो सका, फिर भी यह समस्या निपटाने की सरकार को अभूतपूर्व कदम था । इससे छोटे-छोटे जमींदारों को अपनी जमीनें खोने से बचा लिया गया । एवं सरकार को ओर से उनको कुछ मदद को गयी एवं वरन् ऋणग्रस्त होने से बच गया ।

-----:0:-----

अध्याय - 6

खण्ड - ब

आर्थिक स्थिति का क्रमिक पतन

1857 ई0 को क्रांति में चारों ओर अस्थिरता बढ़ जाने से जनपद की कृषि एवं उद्योग धन्धों पर काफी असर पड़ा था । 1858 ई0 में ब्रिटिश शासन लागू होने पर कुछ सुधार की आशा बंधी थी । सरकार ने कृषि एवं लोगों की आर्थिक स्थिति सुधारने में कुछ कार्य करना प्रारम्भ किये थे, परन्तु 1868-69, 1895-96 एवं 1896-97 के आकालों ने जनपद की आर्थिक स्थिति को तोड़ कर रख दिया ।[1] इन अकालों में ललितपुर जनपद की स्थिति बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण रही । उस समय के अस्थायी कमिश्नर के अनुसार अकाल के समय अधिकतर लोग या तो मर गये थे या जनपद छोड़कर बाहर चले गये थे जिसके कारण अकाल के पश्चात् खेती के लिये भूमि तो बहुत थी, पर खेती करने के लिये मनुष्य और पशु नहीं थे ।[2]

1- बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, सिंह प्रतिपाल, पृष्ठ 101.

2- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 320.

अकाल के समय में अनावश्यक घास "कांस" ने भी अपनी उपज से समस्त खेतिहर भूमि को ढक लिया जिससे कृषि कार्य में रूकावट आने लगी तथा जनपद की कृषि लगभग समाप्त हो गयी । इस कांस की अनावश्यक फसल ने जमींदारों की आर्थिक स्थिति को खोखला कर दिया ।[1] प्रथम सेटिलमेन्ट के अनुसार इस कांस की उपज के कारण सरकार को 6 लाख रूपये के राजस्व की हानि उठानी पड़ी थी ।[2]

अकाल एवं कांस के अतिरिक्त 1869 के जून में अर्थात् वर्षा के प्रारम्भिक समय में हैजा (महामारी) रोग का फैलना भी एक प्रमुख कारण था , इस जनपद में आर्थिक अस्थिरता फैलाने में ।

उपरोक्त प्राकृतिक विपदाओं के अतिरिक्त इस जनपद में आर्थिक स्थिति को बिगाड़ने अथवा क्षय करने में सबसे बड़ा हाथ था ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीति का । अकाल एवं कांस की उपज के समय में सरकार ने युद्ध स्तर पर बचाव कार्य नहीं किया । सरकार ने सिंचाई आदि के साधनों की ओर ध्यान नहीं दिया जिससे कृषि उत्पादन में निरन्तर कमी आती गयी । स्थानीय एवं देशी उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन न देकर उन्हें नष्ट करने की

1- इम्पे डब्लू0एच0एल0 एवं मेस्टन जे0एस0, पृष्ठ 56.

2- वही; पृष्ठ 2.

नीति अपनायी । बाजार में, विदेशों में निर्मित वस्तुओं की भरमार हो गयी जिससे स्थानीय उद्योग धन्धे बन्द हो गये । अधिकतर लोग जनपद छोड़ कर अन्य स्थानों को पलायन कर गये । उपरोक्त कारणों से जनपद की आर्थिक स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती ही गयी ।

यद्यपि ऐसी स्थिति को उत्पन्न करने में अंग्रेजों का काफी बड़ा हाथ रहा था । उन्होंने अपने देश से वस्तुओं को लाकर बाजार को माल से भर दिया जिसके कारण भारतीय माल की भारत में ही खपत कम हो गयी । उसका परिणाम यह हुआ कि लघु उद्योग धन्धे जिसमें हाथों से यहाँ की जनता माल तैयार करती थी । माल बनाना बन्द कर दिया जिसके कारण उद्योग धन्धे बन्द हो ने के अलावा लोग भूखों मरने की स्थिति में आ गये ।

-----:0:-----

1- जोशी ई0बी0, पृष्ठ 145.

अध्याय - 6

खण्ड - स

ललितपुर पर ब्रिटिश कानून का प्रभाव

1857 ई0 की क्रांति के पश्चात् 1858 के मध्य तक समस्त बुन्देलखण्ड पर ब्रिटिश सरकार का अधिपत्य हो गया । 1858 ई0 के बाद लगभग चारों ओर शांति स्थापित हो गयी थी, तब लोगों को आशा थी कि नये शासक जो कि एक सभ्य श्रेणी के लोग माने जाते थे, सम्भवत: बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विकास के लिये नई योजनाएं लागू करेंगे जिससे इस क्षेत्र के लोगों में नई चेतना जागेगी एवं इस क्षेत्र का पिछड़ापन दूर होगा, परन्तु जिस प्रकार की नीति ब्रिटिश शासकों ने अपनायी उससे इस क्षेत्र का विकास होना तो दूर रहा, और पिछड़ापन बढ़ने लगा एवं इस क्षेत्र के लोगों के मन में निराशा की भावना उत्पन्न होने लगी ।

1858 में शांति स्थापित हो गयी । उसके पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने इस जनपद के लोगों की आवश्यकताओं को जानबूझ कर नजर अन्दाज किया । 1857 की क्रांति एवं उससे पूर्व के अकालों के कारण इस जनपद में कृषि की स्थिति अत्यन्त सोचनीय थी । अच्छे

बीज उपलब्ध नहीं थे । सिंचाई की स्थिति भी ठीक नहीं थी । प्राचीन तरीकों से सिंचाई की जाती थी जो वर्तमान आवश्यकताओं के लिये अपर्याप्त थी । कुओं से अधिकतर सिंचाई की जाती थी । ब्रिटिश सरकार ने सिंचाई की ओर बहुत कम ध्यान दिया । कोई नई नहर नहीं बनाई गई, न ही कोई अन्य साधन जुटाये । केवल पुराने चन्देल कालीन तालाबों की मरम्मत करवाई गयी तथा पुराने कुओं की भी मरम्मत करवाई गई । द्वितीय सेटिलमेन्ट के समय ललितपुर जनपद में 11,662 जिसमें 8,195 पुराने थे,केवल 3,467 नये बनवाये गये थे।[1] जबकि शासन को इस जनपद से अच्छा राजस्व प्राप्त होता था । इस प्रकार क्रांति से पूर्व इस जनपद के कुटीर उद्योग अच्छी तरह चल रहे थे । खरूआ वस्त्र,चन्देरी की साड़ियाँ,ललितपुर जनपद चमड़े की घोड़ों पर बैठने की जीन एवं परदे,मदनपुर में पीतल-ताँबे के बर्तन एवं तालबेहट में कम्बल बनाये जाते थे ।[2] ब्रिटिश सरकार ने इन स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन न देकर इनको नष्ट करने की नीति अपनायी ।[3]

1883-1889 ई0 तक इस क्षेत्र में रेलवे-पथ का आगमन होने पर इस क्षेत्र के समस्त बाजार विदेशों में निर्मित वस्तुओं से पट गये जिससे स्थानीय उद्योगों पर बहुत बुरा असर पड़ा । उद्योग धन्धे बन्द

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर,पृष्ठ 103.
2- वही; पृष्ठ 144.
3- वही; पृष्ठ 144.

होने लगे तथा स्थानीय कारीगर बेकार हो गये ।[1] शिक्षा एवं सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में भी यह क्षेत्र एवं यह जनपद पिछड़ा रहा जिसकी ओर ब्रिटिश सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया । 1861 ई0 तक केवल तहसील स्तर तक अर्थात् ललितपुर, मेहरौनी एवं मड़ावरा तहसीलों में केवल प्राईमरी स्तर तक स्कूल थे ।[2] हाईस्कूल, इन्टर की शिक्षा प्राप्त करने के लिये जनपद के बाहर जाना पड़ता था । उच्च शिक्षा (स्नातक स्तर तक) के लिये समस्त बुन्देलखण्ड में कोई संस्था नहीं थी ।

इस प्रकार ब्रिटिश सरकार की गलत नीतियों के परिणाम-स्वरूप इस जनपद में पिछड़ेपन को बढ़ावा मिला । यदि सरकार ने जनपद में शिक्षा, विकास की ओर थोड़ा भी ध्यान दिया होता तो यह क्षेत्र बर्बाद होने से बच जाता । सरकार ने शिक्षा की तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ की जनता का अधिकांश भाग अशिक्षित रह गया । उससे इस क्षेत्र का विकास पूर्णतः अवरूद्ध हो गया । उस अनपढ़ जनता को यहाँ के थोड़े पढ़े-लिखे जमींदारों ने उठाया । उन्होंने गरीब व अनपढ़ जनता को थोड़ा कर्ज देकर उनकी जमीनों को रूक्कों पर लिखवाया जिसका ब्याज चक्रवृद्धि की दर से चलना था । एक बार कोई भी इस तरह के कर्ज में फंस जाता था तो उसको उस व्यूह से निकलना बिल्कुल ही

1- जोशी ई0बी0, झांसी गजेटियर, पृष्ठ 144.

2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 174.

असम्भव था । इस तरह शिक्षा के विकास को न किया जाना, जनपद के पिछड़ेपन का एक कारण अवश्य था और इसी कारण से वहाँ की सामाजिक स्थिति ठीक नहीं हो सकी जिससे वहाँ पर आर्थिक पिछड़ापन बढ़ गया और लोग निर्धनता-रेख की सीमा से और नीचे चले गये । एक समय ऐसा भी आया जब उनको घर छोड़ कर दूर जाना पड़ा और वे मजदूरी करके पेट पालने लगे । यदि सरकार ने थोड़ा ध्यान दिया होता तो यह स्थिति न होती तथा जनपद में विकास की सम्भावनाएं बढ़तीं जिससे जनपद समृद्ध होता, परन्तु अंग्रेजों की नीति ने उसे बर्बाद कर दिया एवं अंग्रेज अपनी नीति में सफल रहे एवं उनका बुरीतरह से आर्थिक शोषण करते रहे ।

-----:0:-----

अध्याय - 6

खण्ड - द

झीलें तथा सिंचाई की सुविधाएं

ललितपुर जनपद की कृषि में, सिंचाई की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि इस जनपद की मिट्टी कम उपजाऊ है एवं यहाँ पर पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में सिंचाई की आवश्यकता अधिक होती है । यह समस्या इस जनपद में प्राचीन समय से चली आ रही है । अगर समय पर वर्षा न हो तो पूर्णरूप से सिंचाई पर निर्भर रहना पड़ता है । प्राचीन समय में चन्देल शासकों ने स्थान-स्थान पर झीलों का निर्माण करवाया था ।[1] चन्देल एवं गहरवारों ने उसका अनुसरण किया, परन्तु चन्देलों ने इस समस्या पर गम्भीरता से विचार किया था ।[2]

इस जनपद के अधिकतर क्षेत्र लाल मिट्टी के हैं, जो समस्त खेतिहर भूमि के लगभग 23·3% है, इसके अतिरिक्त काली मिट्टी के क्षेत्र जो लगभग 2·48% है एवं काली-लाल मिट्टी के मिश्रित क्षेत्र में

1- चन्देल और उनका राजत्वकाल, मिश्र केशवचन्द्र, पृष्ठ 13·
2- वही·

बिना सिंचाई के खेती नहीं की जा सकती ।[1]

प्रथम सैटिलमेन्ट के अनुसार ललितपुर जनपद में खेतिहर भूमि 3,93,401 एकड़ में से 21,336 एकड़ भूमि में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध थी जो 5.5% होती थी । द्वितीय सेटिलमेन्ट रिपोर्ट के अनुसार (1896-99) इस जनपद के खेतिहर भूमि 3,85,810 एकड़ में 23,497 एकड़ भूमि में सिंचाई की सुविधा थी ।[2]

एटकिन्सन के अनुसार जनपद ललितपुर के लोगों का सिंचाई का साधन पूर्ण रूप से पुराने ढंग का था । नहर एवं सिंचाई की नई सुविधाओं का कोई साधन नहीं था । विशेष रूप से रबी की फसल तो लगातार सिंचाई के बिना हो ही नहीं सकती थी, क्योंकि इस जनपद का अधिकतर भाग लाल मिट्टी युक्त था । इस जनपद में अधिकतर सिंचाई का मुख्य साधन कुओं से था जिनमें "परसियन वील" (रहट) द्वारा सिंचाई की जाती थी ।[3]

1- जोशी ई० बी०, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 100.

2- वही.

3- स्टेटिकल डिस्क्रीपसन एण्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ द नार्थ-वेस्ट प्रोविंस आफ इण्डिया, बोल०-1, इलाहाबाद 1874, पृष्ठ 313.

विभिन्न सेटिलमेन्ट पर जनपद में सिंचाईयुक्त भूमि[1]

जिला	निपटारे का वर्ष	कुल खेतिहर भूमि में सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत्
ललितपुर	1864	5•5
ललितपुर	1898	11•5
झाँसी, ललितपुर सब-डिवीजन सहित•	1906	8•5

1- जोशी ई0 बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 100•

सिंचाई के प्रमुख साधन

जनपद में अधिकतर सिंचाई के प्राचीन तरीको को ही प्रयोग में लाया जाता था । जैसे- चरस,ढेंकली एवं रहट द्वारा सिंचाई की जाती थी । यह सब यन्त्र कुओं द्वारा सिंचाई में प्रयोग किये जाते थे । दूसरे रूप में सिंचाई में कुंओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी । नलकूपों द्वारा सिंचाई की जानकारी लोगों में नहीं थी ।[1]

द्वितीय सेटिलमेन्ट के समय ललितपुर जनपद में कुल कुओं की संख्या 11,662 थी जिसमें 8,195 एवं 3,467 नये थे । 1903-1906 में इनकी संख्या बढ़ कर 13,210 हो गयी थी ।[2] कुओं के अतिरिक्त सिंचाई का प्रमुख साधन चन्देल शासकों द्वारा बनाये गये तालाब थे ।[3]

ब्रिटिश सरकार द्वारा सिंचाई-सुविधा में बढ़ावा

ब्रिटिश सरकार द्वारा सिंचाई-सुविधा की ओर ध्यान सर्वप्रथम 1868-69 में भयंकर अकाल के समय दिया गया था । इसका प्रमुख कारण उस समय के जिला अधिकारियों ने सरकार को इस

1- जोशी ई0 बी0, झांसी डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृष्ठ 101.
2- वही; पृष्ठ 102.
3- मिश्र के0 सी0,चन्देल और उनका राजत्वकाल,पृष्ठ 13.

समस्या से अवगत करवाया था । शीघ्र ही पुराने कुओं एवं तालाबों की मरम्मत का कार्य आरम्भ किया गया ।[1]

उपरोक्त कार्य के अतिरिक्त इस जनपद में काफी संख्या में जल बेकार चला जाता था, जबकि उसका उपयोग सिंचाई में किया जा सकता था । कर्नल वायर्ड स्मिथ के अनुसार वर्ष का 4 लाख का राजस्व इस नष्ट हुए जल में समाप्त हो जाता है ।[2]

पुराने कुओं की मरम्मत कार्य के अतिरिक्त नये कुओं का भी निर्माण कराया गया । द्वितीय सेटिलमेन्ट के समय कुल कुओं की संख्या 11,662 थी । 3,467 कुंए नये बनवाये गये थे । 1903-06 में 36,443 एकड़ भूमि केवल कुओं द्वारा सींची जाती थी ।[3]

उपरोक्त तथ्यों के अनुसार कुएं इस क्षेत्र के प्रमुख सिंचाई के साधन थे, जबकि पुरानी झीलों एवं नहरों की मरम्मत भी करवाई गई एवं सिंचाई योग्य बनाया गया । इसका प्रमुख कारण है कि 1906 में कुओं द्वारा सिंचित क्षेत्र 92·2% था ।[4]

1- एटकिन्सन ई० टी०, पृष्ठ 243·

2- वही·

3- जोशी ई० बी०, पृष्ठ 105·

4- वही; पृष्ठ 100·

प्रमुख झीलें :

कुओं के अतिरिक्त इस जनपद में प्रमुख झीलें भी हैं । इनमें कुछ प्राचीन चन्देल शासकों द्वारा निर्मित हैं जिनसे सिंचाई की सुविधा प्राप्त होती है,जो निम्नलिखित हैं :-

गोविन्द सागर :

यह झील ललितपुर से लगभग 2 मील दूर स्थित है । यह 11,500 फीट लम्बी है । इस झील से ललितपुर क्षेत्र को सिंचाई की सुविधा प्राप्त होती है ।[1]

नरहट झील :

नरहट झील का निर्माण सजनम नदी द्वारा हुआ है । इस झील में सजनम नदी का जल इकट्ठा हो जाता है । यह ललितपुर तहसील की दक्षिणी सीमा पर स्थित है ।[2]

बारपरोना झील :

यह बांसी से 12 मील दूर पारोना गांव में स्थित है ।[3]

उपरोक्त झीलों के अतिरिक्त सनोरी,जमालपुर पाली में ताल (तालाब) भी सिंचाई कार्य में प्रयोग में लाये जाते हैं ।[4]

-----:0:-----

1- जोशी ई0 बी0, झांसी डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृष्ठ 108;
2- वही; पृष्ठ 111.
3- वही; पृष्ठ 114.
4- वही; पृष्ठ 115.

अध्याय - 6

खण्ड - च

अंग्रेजों के प्रति घृणा की भावना

अगस्त 1858 ई0 तक लगभग समस्त भारत ब्रिटिश शासन के आधीन हो गया था, परन्तु 1857 की क्रांति में ब्रिटिश सैनिकों के अत्याचारों एवं 1858 के बाद उनके शासन की गलत नीतियों के कारण यहाँ के लोगों में अंग्रेजी शासन के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न हो गयी थी । इस कारण अंग्रेज शासक कुछ परेशान अवश्य हो गये थे, परन्तु भारतियों के लिये वह विदेशी एवं अत्याचारी ही थे ।[1]

1858 के बाद लगभग समस्त बुन्देलखण्ड क्षेत्र अंग्रेजों के आधीन हो गया था, परन्तु यहाँ के बुन्देला एवं मराठा राजाओं के साथ अन्यायपूर्ण रवैये एवं यहाँ के लोगों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप, प्राचीन कुटीर उद्योग धन्धों को नाश करने की ब्रिटिश नीति

1- रानी झाँसी समारोह स्मारिका 1982, पृष्ठ 10.

के कारण इस क्षेत्र के लोगों की ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा एवं असन्तोष की भावना उत्पन्न हो गयी थी ।

अंग्रेजों के प्रति घृणा-भावना के प्रमुख कारण :-

1- ब्रिटिश सरकार का बुन्देला एवं मराठा जागीरदारों एवं राजाओं के साथ अन्यायपूर्ण नीति :

समस्त बुन्देलखण्ड में बुन्देला जागीरदारों एवं राजाओं का शासन था । झाँसी, ललितपुर जनपद एवं जालौन के मराठा जागीरदार थे, परन्तु अंग्रेजों की बेदखल नीति के कारण उनको अपने स्टेट से समस्त राजकीय अधिकारों से वंचित होना पड़ा ।[1] झाँसी के राजा के बाद उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को राज्य का उत्तराधिकारी, ब्रिटिश सरकार ने नहीं माना और विधिवत् रानी के साथ अन्याय कर, झाँसी को ब्रिटिश शासन के आधीन कर लिया गया । इसी प्रकार का अन्याय ललितपुर जनपद के बानपुर, चन्देरी, सिन्दवाहा के जागीरदारों के साथ हुआ जिसके कारण वहाँ के जागीरदार एवं उस क्षेत्र की जनता में अंग्रेजों के प्रति घृणा एवं प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हो गयी । इन्हीं बुन्देला ठाकुरों एवं झाँसी की रानी ने 1857 ई० की क्रांति में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह किया था ।[2]

1- रानी झाँसी समारोह स्मारिका, 1982, पृष्ठ 10.
2- एटकिन्सन ई० टी०, पृष्ठ 346 एवं ड्रेक ब्रोकमैन डी० एल०, पृष्ठ 108.

2- धार्मिक नीति में हस्तक्षेप करना :

ब्रिटिश शासकों ने इस क्षेत्र के लोगों के धार्मिक कार्यों में भी धीरे-धीरे हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया । समस्त बुन्देलखण्ड में इसाई मिशनरियों का जाल फैलाया गया । इस क्षेत्र की निर्धन जनता को रोटी एवं धन की लालच देकर इसाई बनाया जाने लगा ।

3- आर्थिक नीति :

ब्रिटिश सरकार की गलत नीतियों के कारण जनपद एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र के स्थानीय धन्धे लगभग समाप्त हो गये ।[1] स्थानीय धन्धों को प्रोत्साहन न मिलने के कारण मऊरानीपुर का खरूआ वस्त्र उद्योग, झांसी का कालीन उद्योग तथा ललितपुर का ब्रुश उद्योग समाप्त हो गया, क्योंकि इनके स्थान पर ब्रिटेन में बने कपड़े एवं अन्य वस्तुएं बाजार में बिकने लगीं और उपरोक्त वस्तुओं के बनाने वाले कारीगर बेकार हो गये ।

1857 के विद्रोह में बुन्देलखण्ड की जनता ने अंग्रेजों को काफी आघात पहुँचाया था । यद्यपि 1857 का विद्रोह का दमन हो चुका था एवं अंग्रेज 1858 में इस क्षेत्र में शासन करने में सफल हो गये थे, लेकिन अंग्रेज इस क्षेत्र की जनता से बदला लेने के लिये तुले हुये थे । वे जानते थे

1- जोशी ई0 बी0, पृष्ठ 144.

कि यहाँ की विद्रोही जनता को सजा देने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि बुन्देलखण्ड को आर्थिक रूप से पिछड़ा रखा जाये । यह नीति 1858 तक जारी रही । राजस्व की कठोरता ने अंग्रेजों को अपनी योजना के क्रियान्वयन में भरपूर मदद पहुँचायी ।

अंग्रेज नीति का परिणाम यह निकला कि लोगों के दिमाग में दमन तथा अत्याचार की छाया निरन्तर बनही रही । परिणाम स्वरूप यहाँ के लोगों ने अंग्रेजी शासन से घृणा करना शुरू कर दिया । लोग अंग्रेजी शासन को विदेशी शासन तो समझते ही थे, वल्कि उस शासन को अपने कष्ट का कारण भी समझते थे । अतः लोग अंग्रेजों को घृणा की नजर से देखने लगे । कुत्ता कहकर पुकारने लगे । झाँसी में आज भी झाँसी के तत्कालीन सुपरिन्टेन्डेन्ट मेजर एफ0 डब्लू0 पिनकने के स्मारक को कुत्ते की टौरिया के नाम से जानते हैं । इसको ही नहीं, अन्य स्मारकों को भी लोग घृणा की नजर से देखते हैं । इसी कारण यहाँ के लोग अंग्रेजी योजनाओं की मदद नहीं करते थे । यह उल्लेखनीय है कि लड़कियों की शिक्षा के लिये सरकार की ओर से जब स्कूल खोला गया, तब थोड़े ही दिन के बाद लड़कियों की संख्या कम होने से सरकार को स्कूल बन्द करना पड़ा । यह इस बात का प्रमाण है कि लोग सरकार की किसी भी मामले में मदद नहीं करते थे । ऐसी स्थिति में अंग्रेजों ने आवश्यक समझा कि यहाँ पर सरकार की बफादार प्रजा को संगठित किया जाये और इसी उद्देश्य से इसाई धर्म के बसने को प्रेरित किया, ताकि वे इसाईयों के नाम पर बफादार हों । इसी पृष्ठ भूमि में बुन्देलखण्ड में इसाई मिशनरियों ने अपना कार्य शुरू किया जिन्हें

सरकार की ओर से संरक्षण व सुविधाएं मिलीं । इन्हीं सब कारणों से लोग घृणा करने लगे थे ।[1]

1868-69, 1895-96 एवं 1896-97 के भयंकर अकाल[2] के समय 1865 को हैजे (महामारी)[3] के समय सरकार की ओर से पीड़ित जनता को पूर्णरूप से सहायता नहीं मिली जिसमें काफी लोगों को जान-माल का नुकशान उठाना पड़ा ।

ब्रिटिश सरकार की उपरोक्त अन्यायपूर्ण गलत नीतियों के कारण इस जनपद के लोगों में अंग्रेजों के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न हो गयी थी ।

------:0:------

1- पाठक एस० पी०, झांसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 153.
2- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, पृष्ठ 63.
3- एटकिन्सन ई० टी०, पृष्ठ 253-254.

अध्याय - सप्तम

सामाजिक - स्थिति

अध्याय - 7

खण्ड - अ

सामाजिक स्थिति

धर्म ---

जिला ललितपुर के सामाजिक जीवन का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ का सामाजिक ढांचा अनेक धर्म एवं जातियों में बंटा हुआ है । इस जिले में मुख्यतया हिन्दू निवासी अधिक पाये जाते हैं । बैल्ली महोदय के अनुसार बुन्देलखण्ड के सभी जिलों में हिन्दुओं का बहुमत है ।[1]

1901 ई0 को जनगणना के अनुसार जिला झाँसी, सब-डिवीजन ललितपुर सहित विभिन्न धर्म अनुयायियों को संख्या निम्न प्रतिशत में थी ।[2]

1- बैल्ली डी0 सी0, सेन्सस आफ इण्डिया, भाग-1, वो0 16, एन0डब्लू0पी0 एण्ड अवध । इलाहाबाद 1894, पृष्ठ 173.

2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0 एल0, पृष्ठ 86.

विभिन्न धर्म अनुयाइयों की संख्या की तालिका प्रतिशत में

धर्म	प्रतिशत
हिन्दू	92·7%
मुस्लिम	5%
जैन	1·7%
क्रिश्चियन	3064
पारसी	177
बुद्धिष्ट	16

इस्लाम धर्म के अनुयाइयों की संख्या 5% है । सेन्सस लिस्ट 1901 ई० के अनुसार इस तीसरे स्थान पर जैन धर्म के अनुयायी हैं ।[1] जो अधिकतर मेरठ, आगरा एवं संयुक्त प्रदेश के अन्य जनपदों से आकर यहाँ बस गये हैं ।[2] एक किंवदन्ती के अनुसार देवपत एवं खेवपत नाम के दो धनी जैन बन्धु थे जिन्होंने इस जनपद में आकर लेन-देन एवं जमीन क्रय-बिक्रय का व्यापार आरम्भ किया था, दोनों भाइयों ने

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, झाँसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद, पृष्ठ 84-88·

2- वही·

यहाँ के बुन्देला व्यापारियों को ऋण देने भी आरम्भ कर दिया । धीरे-धीरे जनपद ललितपुर के समस्त व्यापार अपने निर्देश में कर लिया । इन दोनों भाइयों ने इस जनपद के देवगढ़ कस्बे में तथा अन्य स्थानों पर कई देवालय बनवाये ।[1]

इसाई धर्म के अनुयाइयों की संख्या 1901 की जनगणना के अनुसार 3064 थी । इसाई धर्म का प्रवेश इस जनपद में 1858 ई0 को प्रारम्भ हुआ था । इसाई धर्म-प्रचारक 1858 ई0 से यहाँ पर आना आरम्भ हो गये थे । अकाल के समय भूख और गरीबी से तंग आकर काफी संख्या में लोगों ने इसाई धर्म स्वीकार कर लिया था।[2] इन धर्मों के अतिरिक्त पारसी,जो कि अधिकतर व्यापार के सम्बंध में आकर यहाँ बस गये थे इनकी संख्या 177 थी । बौद्ध मत वालों की संख्या 16 थी ।[3]

-----:0:-----

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झाँसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद पृष्ठ 84-88•

2- वही•

3- वही•

खण्ड - ब

जाति एवं उपजातियाँ

जिला ललितपुर का प्रधान धर्म हिन्दू होने के साथ-साथ यह अनेक जात-बिरादरियों में बंटा हुआ है, उनका समाजीकरण वर्ण व्यवस्था पर आश्रित है । परम्परागत चारों वर्ण ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र, यहाँ निवास करते हैं ।

26 अप्रैल 1866 में जैन्किसन ने अपने एक स्मरण-पत्र में इस जिले में जिन जातियों का वर्णन किया है, वह निम्न हैं :-

ब्राम्हण, चन्देला क्षत्रिय, खंगार, सहरिये, दांगी, अहीर, लोधी, कुर्मी, काछी और परिहार राजपूत, यह सब जातियाँ यहाँ पर बुन्देलों के आने के पूर्व भी निवास करती थीं[1] अपने पैतृक व्यवसाय से पहचानी जाने लगीं तथा धीरे-धीरे वह व्यवसाय उनकी जाति बन गया । जैसे- कुम्हार, बसोर, माली, बढ़ई, लुहार, सुनार, गड़रिया, मोची, कोरी, ठठेर आदि ।[2]

अन्य उद्योगों में संलग्न केवट, तेली, धोबी, नाई, खटीक, भाट, भरभूजा, कहार, गुसांई और योगी जातियाँ भी बहुतायत पाई जाती हैं ।[3] हिन्दू धर्म की यह जातियाँ जो इस जनपद में पाई जाती हैं,

---

1- सेन्सस आफ नार्थ-वेस्ट प्राविन्स आफ इण्डिया, भाग-1, इलाहाबाद 1867, पृष्ठ 98.

2- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल, नागरी प्रचारिणी-सभा, काशी 1944, पृष्ठ 25-26.

3- वही.

उनका संक्षिप्त वर्णन निम्न है :-

ब्राम्हण :

इस जनपद की हिन्दू जनसंख्या में 10.10% भाग ब्राम्हणों का है जिनमें जुझौतिया, मारवाड़ी, कन्नौजिया, सनाढ्य और दक्षिणी पण्डित हैं ।[1]

जुझौतिया ब्राम्हण :

ब्राम्हणों की जनसंख्या का एक बड़ा भाग जुझौतिया ब्राम्हण कहलाता है । ब्राम्हणों की यह शाखा यहाँ की प्राचीन ब्राम्हण जाति है । यह भू-भाग जिस पर ललितपुर जनपद स्थित है, इसका एक प्राचीन नाम जेजाकभुक्ति है । जब इस भू-भाग पर चन्देल शासकों का शासन था, उस समय इसका नाम जेजाकभुक्ति था । मुस्लिम इतिहासकार ने फारसी भाषा में इसे "जिझोती" या "जजहोति" का उच्चारण दिया ।[2] चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपनी यात्रा के समय इस प्रदेश को "जजहोति" लिखा है । इस कारण यहाँ के प्राचीन रहने वाले ब्राह्मणों का नाम इस प्रदेश के अपभ्रंश नाम "जिझोती" के अनुसार जुझौतिया पड़ गया ।[3]

1- कनिंघम्, ए अर्कियोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, वो0-21, पृ0 58.

2- जोशी ई0 बी0, झाँसी गजेटियर, 1965, पृष्ठ 81-82.

3- वही.

एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार ओरछा के बुन्देला राजा जुझारसिंह ने कान्यकुब्ज ब्राम्हणों को न्यौता दिया था, वह जुझौतिया कहलाये । परन्तु प्रसिद्ध इतिहासकार इलियट, जुझौतिया ब्राम्हणों को कान्यकुब्ज ब्राम्हणों की एक शाखा मानते हैं ।

दक्षिणी पण्डित (महाराष्ट्रीयन) :

पेशवा बाजीराव प्रथम एवं छत्रसाल बुन्देला की संधि (1732)[1] के पश्चात् छत्रसाल द्वारा दिये गये भागों पर मराठा सरदारों का अधिकार हो गया । इसके साथ-साथ इस भू-भाग पर दक्षिणी पण्डितों का एक बड़ा भाग आकर बस गया, इस भू-भाग में जालौन, झाँसी, गुरसरायं, सागर आदि प्रमुख थे । ललितपुर जनपद की सीमा सागर जनपद से मिलती है तथा किसी समय इस जनपद पर मराठों के आक्रमण भी होते रहे थे, इस कारण इस जनपद में भी दक्षिणी पण्डितों अर्थात् महाराष्ट्रियन ब्राम्हणों का आगमन हुआ और कुछ इस जनपद में आकर बस गये ।[2]

अन्य ब्राम्हण :

अन्य ब्राम्हण जातियों में सनाढ्य एवं कन्नौजिया ब्राम्हण भी इस जनपद में निवास करते हैं जो कि अन्य जनपदों से आकर यहाँ पर बस गये हैं । इनमें से कुछ परिवार यहाँ के प्राचीन

1- सर देसाई जी0एस0, ए न्यू हिस्ट्री आफ मराठा, भाग-2, पृष्ठ संख्या 105-107.

2- वही; पृष्ठ संख्या 231.

निवासी हैं ।[1] इस जनपद में कुछ सरवरिया ब्राम्हण भी निवास करते हैं,जो सरयून्तट के आये हुये माने जाते हैं ।[2]

राजपूत :

इस जनपद की हिन्दू जन संख्या का एक बड़ा भाग राजपूत या क्षत्रियों का है । झाँसी एवं ललितपुर जनपद की हिन्दू आबादी का 6·0% भाग राजपूतों का है,जो कि विभिन्न वंशों में बंटे हुये हैं,[3] निम्नलिखित हैं :-

बुन्देला :

बुन्देला जाति,राजपूत जाति की ही एक बड़ी संख्या इस जनपद में निवास करती है,इन्हीं बुन्देला राजपूतों के नाम से ही यह समस्त भू-भाग "बुन्देलखण्ड" के नाम से जाना जाता है ।[4] इस वंश का आगमन इस भू-भाग पर 1335-40 के लगभग हुआ था ।[5]

1- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल,पृष्ठ 24-25·

2- वही·

3- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 62·

4- मिश्र केशवचन्द्र,चन्देल और उनका राजत्वकाल,पृष्ठ 3·

5- वही·

1901 ई0 की जनगणना के अनुसार राजपूतों की संख्या का 17•94% प्रतिशत जनसंख्या इस जनपद में निवास करती है ।[1]

बुन्देलों की उत्पत्ति :

बुन्देलों की उत्पत्ति के विषय में अनेक दन्त कथाएं प्रचलित हैं । अधिकतर बुन्देले अपनी उत्पत्ति अयोध्या के राजा रामचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र "कुश" से बतलाते हैं ।[2] इस प्रकार यह सूर्य वंशी क्षत्री कहलाये । ऐसा प्रचलित है कि सन् 674 ई0 में इस वंश के राजा विहंगराज के पुत्र कुतराज (काशी नरेश) ने अपनी राजधानी काशी में स्थापित की जिससे यह काशीश्वर गहरवार कहलाये ।[3] कुतराज की 20वीं पीढ़ी में करनपाल राजा हुए ।[4] करनपाल के बाद उसके पुत्र बीरभद्र राजा हुए ।[5] वीरभद्र की दो रानियाँ थीं, ज्येष्ठ से चार पुत्र थे और छोटी से एक, जिसे पंचम या हेमकरण के नाम से जाना जाता है ।[6]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0 एल0, पृष्ठ 62•

2- महाराजा छत्रसाल, कु0कन्हैयालाल तवारीखे बुन्देलखण्ड, श्यामलाल-गोरेलाल, बुन्देलखण्ड का इतिहास ।

3- गोरेलाल, बुन्देलखण्ड का इतिहास, पृष्ठ 114•

4- गोरेलाल, फुटनोट में पृष्ठ 116-118 पर, अर्जुनदेव द्वारा बतलाया गया ।

5- छत्रसाल, पृष्ठ 114•

6- लार्ड सी0ए0, ओरछा स्टेट गजेटियर, लखनऊ 1907, पृष्ठ 12•

छोटी रानी के पुत्र पंचम को राजा वीरभद्र अधिक चाहते थे। राजा ने पंचम को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, परन्तु राजा की मृत्यु के पश्चात् पंचम के सौतेले भाइयों ने उसे निकाल दिया। पंचम निराश होकर मिर्जापुर की ओर चला गया। वहाँ वह विन्ध्यवासिनी देवी के मन्दिर में तपस्या करने लगा, अन्त में हताश होकर पंचम ने अपने सिर की बलि देवी पर देनी चाही। अभी पंचम ने अपना सिर काट ही रहा था कि देवी ने प्रकट होकर उसे विजयी होने का वरदान दिया। पंचम की सन्तान विंध्यवासिनी देवी के नाम पर "विन्ध्येल"[1] के नाम से प्रसिद्ध हुयी जिसका अपभ्रंश बुन्देला कहलाया।[2]

पोगसन के अनुसार देवी ने वरदान दिया था कि तुम्हारे रक्त की बूँद जहाँ गिरेगी, वहाँ-वहाँ तुम्हारा वंश उदय होगा।[3]

हकीउतुल अकलीम में बुन्देलों को गहरवर जातियों को बांदी की सन्तान बताया है।[4]

ओरछा गजेटियर के अनुसार पंचम द्वारा देवी पर पाँच मानव-मस्तिष्क चढ़ाने का उल्लेख है।[5] इस प्रकार बुन्देला राजपूतों

1- कु0कन्हैया जू, के अनुसार पंचम के एक पूर्वज का नाम विंध्यपालदेव था।

2- बुन्देलों का इतिहास, पृष्ठ 10.

3- पोगसन वी0आर0, ए हिस्ट्री आफ बुन्देला, दिल्ली 1974, पृ0 7.

4- हकीउतुल अकलीम.

5- ओरछा राज्य गजेटियर, लखनऊ 1907, पृष्ठ 12.

को होना बताया जाता है । इस भू-भाग पर अर्थात् बुन्देलखण्ड पर उन्होंने लगभग 400 साल से एक प्रतिष्ठित क्षत्रिय के रूप में निवास किया । ललितपुर जनपद में भी बुन्देला वंशज राजपूत प्रतिष्ठित जमींदार हैं । जो प्राय:दाऊ जू, कुंवर जू, के नाम से जाने जाते हैं ।

पंवार,परिहार और धंधेरा राजपूत :

ललितपुर में बुन्देला राजपूतों के बाद द्वितीय स्थान परिहार राजपूतों का है ।[1] एक किंवदन्ती के अनुसार परिहार राजपूतों के पूर्वज प्रसिद्ध चन्देल राजा परमाल (1165-1203) के यहाँ मन्त्री थे,उन्हीं के वंशज परिहार राजपूत कहलाते हैं ।

धंधेरा राजपूत :

यह राजपूत झाँसी जिले के पहूज नदी के पास आकर बस गये थे । यह क्षेत्र 1861 में ग्वालियर स्टेट में चला गया था ।[2] एक किंवदन्ती के अनुसार राजा पृथ्वीराज चौहान की सेना में धांई नाम का एक नायक था,उसकी वीरता से प्रसन्न होकर राजा ने पहूज नदी के पास के गाँव उसे दिये थे,तब से 800 वर्ष से यह बुन्देलखण्ड में निवास कर रहे हैं ।[3]

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 267.
2- वही; पृष्ठ 266.
3- वही.

पंवार राजपूत :

जेनकिन्सन के अनुसार पंवार राजपूत मारवाड़ से आकर बुन्देलखण्ड में बस गये थे ।[1] एक किंवदन्ती के अनुसार बुन्देला एवं पंवार राजपूत एक दूसरे के सम्बन्धी थे । जब बुन्देला सरदार ने करैरा के खंगार राजा पर आक्रमण किया था तब पंवार जागीरदारों ने सोहनपाल की सहायता की थी, इसके बदले सोहनपाल ने अपनी लड़की की शादी पनपाल से करदी और दहेज में बतौर नाम का ग्राम (झांसी तहसील में) दिया ।[2] इससे प्रतीत होता है कि पंवार राजपूत बुन्देला राजपूतों की एक शाखा है ।

अन्य राजपूत जातियाँ :

बुन्देला, पंवार, परिहार, धंधेरा राजपूतों के अतिरिक्त राजपूतों की एक जाति "गौर" भी बुन्देलखण्ड में निवास करती है । 1901 ई० के सेन्सस रिपोर्ट के अनुसार जिला झांसी सब डिवीजन ललितपुर सहित में गौर राजपूतों की संख्या 1220 थी ।[3] इस क्षेत्र में हमीरदेव करचुली जो कि हमीरपुर का संस्थापक था,[4] गौर राजपूतों को बसाया था । महरौनी और मोठ तहसील में यह अधिकतर निवास करते हैं ।[5]

1- जैनकिन्सन ई0जी0, रिपोर्ट आफ सेटिलमेन्ट, झांसी, पृ0 93, इलाहाबाद सन् 1871 ई0.
2- वही.
3- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झांसी गजेटियर, इलाहाबाद 1909, पृष्ठ 93.
4- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 267.
5- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 94.

उपरोक्त राजपूत जातियों के अतिरिक्त अन्य राजपूतों में चौहान, जंवार, सेंगर, राठौर दीक्षित एवं चन्देला राजपूत जातियाँ भी इस जनपद में निवास करती हैं।[1] राजपूत जातियों में धंधेरा, पंवार, परिहार एवं बुन्देला आपस में शादी-विवाह का रिश्ता बना सकते हैं।[2]

वैश्य जातियाँ :

वैश्य जातियों में गहोई, अग्रवाल, उमराव, बरनवाल, जैन और मारवाड़ी आदि इस जनपद में निवास करती हैं।[3] इन सब जातियों में सबसे अधिक संख्या गहोई वैश्यों की है। इन जातियों का मुख्य धन्धा व्यापार, लेन-देन तथा जमीन क्रय-विक्रय है।[4] 1947 के सेटिलमेन्ट के समय 3·6% भूमि इनके अधिकार में थी। गहोई, वैश्य, अधिकतर गाँव में निवास करते हैं। जैन एवं मारवाड़ी का इस जनपद के एक बड़े भू-खण्ड पर अधिकार है।[5]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, पृष्ठ 94·

2- एटकिन्सन ई० टी०, पृष्ठ 266·

3- वही; पृष्ठ 267·

4- जोशी ई०बी०, झाँसी गजेटियर 1965, पृष्ठ 82·

5- वही·

हरिजन एवं पिछड़ी जातियाँ :

चमार

हरिजन जातियों में सबसे अधिक संख्या चमारों की है । यह हिन्दू जनसंख्या का 13·38% हैं । यह सभी तहसीलों में निवास करते हैं ।[1] 1891 में झाँसी जिले में चमारों की संख्या 56,378 थी एवं ललितपुर जिले में 33,762 थी जिसमें चमारों की सहजाति अहिरवार का बहुमत था ।[2] यह हरिजन जाति अधिकतर मजदूर पेशा है । कुछ अपने पुश्तैनी चमड़े-जूतों का धन्धा करते हैं एवं कुछ खेती-बारी[3] (काछी) का कार्य करते हैं ।

इस जनपद की हिन्दू जनसंख्या का 10·13% भाग काछियों का है । यह यहाँ पर नरवर से आकर बस गये ।[4] इनका मुख्य धन्धा खेती करना है ।[5]

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 267 एवं ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 86·

2- क्रुक डब्लू0, द ट्राइब एण्ड कास्ट आफ नार्थ-वेस्ट प्रोविन्स आफ इण्डिया, वो0-2, दिल्ली, पृष्ठ 192·

3- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 267-268·

4- वही·

5- वही·

कोरी ‖कुष्टा‖

इनका मुख्य व्यवसाय कपड़ा बनाना है । कोरी की उत्पत्ती केन्द्र बनारस है एवं कुष्टा चन्देरी से ‖जो कि इस जनपद का सीमावर्ती क्षेत्र है‖ आकर बस गये हैं ।[1]

अहीर

हिन्दू संख्या का 9•06% भाग अहीरों का है । यह अपनी उत्पत्ती का केन्द्र मथुरा बतलाते हैं । इनका प्रमुख व्यवसाय गाय-भैंस पालना तथा दूध का धन्धा करना प्रमुख है ।[2]

लोधी

हिन्दू जनसंख्या का 8•24% भाग लोधियों का है ।[3] यह अधिकतर नरवर, ग्वालियर से आकर यहाँ बस गये । इस जनपद के मेहरौनी तहसील में इनका बहुमत है ।[4] इनका भी मुख्य धन्धा खेती है ।[5]

1- एटकिन्सन ई0टी0, पृष्ठ 267-268•

2- वही•

3- वही; पृष्ठ 69•

4- वही•

5- इम्मे डब्लू0एच0एल0, एण्ड मेस्टन, पृष्ठ 33; रिपोर्ट आफ सैकिण्ड सैटिलमेन्ट झाँसी, ललितपुर एन0डब्लू0पी0, इलाहाबाद 1862•

खंगार

उपरोक्त जातियों के अलावा खंगार, जिनकी उत्पत्ती केन्द्र गढ़कुरारा (ओरछा) है। किसी समय यह जाति राजवंश के रूप में जानी जाती थी।[1] परन्तु अब यह अधिकतर चौकीदारी आदि करते हैं।[2]

गौड़ एवं सहरिये

गौड़ एवं सहरिये यह अधिकतर वनों से सम्बन्धित कार्य करते हैं। लकड़ी काटना, शहद बेचना इनका मुख्य व्यवसाय है। यह इस जनपद में अधिक हैं।[3]

इन जातियों के अतिरिक्त कुम्हार, नट, बलोड़, माली, बढ़ई, लुहार, सुनार, गड़रिया, भाट, खटीक, कहार, भरभूज आदि भी जातियाँ पर्याप्त संख्या में इस जनपद में निवास करती हैं।[4]

मुस्लिम

ललितपुर जनपद में अधिकतर "सुन्नी" मुसलमान निवास करते हैं।[5] 1901 में मुस्लिम जनसंख्या 35 सह जातियों में बंटी हुई थी।[6]

1- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 268-269.
2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 95.
3- वही.
4- वही.
5- वही.
6- जोशी ईशा बसन्त, झाँसी गजेटियर, लखनऊ 1965, पृष्ठ 84.

शेख,सैयद,मुगल,पठान प्रमुख उच्च जातियाँ हैं एवं कंजर,नट,कसाब, भिस्ती और जुलाहा,बहना,पिछड़ी जातियों में माने जाते हैं ।[1] लाल बेगी हरिजन जाति में आते हैं ।[2]

जिला ललितपुर में अधिकतर बहना पिछड़ी जाति के मुसलमान अधिक हैं जिनका मुख्य धन्धा रूई का कारोबार है ।[3] मुस्लिम जनसंख्या में जुलाहा कपड़े बनाने,कसाई मांस बेचने एवं जानवर बेचने का कार्य करते हैं । चूरिहार,मनिहार चूड़ियों आदि का धन्धा करते हैं ।

-----:0:-----

1- जोशी ईला बसन्त,झाँसी गजेटियर,लखनऊ 1965, पृष्ठ 84.

2- वही.

3- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्काल,पृष्ठ 26.

खण्ड - स

आपराधिक जातियाँ

जिला ललितपुर की प्राकृतिक रचना इस प्रकार की है कि यह हमेशा से कुख्यात अपराधियों का शरण-स्थल रहा है । यद्यपि यहाँ पर अनेकजातियाँ जैसे- नट, कंजड़, बेड़िये, बंजारे आदि अधिकतर पाये जाते हैं ।[1] जिनकी जीविका, अपराध कार्य है । जैसे चोरी, राहजनी, लूट आदि से चलती है, परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के छठवें दशक से यहाँ पर एक सनोड़िया जाति ने बहुत आतंक मचाया था । इनको उठाईगीरे भी कहते थे ।[2] यह सनोड़िया उठाईगीरों का शरण-स्थल इस जनपद में बार, सनवाहो, एवं सजनम गाँव थे जहाँपर अधिकतर पाये जाते थे । इसके अतिरिक्त यह दतिया एवं ओरछा की सीमा-वर्ती सीमा पर भी पाये जाते थे ।[3]

सनोड़ियों की उत्पत्ति :

एक किंवदन्ती के अनुसार कुख्यात अपराधी भग्गा बनजारे के मारने पर मुगल सम्राट ने एक चार सनोड़िया ब्राम्हण बन्धुओं को दो गाँव पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये थे । इस सनोड़िया वंश के एक

1- चन्देल और उनका राजत्वकाल, मिश्र केशवचन्द्र, संवत् 2011, पृष्ठ 26, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस.

2- वही.

3- सिंह प्रतिपाल, बुन्देलों का संक्षिप्त इतिहास, भाग-1, पृष्ठ 209, हितचिन्तक प्रेस, बनारस, संवत् 1985.

परिवार जिला ललितपुर में भग्गा बंजारे की हत्या सम्बन्धी अनुदान से प्राप्त ग्रामों में बस गये थे। मेजर हैरिस जो 1858 ई० में चन्देरी में सुपरिन्टेन्डेन्ट था, उसने इन गाँवों का वर्णन किया है।[1]

भिन्न-भिन्न किंवदन्तियों के अनुसार सनौढ़ियों की उत्पत्तियों की भिन्न-भिन्न कथाएं प्रचलित हैं। कुछ लोग इन्हें रावण वंशज मानते हैं।[2] एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार यह पहले भीख माँग कर गुजारा करते थे, परन्तु बाद में आर्थिक तंगी के कारण लुटेरे हो गये।[3] इनके सम्बन्ध में अन्य अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, किन्तु ये किसी विशेष जाति के नहीं हैं। डाकुओं और चोरों का एक समूह है। अपने लिये वे एक निजी सांकेतिक भाषा काम में लाते हैं। इनका कार्य क्षेत्र समस्त उत्तरी भारत है।[4]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, झाँसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद, पृष्ठ 98.

2- सिंह प्रतिपाल, बुन्देलों का संक्षिप्त इतिहास, भाग-1, पृष्ठ 209, हितचिन्तक प्रेस, बनारस, संवत् 1985.

3- वही.

4- सिंह प्रतिपाल, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, भाग-1, पृष्ठ 209-210, तथा ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, पृष्ठ 98.

डकैत

सनोड़ियों उठाईगीरों के अतिरिक्त इस जनपद में डकैतों का भी काफी उत्पात रहा । डकैत यहाँ समूह अथवा गिरोह के रूप में पाये जाते हैं, ऐसा प्रतीत होता है । चोर, लुटेरा का एक बड़ा समूह जिसमें खंगार, गूजर, चमार, मेहतर जिनका कार्य लूटना तथा अन्य अपराध प्रवृत्तियों में लिप्त रहना था । आगे चल कर गिरोह के रूप में परिवर्तित हो गये । इनमें कुछ यहाँ के जमीदारों द्वारा सताये हुये थे, डकैत कहलाये ।[1]

डकैतों की उत्पत्ति एवं आतंक

1857 की असफल क्रांति के बाद असंतोष की भावना चारों ओर बढ़ गयी थी । ब्रिटिश सरकार समस्त जनपद में अपना प्रभाव एवं कानून बड़ी क्रूरता से लागू कर रही थी । उपरोक्त घटनाओं से खिन्न होकर कुछ पेशेवर एवं कुछ बेकार युवकों का एक समूह, गैंग के रूप में 1871 में प्रकट हुआ ।[2] 1875 में इस गैंग के सरदार दिलीपसिंह एवं रणधीर सिंह पकड़े गये ।[3]

1889 ई0 में यद्यपि इन वर्षों में चारों ओर शान्ति हो चुकी थी, फिर भी अचानक डकैतों का फिर उपद्रव आरम्भ हो गया । इस वर्ष फरवरी से सितम्बर के बीच 3 बड़े पुलिस थानों में 36 डकैती

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर 1965, पृष्ठ 227.
2- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल, पृष्ठ 26.
3- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर 1965, पृष्ठ 227.

एवं 14 बड़ी डकैतियाँ पड़ीं । ये थाने थे - बाँसी, बानपुर, तालबेहट। इन डकैतियों में कुख्यात डकैत बनाफर जो सरूपसिंह के नाम से भी जाना जाता था, का प्रमुख हाथ था । इसके अतिरिक्त दो अन्य डकैत कल्याण सिंह एवं महीपसिंह भी इस जनपद में सक्रिय थे ।[1]

अपराध रोकने के उपाय

सर्वप्रथम सरकार ने सनोड़ियों को दबाने एवं उनके अपराध-कार्यों को रोकने के लिये अनेक प्रयास किये । 1874 में ओरछा राज्य ने सीमावर्ती गाँव में सनोड़ियों से गाँव की रक्षा के लिये एक विशेष अधिकारी नियुक्त किया ।[2]

1864 से 1874 के अन्तर्गत् सनोड़िये (क्रीमिनल ट्राईब एक्ट XXVII, 1871 के तहत) पकड़े गये ।[3] 1883 में सरकार ने उन्हें जमीन देकर सामाजिक रूप में बसाने का प्रयास किया, परन्तु यह स्कीम सफल नहीं हो पायी ।[4]

डकैती रोकने के कार्य

1889 ई0 की भयंकर डकैती, आतंक से निपटने के लिये अतिरिक्त पुलिस-दल जिला ललितपुर भेजा । 6 अक्टूबर 1890 में सेक्सन 15 असलाहा निरोधक कानून लागू किया (15 आर्म्स एक्ट-

---

1-जोशी ई0 बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 227.

2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झाँसी गजेटियर 1909, पृष्ठ 99-100.

3- वही.

4- वही.

x। आफ़ 1878) जिसके अन्तर्गत् कोई भी व्यक्ति बिना लाइसेन्स के कोई असलाहा नहीं रख पाएगा । इस कानून के फलस्वरूप सरकार को 1,574 बन्दूकें, 1,344 तलवारें तथा 274 विभिन्न प्रकार के असलाहा प्राप्त हुए । इस प्रकार 1891 में छुटपुट डकैतियों को छोड़ कर शांति रही, परन्तु 1898-99 में खतरनाक करार खेरा गैंग का फिर आतंक फैलने लगा जो मई 1899 में समाप्त हुआ ।[1]

------:0:------

1- जोशी ई0बी0, तथा ब्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झांसी गजेटियर 1965; पृष्ठ 158-159.

खण्ड - द

ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थिति को सुधारने के लिये किये गये उपाय

1857 ई० की क्रांति, 1858 ई० के मध्य तक चली थी। 1858 के मध्य तक बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लगभग समस्त भाग पर ब्रिटिश सरकार का आधिपत्य हो गया था। ब्रिटिश सरकार के अधिकार के समय यह क्षेत्र समस्त जनपद के छोटे-छोटे बुन्देला जागीरदारों की जागीरों में बँटा था। जमीदारों को केवल जमीनों को पट्टे पर देकर खेती कराना एवं लगान अथवा भूमि-कर वसूल करना, इसके अतिरिक्त जमीदार अधिकतर विलासिता में डूबे रहते, उन्हें उस समय के समाज एवं संस्कृति के उत्थान का तनिक भी ध्यान नहीं था, जो रस्म-रिवाज प्राचीन समय से चले आरहे थे, वही चल रहे थे। बाजार भाव, जमीन की पैमाइश, सिंचाई, उद्योग धन्धों अथवा कुटीर उद्योग, समाज में साक्षरता एवं शिक्षा की कमी की ओर बहुत कम ही ध्यान देते थे।

ब्रिटिश सरकार द्वारा किये गये आर्थिक कार्य :

सर्वप्रथम 1860 ई० में जिला ललितपुर नार्थ-वेस्टर्न प्राविंस का एक स्वतन्त्र जिला घोषित किया गया, जिसका हैड क्वाटर ललितपुर नगर को बनाया गया[1] एवं समस्त जनपद जिलाधिकारी के अन्तर्गत् आ गया। इस समस्त जनपद में पुलिस एवं अन्य व्यवस्थाएं

1- जोशी ई०बी०, झांसी गजेटियर, पृष्ठ 2.

कायम की गयीं । 1862-84 ई0 में जिला ललितपुर जनपद का प्रथम बन्दोवस्त-कार्य §सेटिलमेन्ट§ हुआ ।[1] जिसमें खेतिहर भूमि की पैमाईश, जनसंख्या की गणना §जनगणना§ पशु गणना, भूमि की दरें, वनों की उपज, सिंचाई के साधन, बाजार-भाव , बाजार में बिकने वाली वस्तुओं का हिसाब, कुटीर उद्योग आदि का हिसाब बनाया गया ।

इस क्षेत्र का प्रसिद्ध खरूआ वस्त्र उद्योग पिदेशी कपड़े के आगे मंदा पड़ गया । अन्य कुटीर उद्योग जैसे-तालबेहट के कोरियों का कम्बल उद्योग, मड़ौवरा का नक्काशीदार बर्तनों का उद्योग, तालबेहट एवं ललितपुर कृषि यन्त्रों के हैण्डल एवं परदों के स्टेण्ड एवं घोड़े की जीनें बनती थीं । यह उद्योग भी विदेशी निर्मित वस्तुओं के आगे दब गये ।[2] केवल कैप्टन टेलर ने कुछ मुस्लिम जुलाहों को चन्देरी से लाकर ललितपुर नगर में बसाया था जिससे चन्देरी का साड़ियों के बनाने का उद्योग ललितपुर में पनपे, परन्तु 1865 की हैजे §महामारी§ की बीमारी में वह जुलाहे या तो मर गये, या वापिस चन्देरी लौट गये । इस कारण कुछ वह उद्योग ललितपुर में स्थापित नहीं हो पाया ।[3]

1- जोशी ई0 बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 207.

2- वही; पृष्ठ 144.

3- एटकिन्सन ई0 टी0, पृष्ठ 348.

समाज एवं शिक्षा के उत्थान के उपाय :

वैल्ली महोदय के अनुसार इस जनपद में विभिन्न प्रकार के कई धर्मों के लोग निवास करते हैं । जैसे- हिन्दू,मुस्लिम,जैनी, इसाई आदि । परन्तु हिन्दू धर्म का बहुमत है ।[1] जहाँतक जनपद में हिन्दू-मुस्लिम धर्मों का सवाल था वह यहाँ पहले से ही रहने वाले थे,परन्तु एक नया धर्म "इसाई" ब्रिटिश सरकार के द्वारा ही इस जनपद में आया । इसका उदय इसाई मिशनरियों द्वारा यहाँ की निर्धन एवं अछूत लोगों को धर्म परिवर्तन द्वारा किया गया, इससे यहाँ के समाज को कोई लाभ नहीं मिला ।

शिक्षा के सम्बन्ध में जरूर नये क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। 1861 में पुराने मदरसों एवं पाठशालाओं के अतिरिक्त नये स्कूल खोले गये जिसमें आधुनिक पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन प्रारम्भ हुआ । यह सर्वप्रथम तहसील स्तर पर खोले गये थे । जैसे- ललितपुर,मेहरौनी, मड़ावरा आदि में ।[2] इसके अतिरिक्त 1865 से 1874 में इस क्षेत्र में कुछ असामाजिक तत्व उठाईगीरे,सोनारई का जोर बढ़ गया था, जिनका प्रमुख कार्य लूट-मार करना था । 1874 में विशेष अधिकारी नियुक्तकर इन्हें दबाया गया ।[3]

1- वैल्लीस, सेन्सस आफ इण्डिया,भाग-1,वो0 16,एन0डब्लू0पी0, एण्ड अवध, इलाहाबाद,पृष्ठ 173.

2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 147.

3- वही; पृष्ठ 99-100.

कृषि के लिये किये गये उपाय

1892 के फाइनल सेटिलमेन्ट, ए०कालविन, सचिव राजस्व बोर्ड के अनुसार जनपद की 53•25 प्रतिशत जनसंख्या कृषि-कार्य पर निर्भर थी ।[1] परन्तु वह पूर्णरूप से वर्षा पर निर्धारित थी । समय पर मानसून आने पर खेती अच्छी होती, नहीं तो अकाल का भय बना रहता था । प्रथम सेटिलमेन्ट के समय जनपद में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की मिट्टियों का वर्गीकरण करके उनकी दरें निर्धारित कीं ।[2] दूसरे स्थान पर कृषि के लिये सिंचाई की आवश्यकता थी जिसका जनपद में बहुत अभाव था । इसके लिये सिंचाई के साधन बढ़ाये गये । नये कुएं खोदे गये एवं पुराने कुओं और झीलों एवं तालाबों की मरम्मत की गयी । दूसरे सेटिलमेन्ट के समय जनपदों में कुल 11,662 कुएं थे जिसमें 8,195 पुराने थे एवं 3,467 सरकार ने नये बनवाये थे ।[3] नरहट, पाली, सनोरी, जमालपुर आदि प्राचीन तालाबों की सफाई एवं मरम्मत की गयी ।[4] उपरोक्त कार्य करने से किसानों को राहत मिली एवं कृषि कार्य में तेजी आयी। इसका मुख्य प्रमाण 1869 ई0 में जनपद ललितपुर में 23•79 प्रतिशत भूमि पर खेती होती थी । 1803 के सेटिलमेन्ट रिपोर्ट के अनुसार यह बढ़कर 23•67 प्रतिशत हो गयी थी ।[5]

1- जेनकिन्सन ई0जी0, (फारवर्ड नोट ए0काल्विन) पृष्ठ-

2- पिम ए0डब्लू0, फाइनल सेटिलमेन्ट रिपोर्ट द रिवीजन आफ द झाँसी-डिस्ट्रीक्ट फार ललितपुर, 1907, पृष्ठ 5•

3- झाँसी गजेटियर, जोशी ई0बी0, लखनऊ 1965, पृष्ठ 103•

4- वही; पृष्ठ 111•

5- रिपोर्ट आफ द सेटिलमेन्ट आफ झाँसी डिस्ट्रिक्ट, इलाहाबाद 1871•

उद्योग धन्धों सम्बन्धी किये गये उपाय

जहाँतक उद्योग-धन्धों एवं कुटीर उद्योग की उन्नति की बात है, इस क्षेत्र में ब्रिटिश सरकार ने कोई महत्वपूर्ण उपाय नहीं किया । अर्थात् कुटीर उद्योग एवं अन्य बड़े उद्योग को प्रोत्साहन न देकर उन्हें दबाया था । इसका कारण यह था कि वह बाजार में ब्रिटेन की निर्मित वस्तुओं की बिक्री बढ़वाना चाहते थे ।

-----:0:-----

खण्ड - ई

जनगणना का गुणात्मक विश्लेषण

जिला ललितपुर की जनसंख्या का विश्लेषण करने पर यहाँ को आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति की सही जानकारी प्राप्त होती है कि कितने व्यक्ति पढ़े-लिखे हैं, उनका क्या धन्धा है ।

सन् 1865 ई0 की प्रथम जनगणना के अनुसार जिला ललितपुर की जनसंख्या 2,48,146 लाख थी एवं सेना की संख्या 552 थी ।[1] जिला ललितपुर का कुल क्षेत्रफल 1,947 वर्ग मील में जनसंख्या का घनत्व 127 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग मील था ।[2]

वर्ष	झाँसी	ललितपुर	कुल योग
1865	3,57,442	2,48,146	6,05,588
1872	3,17,826	2,12,661	5,30,487
1881	3,33,227	2,49,088	5,82,315
1891	4,09,459	2,74,200	6,83,659
1901	3,68,270	2,48,489	6,16,759

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 83.

2- वही; पृष्ठ 84-86.

1865 ई0 की जनगणना के बाद अगली जनगणना 1872 ई0 में हुई थी । 1865 ई0 में जनसंख्या का घनत्व 127 व्यक्ति प्रति वर्ग मील था जो घट कर 109 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग मील रह गया था ।[1] इसका मुख्य कारण 1868-69 का भीषण अकाल था जिसके कारण अधिकतर व्यक्ति रोजी-रोटी की तलाश में जिला ललितपुर छोड़कर अन्य स्थान पर चले गये थे या फिर वह मर गये ।[2] 1872 ई0 की जनगणना के अनुसार जिला ललितपुर की जनसंख्या 2,12,661 लाख थी ।[3]

जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग मील[4]

वर्ष	झाँसी	ललितपुर	आर्थिक सूची (स्थिति)
1865	222	127	
1872	203	109	1868-69 ई0 के भीषण अकाल का समय•
1881	212	128	सुखद वर्ष•
1891	249	141	सुखद वर्ष•
1901	137	127	1894 से 1897 का अकाल•

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 75•

2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 85-86•

3- पलोडन डब्लू0सी0, सेन्सस नार्थ-वेस्ट प्रोविन्स, खण्ड-1, इलाहाबाद-1873, एब्सट्रेक्ट-ए•

4- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 84-86•

सन् 1872 ई0 की जनगणना के बाद अगली जनगणना 1881 ई0 में हुई थी ।[1] 1872 से 1881 ई0 के मध्यवर्ती वर्षों में वर्षा का आगमन समय पर हुआ एवं फसल भी इन वर्षों में अच्छी हुई ।[2] इस कारण आस-पास के स्थानों पर गये लोग फिर वापस जिला ललितपुर आ गये या फिर बाहर से आकर बस गये ।[3] इस कारण जनसंख्या का घनत्व जो प्रति वर्ग मील 109 व्यक्ति रह गया था, बढ़ कर 128 व्यक्ति प्रति वर्ग मील हो गया ।[4] 1881 ई0 कीजनगणना के अनुसार जिला ललितपुर की जनसंख्या 2,49,088 लाख थी ।[5]

सन् 1881 ई0 के बाद अगली जनगणना 1891 ई0 में हुई थी, इस दशक में भी वर्षा का आगमन समय पर हुआ एवं कोई प्राकृतिक विपदा भी नहीं पड़ी, इस कारण जनपद में लगातार बढ़ती रही ।[6] सन् 1891 में जनसंख्या का घनत्व 141 व्यक्ति प्रति वर्ग मील था । 1891 ई0 में जिला ललितपुर की जनगणना कुल 2,74,200 लाख थी ।[7]

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 75.

2- पाठक एस0पी0; झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 31.

3- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 85-86.

4- वही.

5- इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, खण्ड-14, पृष्ठ 139.

6- पाठक एस0पी0, झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश रूल, पृष्ठ 31.

7- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 31.

सन् 1891 ई0 के जनगणना के बाद 1901 ई0 में प्रथम जनगणना जिला ललितपुर और झाँसी की एक साथ हुयी, क्योंकि 1891 में जिला ललितपुर झाँसी जिले में सम्मिलित कर दिया गया था । अब वह जिला झाँसी का सब डिवीजन था ।[1] इस कार्य के दशक के 1844, 1897, 1900 में आंशिक सूखा पड़ा था जिससे अधिकतर लोग सीमावर्ती जिले ओरछा, दतिया एवं मालवा में स्थानान्तरण कर गये थे ।[2] 1901 में जिला झाँसी एवं सब-डिवीजन ललितपुर की कुल जनसंख्या 6,16,759 थी,[3] जिसमें सब डिवीजन ललितपुर की जनसंख्या 2,48,489 लाख थी एवं जनसंख्या का घनत्व 127 प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग मील था (केवल-ललितपुर सब डिवीजन का)[4] इस जनगणना के बाद जिला ललितपुर की जनगणना झाँसी जिले के साथ ही होती रही ।

जिला झाँसी (सब डिवीजन ललितपुर) की जनसंख्या 1911 ई0 1941 ई0 तक ।[5]

वर्ष	जनसंख्या
1911	7,26,377
1921	6,54,650
1931	7,40,614
1941	8,31,043

---:0:---

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 75.
2- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 86.
3- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 75.
4- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 86.
5- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 76.

अध्याय - अष्टम

शिक्षा और साहित्य

अध्याय - 8

शिक्षा और साहित्य

बुन्देलखण्ड प्राचीनकाल से ही साहित्य एवं कला का केन्द्र रहा है । एक किंवदन्ती के अनुसार महर्षि बाल्मीकि ने रामायण की रचना इसी प्रदेश में की थी । "मेघदूत" के रचयिता कवि कालीदास ने अपने काव्य में इस क्षेत्र का वर्णन किया है ।[1]

> तीरोपात स्तनित सुभगं पास्यसि स्वादुयस्मृ ।
> त्सभ्रूभंग मुखमिव पयो बेत्रव त्याश्चलोर्मि ।।[2]

हिन्दी साहित्य के सर्वप्रथम कवि जगनिक ने अपनी "आल्हा" काव्य की रचना इसी प्रदेश में की थी ।[3] कविवर तुलसीदास ने "राम-चरित मानस" की रचना भी इस प्रदेश में ही की थी । केशव, बिहारी, भूषण, मैथिलीशरण गुप्त तथा महावीर प्रसाद, वृन्दावन लाल वर्मा आदि लेखक भी इस प्रदेश की शोभा बढ़ा चुके हैं ।

1- गौर लक्ष्मण सिंह, ओरछा का इतिहास, पृष्ठ -1, सन् 1975.
2- वही.
3- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल, पृष्ठ 129.

चन्देलकाल में गदाधर, माधव,[1] राम,[2] नन्दन तथा कीर्ति बर्मन के दरबारी नाटककार कृष्ण मिश्र ने बहुमूल्य संस्कृत साहित्य की रचना की ।[3]

बुन्देलखण्ड की साहित्यिक सम्पत्ति के बारे में बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध कवि मुंशी अजमेरी ने निम्नलिखित पद्य कहा है :-

तुलसी, केशव, लाल बिहारी, श्रीपति गिरधर,
रसनिधि रायप्रवीन, पजन, ठाकुर पदमाकर,
कविता-मन्दिर-कलश सुकवि कितने उपजाये,
कौन गिनावे नाम, जपे कितने गुन गाये ।[4]

यह कामनीय काव्य-कला की नित्य भूमि है ।
सदा सरस बुन्देलखण्ड साहित्य भूमि है ।।[5]

1- एपिग्राफी इण्डिया, भाग-1, पृष्ठ 123.

2- वही.

3- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल, पृष्ठ 216.

4- मित्र हयारण राजकमल, बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य-1969, दिल्ली.

5- जैन श्रीचन्द, बुन्देली लोक साहित्य, पृष्ठ 9, स्मृति प्रकाशन-इन्दौर .

बुन्देली भाषा :

इस क्षेत्र की मुख्य भाषा बुन्देली है । 1931 की जनगणना के अनुसार जनपद झाँसी (सब डिवीजन ललितपुर सहित) 6,79,700 लोग बुन्देली भाषा वाले हैं ।[1] समस्त बुन्देलखण्ड में 6 प्रकार की बुन्देली भाषा बोली जाती है । यथा-

1- दतिया की बुन्देली
2- पन्ना की बुन्देली
3- ओरछा की बुन्देली
4- सागर की बुन्देली
5- झाँसी की बुन्देली
6- ग्वालियर की बुन्देली[2]

इन सभी जनपदों की बुन्देली भाषा में कुछ न कुछ अन्तर है । जिला झाँसी एवं जिला ललितपुर की बुन्देली भाषा में भी काफी अन्तर है।[3]

ललितपुर जनपद की साहित्यिक चेतना :

बुन्देलखण्ड क्षेत्र का यह जनपद साहित्यिक क्षेत्र में काफी पिछड़ा रहा, क्योंकि इस जनपद के चारों ओर ओरछा, चन्देरी, ग्वालियर, झाँसी, टीकमगढ़, पन्ना, रीवा जैसे रियासतें होने के कारण कवियों और लेखकों

1- गीयरसन, जार्ज, लेंग्वेस्टिक, सर्वे आफ इण्डिया 1973, खंड-9, पृ0 86.
2- जैन श्रीचन्द्र, बुन्देली लोक साहित्य, इन्दौर, पृष्ठ 24.
3- शुक्ल उमाशंकर, बुन्देलखण्ड के लोक गीत, पृ0 20, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद 1973.

को वहाँ आश्रय मिल जाता था । इस कारण अधिकतर इस क्षेत्र के बड़े कवि,लेखक कम रहे ।

इस क्षेत्र में सर्वप्रथम कारबेग (1700-1770) चर्चित एक मुस्लिम कवि हुए जिन्होंने हिन्दी में "श्री लाल बाबा दारा शिकोह की गोश्ता," नामक काव्य संकलन लिखा था । यह ललितपुर में जन्मे थे ।[1] 1834-1882 में ललितपुर में एक हिन्दी के नारायण कवि नाम के कवि हुये जिन्होंने "शतरितु" एवं"नामक भेद" नाम की दो पुस्तकें लिखीं ।[2] 1824-1880 में सरदार नामक कवि हुए जो ललितपुर नगर में जन्मे थे ।[3] इसके अतिरिक्त अरकूलाल वैद्य (1852-1935) ललितपुर में जिनका ग्रन्थ परिजात रामायण था ।[4] वनमाली व्यास,1855,तालबेहट ग्रन्थ, व्यास चौरासी बनमाली बहार ।[5] 1855 परमानन्द नाम के ललितपुर में एक कवि हुए जिन्होंने 35 ग्रन्थ लिखे । कुछ मुख्य इस प्रकार हैं - बिक्रम विलास,प्रमोद रामायण,माधव-विलास ।[6] तालबेहट में राजधर लाल कायस्थ (1867-1930) एवं सुशील कवि 1874-1950 के दो अन्य कवि हुए । उर्दू साहित्य में औलाद हुसन क़मर प्रमुख हैं ।[7]

1- जोशी ई०बी०, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 283-284.
2- वही.
3- वही.
4- वही.
5- वही.
6- वही.
7- वही.

खण्ड - अ

ब्रिटिश सरकार के पूर्व स्कूलों की स्थिति

ब्रिटिश शासन से पूर्व इस जनपद में प्राचीन हिन्दू शिक्षा पद्धति एवं मध्यकालीन मुस्लिम शिक्षा पद्धति कायम थी ।[1] प्राचीन हिन्दू पद्धति में पढ़ने और पढ़ाने वाले अधिकतर ब्राम्हण होते थे ।[2] पाठशालायें अधिकतर गुरू अथवा शिक्षक का घर या कुटिया होती थी ।[3] यहाँ पर धर्मशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, व्याकरण, अर्थशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी ।[4]

मुस्लिम शासन आने पर अथवा मध्यकालीन युग में शिक्षा मकतब में दी जाती थी ।[5] जो अधिकतर मस्जिद के साथ जुड़े होते अथवा मस्जिद में ही होते थे । जहाँ पर मौलवी शिक्षा देते थे । इन मकतब, मदरसों का खर्च सरकारी अनुदान से चलता था ।[6] इन मकतबों में कुरान, हदीस, गणित आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी । इस प्रकार इस क्षेत्र में सभी प्रकार की शिक्षाएं दी जाती थीं ।

-----:0:-----

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर 1965, लखनऊ, पृष्ठ 267.
2- वही.
3- वही.
4- वही.
5- वही.
6- वही.

खण्ड - ब

शिक्षा के विकास में अंग्रेजों का योगदान

1858 ई0 के संघर्ष के पश्चात् ब्रिटिश सरकार का सर्वप्रथम ध्यान शिक्षा की ओर गया । 1858 में सर्वप्रथम तहसील स्कूल खोले गये । झांसी-ललितपुर क्षेत्र में जो तहसील स्कूल खोले गये, वह सभी तहसील मुख्यालयों में थे । झांसी, करेरा, पिछोर, मोठ, गरौठा, भाण्डेर, मऊ एवं पण्डवाहा ।[1]

1859-60 ई0 में कुछ गाँव में भी स्कूल खोले गये जिनकी संख्या 38 थी । इन स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या 2,141 थी ।[2] इन्हीं वर्षों में तहसील ललितपुर, मेहरौनी, और मड़ावरा में भी तहसील स्कूल खोले गये ।[3] 1862 में गाँव के स्कूलों की संख्या बढ़ कर 76 हो गयी जिसमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ कर 2,185 हो गयी ।[4] इस वर्ष काफी बड़ी संख्या में निजी स्कूल भी प्रारम्भ हो गये ।[5] 1862 ई0 में ही झांसी में एंग्लो वर्नाक्यूलर और मिडिल वर्नाक्यूलर ललितपुर में प्रारम्भ किये गये ।[6] 1861 ई0 में एक तहसील स्कूल तालबेहट में भी खोला गया ।[7]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झांसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद॰पृ0 174॰
2- वही; पृष्ठ 174॰
3- जोशी ई0बी0, झांसी गजेटियर 1965, लखनऊ, पृष्ठ 268॰
4- वही॰
5- वही॰
6- वही॰
7- वही॰

पाठ्यक्रम :

उपरोक्त स्कूलों में पाठ्यक्रम मुख्यतया तीन भागों में बाँटा गया जो निम्न प्रकार हैं :-

(1) सर्वप्रथम जिला स्कूल जो हाई स्कूल स्तर के थे, उनमें वर्नाक्यूलर, अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं फारसी अथवा संस्कृत की शिक्षा दी जाती थी ।[1] शिक्षा शुल्क 3 आना (18 पै0) था ।[2]

(2) तहसील स्कूल में वर्नाक्यूलर, इतिहास, गणित, भूगोल की शिक्षा दी जाती थी । जनपद ललितपुर में पाठ्यक्रम अधिकतर हिन्दी में था ।[3]

(3) तहसील एवं हलका-बन्दी स्कूल का पाठ्यक्रम सरल एवं प्रारम्भिक था ।[4] निजी पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में बहीखाता, गणित, तथा व्यापारिक विषय, मुड़िया भाषा पढ़ाये जाते थे ।[5]

शिक्षा प्रबन्ध-विभाग :

समस्त शिक्षा एवं विद्यालय एक डिप्टी एवं दो सब डिप्टी इन्सपैक्टर के अधीन किया गया जो जिलाधीश के अधीन कार्य करते थे । झाँसी सब डिवीजन ललितपुर, आगरा क्षेत्रीय शिक्षा विभाग के आधीन रखा गया ।[6]

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर 1965, लखनऊ, पृष्ठ 269.
2- वही.
3- वही.
4- वही.
5- वही.
6- वही; पृष्ठ 267.

1884 ई0 में प्राइमरी शिक्षा का प्रबन्ध स्थानीय निकायों को दे दिया गया एवं इसके ऊपर की शिक्षा प्रान्तीय सरकार के आधीन रखी गयी ।[1]

------:0:------

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 267.

खण्ड - स

अंग्रेजीकाल में नारी शिक्षा की दशा

ब्रिटिश शासन से पूर्व इस क्षेत्र में स्त्री-शिक्षा नगण्य थी । हिन्दू लड़कियों को धर्मशास्त्र तक शिक्षा दी जाती थी । मुस्लिम समाज में स्त्री शिक्षा की दशा तो अत्यन्त शोचनीय थी, लड़कियों को अधिकतर पर्दे में रखा जाता था । घर पर ही कुरान एवं हदीस की शिक्षा दी जाती थी । स्त्री-शिक्षा के विषय में ब्रिटिश सरकार ने प्रशंसनीय कदम उठाया ।

1866 ई० में सर्वप्रथम स्त्री-शिक्षा का शुभारम्भ हुआ जो इस क्षेत्र के इतिहास में एक क्रांतिकारी कदम था ।[1]

1866 ई० के प्रारम्भ में जिला ललितपुर में प्रथम लड़कियों का स्कूल खोला गया ।[2] यह केवल एक प्रयोग किया गया था जिससे कि यहाँ की जनता का दृष्टिकोंण, स्त्री-शिक्षा के बारे में पता चल सके, परन्तु इस प्रयोग से निराशा नहीं हुई, क्योंकि यहाँ की जनता ने इसका वहिष्कार न करके उसमें रूचि दिखलायी ।[3]

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 174.

2- जोशी ई०बी०, झाँसी गजेटियर 1965, पृष्ठ 268.

3- ड्रेक ब्रोकमैन डी०एल०, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 174.

1868 ई0 में इस जनपद में जिला स्तर की स्त्री-शिक्षा दी जाने लगी ।[1] 1870 ई0 में चार,लड़कियों के स्कूल इस जनपद में और खोले गये । चार तहसील स्तर के मेहरौनी तहसील में,एक इसी स्तर का स्कूल ललितपुर नगर में खोला गया ।[2] चारों स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या 116 थी ।[3]

1872 ई0 में झाँसी जनपद में 7 लड़कियों के स्कूल चल रहे थे और जिला ललितपुर में इनकी संख्या 10 हो गयी थी जिनमें विद्यार्थियों की संख्या 384 थी ।[4] परन्तु 1875 में छह स्कूलों को बन्द करना पड़ा,क्योंकि विद्यार्थियों की संख्या अचानक घट गयी ।[5]

1880 ई0 में ललितपुर में लड़कों के स्कूल की संख्या जहाँ 98 थी,जिनमें 2,190 विद्यार्थी थे,वहाँ लड़कियों के स्कूल की संख्या 3 रह गयी,जिसमें 60 विद्यार्थी थे ।[6]

इस प्रकार बाद में सरकार ने शिक्षा की ओर ध्यान दिया, जिससे जनपद के विकास में मदद मिली ।

------:0:-----

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 268.
2- वही.
3- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 175.
4- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 268.
5- वही.
6- वही.

खण्ड - द

शिक्षित वर्ग

गाँव, नगर एवं जिला में स्कूलों के खुलने पर लोगों को पढ़ाई-लिखाई में रुचि बढ़ने लगी । 1881 से लेकर 1931 ई0 तक झाँसी, सब डिवीजन ललितपुर में साक्षरता का प्रतिशत निम्न-लिखित सूची के अनुसार था ।[1]

वर्ष	पुरुष	स्त्री
1881	5·4%	·07%
1891	7·2%	·22%
1901	7·7%	·03%
1921	10·1%	·03%
1931	11·8%	1·3%

------:0:------

1-जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, पृष्ठ 270·

अध्याय नवम्

निष्कर्ष

अध्याय - 9

निष्कर्ष (उपसंहार)

ललितपुर जिले की सामाजिक व आर्थिक इतिहास के विभिन्न पहलुओं (1866-1947) के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र को पूरे अंग्रेजी शासन काल में उपेक्षित बनाये रखा गया । इसका कारण यह है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में यह भू-भाग अब भी यहाँ के सभी जिलों की तुलना में अधिक पिछड़ा है ।

यह स्पष्ट है कि 1866 में चन्देरी से पृथक होने के बाद ललितपुर को एक जिले का रूप दिया गया था, किन्तु 1890 में इस जिले को समाप्त कर झाँसी के सब डिवीजन के रूप में इसे मिला दिया गया । वास्तव में अंग्रेजी शासन एक विदेशी शासन होने के नाते भी इस क्षेत्र के विकास में दिलचस्पी नहीं रखता था, वल्कि राजस्व वसूल करना व लोगों का अधिक से अधिक आर्थिक उत्पीड़न करना एक मात्र उद्देश्य था । पर यह देखा गया कि ललितपुर जिले के कर्मचारियों व अधिकारियों आदि के खर्चों को काटकर यहाँ से प्राप्त होने वाली आय कम हो, तब ऐसी स्थिति में ललितपुर जिले

को तोड़कर झाँसी में मिला दिया गया । इसके पीछे मुख्य उद्देश्य आर्थिक ही था । यदि यह जिला किसी न किसी रूप में बना रहता तो निश्चित् था कि लोगों को कुछ प्रशासनिक सुविधाएं अवश्य मिली होतीं ।

सबसे बड़ा दुर्भाग्य का विषय तो यह था कि चन्देरी जो कि ललितपुर के पड़ोस में स्थित है जो अपने शिल्क व साड़ियों के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध रहा हो,उस उद्योग को ललितपुर में खोलने की कोई व्यवस्था नहीं की गयी । एक बार अवश्य ऐसा हुआ,जब चंदेरी के साड़ी बुनकरों को ललितपुर लाकर बसाया गया,किन्तु वहाँ पर हैजा की बीमारी के कारण यह बुनकर मर गये । तब पुन:अन्य बुनकरों को काम व सुविधाएं देने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया । नि:सन्देह यह उद्योग चन्देरी में विकसित हो सकता था तो उसके विकास की ललितपुर में भी अधिक सम्भावनाएं थीं,किन्तु अंग्रेज सरकार की निषेधात्मक कर-नीति तथा जनकल्याण की भावना का अभाव के कारण से ललितपुर में शिल्क व साड़ी उद्योग के विकास के लिये कोई प्रयास नहीं हुआ ।

अंग्रेज शासनकाल में चन्देरी व ललितपुर के बीच समय-समय पर क्षेत्रों का आदान-प्रदान होता रहा । प्रशासनिक दृष्टि से कुछ गाँवों को चन्देरी तथा कुछ चन्देरी के गाँवों को ललितपुर में मिलाया जाता रहा,ऐसा करने से उन गाँवों के लोगों के दिमाग में यह डर व्याप्त हो गया था कि प्रशासनिक दृष्टि से वे चन्देरी में रहेंगे या उन्हें ललितपुर में भेज दिया जाएगा । इस प्रशासनिक परिवर्तन के डर

के कारण गाँवों में बसे किसानों ने खेती के विकास में दिलचस्पी नहीं ली । निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखकर हम ललितपुर जनपद की सामाजिक व आर्थिक पृष्ठ भूमि का निष्कर्ष निकाल सकते हैं ।

------:0:------

अध्याय - 9

खण्ड - अ

प्राथमिक आपदाओं से उत्पन्न आर्थिक कठिनाइयाँ तथा पड़ोसी रियासतों का शत्रुतापूर्ण व्यवहार •

जनता ने न केवल ब्रिटिश सरकार द्वारा 1857 में उठाये गये दण्डात्मक नियमों को झेला, वरन् उन्हें प्राकृतिक आपदाओं और उनके द्वारा आर्थिक स्थिति पर पड़े कुप्रभावों को भी झेलना पड़ा। बारम्बार अकाल और बाढ़ तथा इनके द्वारा उत्पन्न रोग, कांस-घास का बार-बार उत्पन्न होना तथा भूमि की उर्बरा शक्ति का क्षरण होना आदि जनता की कठिनाइयों के कारण थे। इन प्राकृतिक आपदाओं से न केवल जनता के धैर्य व मनोबल की परीक्षा हुई, वरन् इसको ईश्वर की बिडम्बना को ही दोष दिया जाने लगा। अकाल का इतना दुष्परिणाम् हुआ कि जनता का बहुत बड़ा भाग उपजाऊ और समृद्ध क्षेत्रों जैसे- मालवा और गुजरात, जिनकी प्रसिद्धि इस सम्बन्ध में दूर-दूर तक थी[1], की ओर पदार्पण कर गया। क्षेत्र में वे नागरिक जिन्हें इस भूमि से अत्यधिक लगाव था और जिन्होंने 1857 के कठिन दिनों में भी इसे छोड़ना उचित नहीं समझा। वे भी आर्थिक कठिनाइयों का बोझ ज्यादा दिन सहन नहीं कर सके और वे दूसरे क्षेत्रों को चले गये। अकाल का भयावह परिणाम जिसने नागरिकों के

1- सिंह प्रतिमाल, पृष्ठ 104.

दिमाग पर गहरा असर डाला । वही घटनाएं आज भी कथानक के रूप में प्रचलित हैं ।[1] इन हतोत्साहित परिणामों के कारण कृषक खेती न करने के लिये विवश व कटिबद्ध हो गये थे । इस तरह क्षेत्र का बड़े हिस्से में खेती नहीं की गयी । लोगों की उक्त धारणा आर्थिक स्थिति के लिये बहुत भयावह सिद्ध हुई और इससे लोगों में हीनता और भुखमरी बढ़ गयी तथा जनपद जिसमें,साधारण समय में भी खाद्य पदार्थों की कमी थी,यह कमी और बढ़ गयी ।[2]

पड़ोसी रियासतों के शत्रुतापूर्ण व्यवहार से आर्थिक स्थिति को भी दूसरा धक्का लगा । स्थिति की कठिनता का लाभ उठाकर ओरछा राज्य ने ब्रिटिश सरकार को 1857 में मदद करते हुए परगना-मऊ,पण्डवाहा और गरौठा को जीत लिया । ओरछा के सैनिकों ने जनपद के उक्त परगनों के साथ अन्य परगनों के किसानों को न केवल हानि पहुँचाई,वरन् उनके घरेलू जानवरों को भी छीन लिया और उनसे 10 लाख रूपये जबरन राजस्व के रूप में वसूल किया ।[3] जब जनपद की जनता को ब्रिटिश सैनिकों द्वारा रौंदा जा रहा था,उस समय दतिया की रियासत भी उन कठिन क्षणों में पीछे न रही और कई ग्रामों पर आक्रमण किया ।[4] स्थिति उस समय भयावह हो गयी जब झाँसी की रानी ने भी अपना कानूनी अधिकार और इस क्षेत्र के

1- सिंह प्रतिपाल ,पृष्ठ 104.

2- एटकिन्सन ई0टी0, पृष्ठ 258.

3- वही; पृष्ठ 330.

4- वही.

शासक होने के कारण जनता से राजस्व वसूलना शुरू किया ।[1] ब्रिटिश सरकार द्वारा 1858 में तथाकथित शान्ति स्थापित करने एवं न्यायिक उगाही करना क्षेत्रीय जनता के लिये अन्तिम आघात था ।

इस तरह आर्थिक कठिनाइयों के कारण उत्पन्न भयावह परिणामों के कारण तथा जनपद में 1857 में हुई लूट के कारण तथा जनपद में जमींदार कर्जदार हो गये । भूमि गिरवी रखी जाने लगी । अन्ततः जनपद पूर्ण बर्बादी की कगार पर पहुँच गया ।

------:0:------

1- एटकिन्सन ई0टी0, पृष्ठ 300.

अध्याय - 9

खण्ड - ब

बुन्देली जमींदारों का आर्थिक पतन तथा डकैती का प्रारम्भ

दयनीयता की भयंकर विभीषिका के कारण बहादुर बुन्देला सरदारों का पतन हो गया । बुन्देला सरदार अपने को इस धरती के वास्तविक पुत्र कहते थे । उन्होंने 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ हुई क्रांति को सजीव रखा था, परन्तु इन भयंकर विभीषिकाओं और प्राकृतिक आपदाओं से उत्पन्न कारणों से बुन्देला सरदार आरामतलबी का जीवन जीने लगे जिसके कारण उनमें त्याग व बहादुरी और साहस का ह्रास हो गया । दूसरी ओर उन्होंने अपनी जागीरों की ओर भली प्रकार ध्यान नहीं दिया जिससे उनकी जमींदारी यहाँतक कि खेतिहरों की भाँति मूल्य कम हो गया ।[1] यह कहावत कि "दीवान का पुत्र अपने गाँव के बारे में क्या जान सकता है ।"[2] चरितार्थ होने

1- पिम ए0 डब्लू0, पृष्ठ 9.

2- वही.

लगी जो उनकी कृषि से दूर भागने की प्रवृत्ति की द्योतक थी । बुन्देला ठाकुरों ने अपनी बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति के बावजूद अपनी पुराने दिनों की शान-औ-शौकत बनाये रखने के लिये भरसक प्रयत्न किये ।[1] वास्तव में जोतदारों से भू-राजस्व या लगान वसूल करने के अलावा उनके पास आय का कोई साधन न था । उनके बढ़ते हुए परिवारों के कारण हुए पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे से यह आय भी कम पड़ गयी । जागीरदारी प्रथा से उत्पन्न फिजूल व्यय तथा प्राकृतिक आपदाओं से बर्बाद हुई कृषि के कारण उनके भारी व्यय के लिये कोई रास्ता नहीं बचा था । अत:उन्होंने साहूकारों से जैसे- जैन,मारवाड़ियों से अपनी जमीन को गिरवी रखकर रुपया उधार लिया ।

केवल ललितपुर परगने में ही जहां बुन्देलों का बाहुल्य था, बन्दोवस्त अधिकारी पिम ने 1903 के भूमि एकीकरण अधिनियम के 40 वर्षों के अन्दर 70,000 एकड़ भूमिका ह्रास पाया ।[2] भूमि के इस उलटफेर के कारण दूसरे खेतिहरों पर भी असर पड़ा । पर बुन्देला ठाकुरों का नुकसान अत्यधिक था ।

इस अत्यधिक गरीबी के बहुत ही दुष्परिणाम हुए और इससे इस क्षेत्र में डाकुओं के कई नये-नये गुटों को जन्म दिया । इन गुटों में मुख्यत: वे बुन्देला ठाकुर थे,जो अत्यधिक आर्थिक दबाव में

1- पिम ए0 डब्लू0, पृष्ठ 19.
2- ड्रेक ब्रौकमैन डी0एल0, पृष्ठ 128.

थे, उन्होंने यह अमानुषिक धन्धा अपनाया । ललितपुर परगना में जहाँ बुन्देले ज्यादा संख्या में थे, इस तरह के अपराध बहुत होते थे और प्रत्येक गाँव में ऐसे डकैतों की संख्या भी अधिक थी ।[1] एक गैंग ने अपना कार्य-कलाप 1871 में दलीप सिंह एवं रन्धीर सिंह के नेतृत्व में शुरू किया । दलीप सिंह जिसे जुलाई 1871 में जेल हुई थी, ललितपुर जेल से भाग निकला और बाद में रन्धीर सिंह जो परगने के विजयपुरा का निवासी था, से मिल गया ।[2] रन्धीर सिंह जो इलाहाबाद सेन्ट्रेल जेल में कैदी था, मंगलिया नाम के आदमी के साथ भाग निकला ।[3] ललितपुर के जंगलों में प्रवेश करके इन्होंने कई डकैतियाँ डालीं । जब इस गैंग की शक्ति 1872 के अन्त में नौ हो गयी, इन्होंने गनेश कुँवर नाम की एक विधवा के यहाँ पर डकैती डाली जिसमें इनके शरीर को काट डाला और उसके तीन पुत्रों की हत्या कर दी ।[4] साथ ही साथ इसने गाँव के तीन-चार और घरों को भी लूटा और लूट के साथ भाग गये ।

1873 की 6 जनवरी से 12 जनवरी के 6 दिनों में इस गैंग ने कई और डाके डाले । इसी माह की 17 तारीख को ललितपुर की एक बनिया लूटा गया एवं कत्ल कर दिया गया ।[5] 14 फरवरी को गैंग का मुखिया दलीप सिंह ललितपुर पुलिस द्वारा आश्चर्यजनक ढंग से घेर कर मार डाला गया । इस गैंग के क्रिया-कलाप जून 1875 तक

1- ड्रेक ब्रौकमैन डी0एल0, पृष्ठ 128.
2- वही; पृष्ठ 158.
3- वही; पृष्ठ 158-159.
4- वही; पृष्ठ 156-157.
5- पिम ए0डब्लू0 पृष्ठ 19.

जबतक चलते रहे,तबतक कि गैंग के कुछ डाकू छोड़कर चले गये व कुछ मार डाले गये ।[1] हालांकि जून 1875 में रन्धीर सिंह की मृत्यु के बाद थोड़ी शान्ती हुई,पर 1899 में यहाँ पर दूसरी लूट-मार की गम्भीर घटना हुई । 1899 के फरवरी से सितम्बर के बीच में 36 डकैतियाँ, 14 चोरियाँ,ललितपुर परगने के ग्राम बाँसी,बानपुर व तालबेहट में हुयीं ।[2]

अंग्रेज सरकार ने इन घटनाओं को रोकने के लिये डिप्टी कमिश्नर लायड की देखरेख में मुख्यत:यूरोपियन पुलिस की नियुक्ति की गयी ।[3] ओरछा व ग्वालियर राज्यों से प्राप्त सहायता के साथ-साथ सरकार ने 6 अक्टूबर 1890 को ललितपुर में आर्म्स एक्ट (11, 1878) की धारा 15 को लागू किया ।[4] इस अधिनियम के अनुसार बिना लाइसेन्स के अस्त्रों को रखना निषेध था । परिणामत: 1574 बन्दूकें, 1344 तलवारें एवं 274 अन्य हथियार ललितपुर परगने में जमा कराये गये ।[5] 1891 में ए0सी0हाकिम को बुन्देलखण्ड के इन घटनाओं को जड़-मूल से समाप्त करने के लिये ए0सी0हाकिम की विशेष अधिकारी के रूप में नियुक्ति की गयी ।[6] परन्तु इससे कोई स्थायी हल नहीं निकल सका और इस क्षेत्र में डकैती की घटनाएं पूर्ववत् चलती रहीं और कई वर्षों तक इस समस्या का कोई समाधान नहीं निकला ।

-------------------- -----:0:----- ---------------

1- पिम ए0डब्लू0, पृष्ठ 19•
2- वही; पृष्ठ 157-158•
3- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0,पृष्ठ 158-159•
4- वही•
5- वही•
6- फौरीजन डिपार्टमेन्ट, पृष्ठ 182-191•

अध्याय - 9

खण्ड - स

जिले का आर्थिक पिछड़ापन अंग्रेजी सरकार की नीति का परिणाम·

ब्रिटिश सरकार की इस जनपद को अविकसित रखने की नीति (पॉलिसी) ही इस जनपद के पतन के लिये निश्चित् रूप से उत्तरदायी है । 1857 की क्रांति के समय इस क्षेत्र के नागरिकों के प्रति ब्रिटिश सरकार को जो भ्रान्तियाँ एवं कठिनाइयाँ हुई थीं, वे सब उसके दिमाग पर छा गयीं । अत:अंग्रेजों ने इस क्षेत्र के विकास के प्रति अपनी आँखें मूँद लीं । वास्तव में 1858 में शान्ती स्थापित हो जाने के बाद इस क्षेत्र के नागरिकों का ब्रि-टिश सरकार अपने हित में कोई उपयोग नहीं कर सकती थी । अंग्रेज केवल भू-राजस्व वसूल करने में दिलचस्पी रखते थे और जनता के विकास व भलाई के प्रति उनका ध्यान नहीं था । उदाहरण स्वरूप - अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में सिंचाई के लिये आवश्यक नहरें आदि नहीं बनायीं । सिंचाई के लिये बहुत समय बाद कुछ योजनाएं बनीं,पर वे क्षेत्र के लिये काफी नहीं थीं । यह योजनाएं भी अंग्रेजों ने यह विश्वास हो जाने पर ही बनायीं कि क्षेत्र में बर्बाद हो रहे पानी को सिंचाई के लिये प्रयोग करके वे ज्यादा से ज्यादा भू-राजस्व बटोर सकते हैं । इससे सिद्ध

होता है कि इन योजनाओं के पीछे जनता की हित करना नहीं था । वरन् उनका प्राथमिक उद्देश्य जनता से ज्यादा से ज्यादा भू-राजस्व बटोरना था । जनपद को अविकसित रखने के लिये अंग्रेज सरकार ने न तो कृषि को कोई प्रोत्साहन दिया और न कृषि करने के ढंग को ही बदलना उचित समझा ।

तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि बेतवा और धसान नदियों के कछारों में बाँध बनाने की योजना बनायी गयी, परन्तु धन के व्यय के कारण इसे छोड़ दिया गया । इसी तरह काँस-घास को समाप्त करने की योजना भी छोड़ दी गयी । इसीलिये गरीब किसानों के पास इन आपदाओं के सामने घुटने टेकने के अलावा अन्य दूसरा रास्ता नहीं था ।

एक ओर कृषक आर्थिक परेशानियों का सामना कर रहे थे, तो दूसरी ओर उद्योग एवं धन्धे में लगे लोगों की भी हालत अच्छी नहीं थी । अंग्रेज सरकार ने इन्हें संरक्षण देने के बजाय स्थानीय उत्पादन हतोत्साहित करने के लिये अत्यधिक कर लगाये ।[1] मऊरानीपुर का प्रसिद्ध खरूआ कपड़ा उद्योग जिसकी ख्याति न केवल चारों ओर फैल रही थी, वल्कि वह अंग्रेजी शासन के पहले अच्छा कमाई का साधन था । इस उद्योग को अंग्रेजी सरकार की इस नीति से प्रथम धक्का लगा । झाँसी का दरी उद्योग, एरच एवं मेहरौनी का भी आकर्षक चुनरी उद्योग तथा अन्य छोटे-छोटे उद्योग जिनसे बहुत से नागरिक जीविकोपार्जन करते थे,

---

1- इम्पे डब्लू0 एच0एल0, मेस्टन जे0एस0, पृष्ठ 33.

अंग्रेजों की इस नीति के कारण लुप्तप्राय: हो गये । हतोत्साहित करने की अंग्रेजों की यह नीति शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में भी देखी गयी । विदेशियों ने इस जनपद में उच्च शिक्षा देने की आवश्यकता के प्रति आँखें मूँद ली । अंग्रेजों द्वारा गाँव व तहसील स्तर पर खोले गये स्कूलों से प्राथमिक शिक्षा की कमी भी पूरी नहीं हो सकती थी । यह निर्विवाद सत्य है कि झाँसी में मैट्रिक स्टेण्डर्ड तक शिक्षा देने का प्रयास दो बंगाली महाशय के प्रयासों का परिणाम था । अंग्रेजों का नहीं । यह जनपद विदेशियों के सत्ता के अन्तिम दिन तक उच्च शिक्षा के क्षेत्र को अनदेखा कर दिया गया । तथ्यों से सिद्ध है कि झाँसी जनपद में प्रथम डिग्री कालेज झाँसी में 1949 में स्थापित किया गया । 19वीं शताब्दी के मध्य तक प्रतिकूल हालात के कारण साहित्य के क्षेत्र में भी कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं हो सका । इस तरह इस जनपद का पिछड़ापन जो आज भी महसूस किया जाता है, अंग्रेज सरकार की नीति की ही देन है । शायद अंग्रेज सरकार इस क्षेत्र के नागरिकों को इसलिये अविकसित रखना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने 1857 की क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया था ।

-----:0:-----

अध्याय - 9

खण्ड - द

लोगों की सामान्य दशा व अंग्रेजों के प्रति घृणा की भावना

कर्जदारी की अवस्था, तत्पश्चात् अत्यधिक गरीबी के कारण इस क्षेत्र के नागरिकों की भी सामान्य दशा बदतर होती चली गई। जिससे न केवल बुन्देला राजपूत ही बर्बाद हुए, वरन् खेती करने वाली जातियाँ जैसे- काछी, लोधी जो अपनी मेहनत के कारण अच्छे खेतिहर के लिये प्रसिद्ध थे, कि आशाओं परभी कुठाराघात हो गया।[1] अत: इस क्षेत्र के सामान्य नागरिकों के सामने कम से कम निम्न स्तर के खाना व कपड़ा पर गुजारा करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। वह पूर्णत: खरीफ की फसल में पैदा हुए बाजरे पर आधारित हो गये और यही उनके भोजन का मुख्य अंग बन गया। अप्रैल एवं मई के महीनों में महुआ के फूल ही उनका प्रमुख भोजन था।[2] पूरी 19 वीं शदी में खाद्यानों की कमी बनी रही। 1888 का जाँच आयोग जो निम्न वर्गीय परिवारों के कुपोषण की जाँच करने के सम्बन्ध में बना था उसमें पाया कि जनसंख्या के कुछ भाग को बहुत कम भोजन प्राप्त है।[3]

1- इम्पे डब्लू0एच0एल0, मेस्टन जे0एस0, पृष्ठ 33.
2- वही; पृष्ठ 37.
3- वही.

बारम्बार प्राकृतिक आपदाओं के कारण और अंग्रेज सरकार की जनपद को अविकसित रखने की नीति के कारण 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में खेतीहरों में खेती से दूर रहने की भावना घर कर गयी। अत्यन्त गरीबी के कारण वे साहूकारों के हाथ की कठपुतली बन गये और अपना जीवन उन्हें समर्पित करके भी खुश थे।[1] 1857 में ब्रिटिश सरकार द्वारा किये गये ज्यादतियों के कारण यह जनपद सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में भी पिछड़ा रह गया। परिणामतः नागरिकों में ब्रिटिश राज्य के प्रति घृणा फैल गयी। कुछ इसाई मिशनरियों द्वारा घृणा को कम करने के लिये कुछ सामाजिक कार्य किये गये, परन्तु यह भी उस घृणा को कम नहीं कर सके और ललितपुर परगना भी सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में अत्यधिक पिछड़ा हो गया।

-----:0:-----

1- इम्पे डब्लू० एच०एल०, पृष्ठ 37.

अध्याय - 9

खण्ड - क

ललितपुर जिले में अन्य अपराधों का उदय

अपराधिक जातियाँ :

जिला ललितपुर की प्राकृतिक रचना इस प्रकार की है कि यह हमेशा से कुख्यात अपराधियों का शरण-स्थल रहा है । यद्यपि यहाँ पर अनेक जातियाँ जैसे- नट,कंजड़,वेडिया,बंजारे आदि ।[1] अधिकतर पाये जाते हैं । जिनकी जीविका अपराध कार्य है,जैसे-चोरी, राहजनी,लूट आदि से चलती है,परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के छठवें दशक से यहाँ पर एक सनोडिया जाति ने बहुत आतंक मचाया था । इनको उठाईगिरे भी कहते थे ।[2] यह सनोडिया उठाईगीरों का शरण-स्थल इस जनपद में वीर-सनवाहो एवं सजनम गाँव थे,जहाँ पर अधिकतर पाये जाते थे । इसके अतिरिक्त यह दतिया एवं ओरछा की सीमावर्ती सीमा पर भी पाये जाते थे ।[3]

1- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल,संवत् 2011,पृ026.
2- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल संवत् 2011,पृ026, ﴾नागरी प्रचारिणी सभा,बनारस﴿.
3- सिंह प्रतिपाल,बुन्देलों का संक्षिप्त इतिहास,भाग-1,पृष्ठ 209, ﴾हितचिन्तक प्रेस,बनारस﴿,संवत् 1985.

सनोढ़िया की उत्पत्ति :

एक किंवदन्ती के अनुसार मुगल सम्राट् ने एक कुख्यात अपराधी मग्गा बंजारे के मारने पर चार सनोढ़िया ब्राम्हण-बन्धुओं को दो गाँव पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये थे। इस सनोढ़िया वंश के एक परिवार ने जिला ललितपुर में मग्गा बंजारे की हत्या सम्बन्धित अनुदान से प्राप्त ग्रामों में बस गये थे। मेजर हैरिस जो 1858 ई0 में चन्देरी का सुपरिन्टेन्डेन्ट था, उसने इन गाँवों का वर्णन किया है।[1]

भिन्न-भिन्न किंवदन्तियों के अनुसार सनोढ़ियों की उत्पत्ति की भिन्न-भिन्न कथायें प्रचलित हैं। कुछ लोग इन्हें रावण वंशज मानते हैं।[2] एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार यह पहले भीख माँग कर गुजारा करते थे, परन्तु बाद में आर्थिक तंगी के कारण लुटेरे हो गये।[3] इनके सम्बन्ध में अन्य अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, किन्तु ये किसी विशेष जाति के नहीं हैं। डाकुओं और चोरों का एक समूह है। अपने लिये वे एक निजी सांकेतिक भाषा को काम में लाते हैं। इनका कार्य क्षेत्र समस्त उत्तर भारत है।[4]

डकैत :

सनोढ़ियों उठाईगीरों के अतिरिक्त इस जनपद में डकैतों का भी काफी उत्पात रहा। डकैत यहाँ समूह अथवा गिरोह के रूप में पाये जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि चोर लुटेरों का एक बड़ा समूह

1- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, झांसी गजेटियर 1909, इलाहाबाद, पृष्ठ 98.
2- सिंह प्रतिपाल, बुन्देलखण्ड की संक्षिप्त इतिहास, पृ0 209, बनारस, संवत् 1985.
3- वही.
4- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0, पृष्ठ 98, सिंह प्रतिपाल-बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त-इतिहास, पृष्ठ 209-210, बनारस सम्वत् 1985.

जिसमें खंगार, गूजर, चमार, मेहतर थे, जिनका कार्य लूटना तथा अन्य अपराध प्रवृत्तियों में लिप्त रहना था । आगे चलकर गिरोह के रूप में परिवर्तित हो गये । इनमें कुछ यहाँ के जमींदारों द्वारा सताये हुए थे, डकैत कहलाये ।[1]

डकैत की उत्पत्ति तथा आतंक :

1857 की असफल क्रांति के बाद असन्तोष की भावना चारों ओर बढ़ गयी थी । ब्रिटिश सरकार समस्त जनपद में अपना प्रभाव एवं कानून बड़ी क्रूरता से लागू कर रही थी । उपरोक्त घटनाओं से खिन्न होकर कुछ पेशेवर एवं कुछ बेकार युवकों का एक समूह गैंग के रूप में 1871 में प्रकट हुआ ।[2] 1875 में इस गैंग के सरदार दलीप सिंह एवं रणधीर सिंह पकड़े गये ।[3]

1889 में यद्यपि इन वर्षो में चारों ओर शान्ती हो चुकी थी, फिर भी अचानक पुन:डकैतों का उपद्रव आरम्भ हो गया । इस वर्ष फरवरी से सितम्बर के बीच 3 बड़े पुलिस थानों में 36 डकैती एवं 14 बड़ी डकैतियाँ पड़ीं । ये थाने थे - बाँसी, बानपुर, तालबेहट । इन डकैतियों में मुख्यात डकैत बनाफर जो स्वरूप सिंह के नाम से जाना जाता था, प्रमुख हाथ था । इसके अतिरिक्त दो अन्य डकैतों- कल्याण सिंह एवं महीप सिंह भी इस जनपद में सक्रिय थे ।[4]

1- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, 1965, पृष्ठ 227.
2- मिश्र केशवचन्द्र, चन्देल और उनका राजत्वकाल, पृष्ठ 26.
3- जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर, 1965, पृष्ठ 227.
4- वही.

अपराध रोकने के कार्य :

सर्वप्रथम सरकार ने सनोड़ियों को दबाने एवं उनके अपराध कार्यों को रोकने के लिये अनेक प्रयास किये । 1874 में ओरछा राज्य ने सीमावर्ती गाँव में सनोड़ियों से गाँव की रक्षा करने के लिये एक विशेष अधिकारी को नियुक्त किया ।[1]

1864 से 1874 तक सनोड़ियों (क्रिमनल ट्राईब एक्ट-27, 1871) के तहत पकड़े गये ।[2] 1883 में सरकार ने उन्हें जमीन देकर सामाजिक रूप में बसाने का प्रयास किया, परन्तु यह स्कीम सफल नहीं हो पायी ।[3]

डकैती रोकने के कार्य :

1889 ई0 की भयंकर डकैती आतंक से निपटने के लिये अतिरिक्त पुलिस दल जिला ललितपुर भेजा गया । 6 अक्टूबर 1890 में सेक्सन 15 असलाहा निरोधक कानून लागू किया गया । 15 आर्म्स एक्ट-11 आफ 1878, जिसके अन्तर्गत् कोई भी व्यक्ति बिना लाइसेन्स के कोई असलाहा नहीं रख सकता था । इस कानून के फलस्वरूप सरकार को 1574 बन्दूकें, 1344 तलवारे, 274 विभिन्न प्रकार के असलाहा प्राप्त हुए । इस प्रकार 1891 में छुटपुट डकैतियों को छोड़कर शान्ती रही, परन्तु 1898-99 में खतरनाक करार (घोषित) खेरा गैंग का फिर आतंक फैलने लगा जो मई, 1899 में समाप्त हुआ ।[4]

-----:0:-----

1- ड्रेक ब्रोक मैन डी0एल0, झाँसी गजेटियर 1909, पृष्ठ 99-100.
2- वही.
3- वही.
4- ड्रेक ब्रोकमैन डी0एल0 तथा जोशी ई0बी0, झाँसी गजेटियर 1965, पृष्ठ 158-159.

अध्याय - 9

खण्ड - ख

इसाईमत का उदय व विकास

ललितपुर में ब्रिटिश शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में बुन्देलखण्ड के जिलों में इसाई मिशनरियों का कोई विशेष केन्द्र नहीं था, लेकिन धीरे-धीरे जैसे ही अंग्रेज शासन विस्तृत होता चला गया[1] एवं शान्ती व्यवस्था स्थापित होने लगी । वैसे-वैसे इस क्षेत्र में भी इसाई मिशनरियों की प्रमुखता व प्रभुत्व बढ़ने लगा । इसके दूरगामी परिणाम भी निकले । उदाहरण के लिये इसाई मिशनरियों के प्रचार व प्रसार से तथा सती-प्रथा, कन्या-वध के बन्द करने से और विधवा पुनर्विवाह जैसे सामाजिक सुधारों के क्रियान्वयन होने से जनपद की ही नहीं, बल्कि बुन्देलखण्ड की जनता की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची ।[2] इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि 1815 से 1823 के बीच बुन्देलखण्ड में सती होने के 66 मामले सरकार ने दर्ज किये थे ।[3] 1847 में इस प्रथा पर रोक लगाने की घोषणा की गयी ।

1- ड्रेक ब्रौक मैन डी०एल०, बुन्देलखण्ड गजेटियर 1909, पृष्ठ 59-60.
2- सिन्हा एस०एन०, द रिबोल्ट आफ 1957 इन बुन्देलखण्ड जिल्द-प्रथम 1902, पृष्ठ 62.
3- वही.

इसाई मिशनरी अपने कार्य के विकास के लिये अपने धर्म प्रचार को सार्वजनिक स्थानों पर अपने भाषण देकर प्रारम्भ किया करते थे ।[1] जहाँ वे अपने धर्म की शिक्षाओं को प्रचारित तो करते ही थे। साथ ही साथ वे अन्य कार्यों के सिद्धान्तों की आलोचना और हँसी उड़ाया करते थे ।[2] चूँकि ये इसाई मिशनरी ब्रिटिश-सरकार द्वारा प्राप्त सहायतायुक्त होते थे तथा उन्हें पुलिस का संरक्षण प्राप्त था । अतः भारतीय उन्हें सरकार की पिट्ठू समझा करते थे । सर सैयद अहमद खाँ ने लिखा - कि लोगों में यह आम धारणा बन गयी थी कि इसाई धर्म प्रचारक सरकार द्वारा नियुक्त तथा पोषित होते थे ।[3]

अपने स्कूल तथा पाठशालाओं में भी केवल शिक्षण का ही कार्य नहीं करते थे, वल्कि वहाँ भी प्रचार कार्य किया करते थे । इसाई मिशनरियों द्वारा अपने स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती थी, उसमें इसाई धर्म से सम्बन्धित विषय भी पढ़ाया जाता था । इस सम्बन्ध में कलकत्ता के एक पादरी द्वारा जारी किया गया प्रपत्र भी उल्लेखनीय है जिसमें यह कहा गया था कि सभी लोगों को इसाईमत को स्वीकार कर लेना चाहिये ।[4]

1- सिन्हा एल0एन0, द रिवोल्ट आफ 1957 इन बुन्देलखण्ड, पृ0 40.
2- वही.
3- वही.
4- वही.

अंग्रेजी सैनिक छावनियों में भी इसाई मत का प्रचार किया जाता था जिससे अंग्रेजी सेना में कार्यरत् हिन्दू तथा मुस्लिम सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची । अत:ये देशी सैनिक सरकार के इरादों पर सन्देह करने लगे थे । बैरकपुर के कमाण्डिंग आफीसर कर्नल व्हीलर तो अपने सैनिकों में इसाई धर्म से सम्बन्धित प्रचार-सामग्री वितरित किया करता था ।[1] उसने साहस का परिचय देते हुए अपने सेना के जनरल को एक पत्र लिखा था । उसमें उसने लिखा कि यदि मुझसे पूछा जाय कि मैंने सैनिकों को इसाई मत में दीक्षित करने का प्रयास किया । तो मैं विनम्रता से जबाब दूँगा कि यह तो मेरा उद्‌देश्य ही है ।"[2]

इस प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हुए लन्दन टाइम्स ने लिखा था कि इस व्यक्ति के शरारतपूर्ण साहस ने ब्रिटिश साम्राज्य के लिये कितना नुकशान किया है । उसका अनुमान हम 1857 के विद्रोह से लगा सकते हैं ।[3]

कर्नल व्हीलर जैसे अनेकों अंग्रेज सैनिक अधिकारियों ने देशी सैनिकों के सन्देह को बढ़ाने में काफी मदद की थी । नि:सन्देह अंग्रेजी सैनिक छावनियों में वहाँ के बड़े अधिकारियों ने इसाई धर्म के प्रचार को करने के लिये जो प्रयास कर रहे थे उससे सेना में असन्तोष भड़का । बुन्देलखण्ड में स्थित सैनिक छावनियों में भी इसी प्रकार की व्यवस्था जारी रही जिससे अन्त में विद्रोह के भड़कने में सहायता मिली ।

1- सिन्हा एस0एन0, द रिवोल्ट आफ 1957 इन बुन्देलखंड, पृ0 40.
2- वही.
3- वही.

1858 में शान्ती व्यवस्था की स्थापना हो जाने के बाद इसाई धर्म के प्रचार तथा प्रसार में काफी तेजी आयी । यद्यपि महारानी विक्टोरिया ने 1858 के घोषणापत्र में यह कहा था कि भारतियों के धर्म व विश्वासों एवं रीति-रिवाजों के खिलाफ कोई हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा और न ही किसी के ऊपर इसाई मत थोपा जायेगा, परन्तु घोषणापत्र मात्र दिखावा था । घोषणापत्र के अनुसार घोषित की गयी बातों को लागू नहीं किया गया । फल-स्वरूप इसाई मिशनरियों ने भारत के लोगों को इसाई धर्म में परिवर्तित करने के कार्य को काफी तेजी से चलाया और बुन्देलखण्ड के जिलों में भी यह प्रचार तथा प्रसार तेजी से होने लगा जिनमें ललितपुर भी शामिल था ।

-----:0:-----

ललितपुर क्षेत्र का सामाजिक व आर्थिक पिछड़ापन बुन्देलखण्ड की ही भाँति इस जिले में इसाई मत के प्रचार तथा प्रसार के लिये उत्तरदायी रहा । यह उल्लेखनीय है कि अमेरिका की महिला मिशनरियों ने बुन्देलखण्ड में आकर अस्पताल,अनाथालय व शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना करके गरीबों की सेवा करते हुए इस हिन्दू-प्रधान क्षेत्र में इसाई मत के प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया । सबसे पहले 1896 ई० में नौगाँव की सैनिक छावनी वाले इलाके में अमेरिकी महिला मिशनरियों का एक दल आया जिसकी अंग्रेजी नेता महिला मिशनरी सिस्टर डेलिया फिस्लर इस्थर वार्ड आदि थीं ।

1896 में बुन्देलखण्ड के चारों ओर अकाल व्याप्त था । फलत: अनेकों लोग अपने नवजात शिशुओं को छोड़कर किसी तरह जीवन-व्यतीत करना चाहते थे । इन महिला मिशनिरियों ने इसी समय नौगाँव में एक अस्पताल खोला तथा ऐसे तमाम बच्चों को जिन्हें उनके माता-पिता के द्वारा छोड़ दिया गया था,उन्हें इस अनाथालय में शरण दे दी गयी । इन मिशनरियों को अमेरिका मिशन बोर्ड से आर्थिक सहायता प्राप्त होती थी । साथ ही साथ बुन्देलखण्ड के पोलिटिकल एजेन्ट ने भी इन महिला-मिशनरियों को अनेकों प्रकार की सहायता प्रदान की । बुन्देलखण्ड स्थित अनेकों रियासतों के राजाओं ने भी अस्पताल व शिक्षण संस्थाओं को खोलने में मिशनरियों को जमीन तथा अन्य आर्थिक रूप से सहायता की ।

छतरपुर के महाराजा ने इन मिशनरियों द्वारा छतरपुर के अस्पताल को बनाने के लिये जमीन दान में दी थी । इसी प्रकार की सहायता अलीपुर रियासत के राजा ने भी हरपालपुर में मिशनरियों द्वारा अस्पताल खोलने के लिये जमीन दी थी ।

धीरे-धीरे यह मिशनरी सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में छाने लगे । ललितपुर में भी यही मिशनरियों का दल आया तथा वहाँ के सामाजिक व आर्थिक पिछड़ेपन का लाभ लेते हुए इस क्षेत्र में इसाई धर्म के प्रचार व प्रसार का कार्य किया । शीघ्र ही वहाँ अनाथालय व चर्च की स्थापना होने लगी । इस प्रकार ललितपुर का सामाजिक व आर्थिक पिछड़ापन वहाँ इसाई धर्म के प्रचार का माध्यम बना ।

यह निर्विवाद सत्य है कि अंग्रेजों के शासन में यह जनपद सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा रहा । अत:अब सरकार के लिये यह आवश्यक है कि इसकी आर्थिक समृद्धि के लिये सही दिशा में कदम उठाये । 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इस क्षेत्र में कुछ योजनाएं शुरू की गयीं,परन्तु अबतक क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पदाओं का पूर्णत: उपयोग नहीं किया गया । जनपद का मुख्य भाग पठारी होने के बावजूद यहाँ बहुत से उद्योगों की स्थापना के पर्याप्त अवसर मौजूद हैं जिनसे न केवल क्षेत्र के नागरिकों को रोजगार मिलेगा,वरन् इससे काफी राजस्व भी कमाया जा सकता है ।

पापरो फाइलाइट चट्टाने जो ललितपुर जनपद के थान्कुआ बिजरो,और लालवारी क्षेत्रों में पायी जाती हैं जो हल्के लाल,कत्थई कालापन लिये हुए हैं ।[1] इनसे श्रामिक्स इन्सूलेट्स रिफरीस कोसमैटिक्स, पेपरवेट,स्लेट पेन्सिल आदि के उत्पादन में काम में लायी जा सकती हैं । इनका अभीतक व्यापारिक आधार पर उपयोग नहीं किया गया है ।[2]

1- टैक्नो एक्नोमिक सर्वे आफ झाँसी डिस्ट्रिक्ट,झाँसी 1973,पृष्ठ 34·
2- वही·

ललितपुर जनपद में बहुत-सी वन सम्पदा मौजूद हैं जिनकी देखभाल वन-विभाग कर रहा है । इन वनों में दवाई के उपयोग में आने वाले वृक्ष भी जैसे- अपामार्ग, अरानी, कुराचल, कटेरा, इन्द्रासो, वैन्लचल, तोलगिरी, प्रस्टपार्मी, थरैटी, रकदिर आदि बहुतायत में पाये जाते हैं ।[1] इन झाड़ियों का आयुर्वेद की दवा बनाने में उपयोग किया जा सकता है । अतएव इनकी सुरक्षा भी आवश्यक है । बाँस, और बबूल के वनों से भी क्षेत्र की सम्पदा को बढ़ाया जा सकता है, क्योंकि बाँस से पल्प के रूप में कागज उद्योगों के लिये कच्चा माल प्राप्त हो जायेगा । जबकि बबूल से गोंद बनाने के लिये कच्चा माल प्राप्त होगा । इसके अतिरिक्त यदि करधई के वृक्ष लगाये जायें तो उससे बड़े पैमाने पर दो उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं - प्रथम यह जलाऊ लकड़ी के रूप में काम आ सकता है और दूसरा इससे कोयला भी बनाया जा सकता है जिसको हम घरेलू काम के अलावा निर्यात भी कर सकते हैं । उससे लोगों को काम या रोजगार मिलेगा एवं जनपद आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होगा ।

यह सत्य है कि भारत सरकार द्वारा किसानों को सहायता और प्रोत्साहन देने के कारण क्षेत्र में कृषि की काफी वृद्धि और उन्नति हुई है । कृषि उत्पादन की यह वृद्धि जो पहले स्थानीय आवश्यकताओं को ही पूरा नहीं कर सकती थी । अब इतनी बढ़ गयी है कि जनपद की आवश्यकताओं की माँग को पूरा करने के साथ-साथ दूसरे पड़ोसी स्थानों को भी भेजी जा सकती है ।[2] फिर भी इस दिशा में और

1- टैक्नो एक्नोमिक सर्वे आफ झाँसी डिस्ट्रिक्ट, झाँसी 1973, पृष्ठ 34.
3- वही; पृष्ठ 27.

प्रयत्न करके क्षेत्र की आर्थिक स्थिति को दृढ़ बनाया जा सकता है ।

जनपद के पिछड़ेपन को दूर करने के लिये सरकार को लघु उद्योगों पर और ध्यान केन्द्रीत करना चाहिये । जनपद का दरी और जरी का उद्योग जो ब्रिटिश सरकार के पहले अपनी चरम सीमा पर था । पर अंग्रेजों के समय में इसे हतोत्साहित कर दिया गया था । इसे फिर से प्रोत्साहित करना चाहिये । क्षेत्र में पायी जाने वाली उन बहुतायत में भदोही [जिला-वाराणसी], मिर्जापुर एवं लुधियाना को भेजी जाती है ।[1] यदि कुशल व अनुभवी कारीगरों को यहाँ पर प्रोत्साहित किया जाय तो यह उन इसी क्षेत्र में उपयोग की जा सकती है जिसमें क्षेत्र की समृद्धि बढ़ सकती है । इसी प्रकार मऊरानीपुर के कपड़ा उद्योग को भी उदारतापूर्वक सहायता देकर तथा आवश्यक सुविधाएं देकर इसका विकास किया जा सकता है जिससे पूरा क्षेत्र लाभान्वित होगा ।

क्षेत्र में प्राप्त हड्डियों की बर्बादी रोकने के लिये और उनका उचित उपयोग करने की दृष्टि से सरकार को या तो खाद्य बनाने की इकाई खोलना चाहिये या वर्तमान स्थानों के अतिरिक्त हड्डी एकत्रित करने के लिये अन्य केन्द्र भी स्थापित करना चाहिये ।[2]

जनपद में सुअर बहुतायत में पाये जाते हैं, परन्तु सुअर पालन को उद्योग का दर्जा देने की दिशा में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाये गये । यदि इस दिशा में प्रभावी कदम उठाकर सही योजनाएं बनाई

1- टैक्नो इक्नोमिक सर्वे आफ झांसी डिस्ट्रिक्ट, झांसी 1973, पृष्ठ 32.
2- वही; पृष्ठ 37.

जायं तो इससे न केवल निम्न वर्ग के लोगों को रोजगार मिलेगा, बल्कि सुअर के बालों का, जिसका उपयोग ब्रुश बनाने के लिये किया जाता है, बाहर बेंचकर जनपद की आर्थिक स्थिति मजबूत की जा सकती है । इसके अलावा जनपद में पर्यटन के सुन्दर स्थान होने के साथ ही साथ यहाँ पर यदि आवागमन की सुविधाओं को अच्छा बनायें तो पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा । यहाँ पर पर्यटन के क्षेत्र में दुधई, चाँदपुर, देवगढ़ आदि हैं । प्राचीन स्थल व मन्दिर हैं जिसे देखने के लिये पर्यटक आते हैं । यदि पर्यटन को और बढ़ावा मिले तो जनपद की आय में वृद्धि की जा सकती है ।

उक्त बातों को तथा सुझावों को ध्यान में रखकर यदि शीघ्र ही सही दिशा में उचित कदम उठाये जायं तो इससे जनपद का न केवल पिछड़ापन दूर होगा, वरन् इसे अन्य विकसित क्षेत्रों के बराबर में लाया जा सकता है ।

-----: 0 : -----

शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त सन्दर्भ सामग्री ⟨बिबियोग्राफी⟩

ललितपुर जिले का

सामाजिक-आर्थिक

इतिहास

1966-1947.

नैशनल आर्केइव नई दिल्ली से सन्दर्भित शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त सामग्री

प्रौसी० - विदेश विभाग वर्ष 1850 से 1869 तक।

,, - 31 मार्च 1854, नम्बर 153 से 183, एफ०सी०।

,, - अगस्त 1861 रिफरेंश 149-151 पी०टी०वी०।

,, - विदेश विभाग वर्ष 1884 से 1884 तक।

,, - जुलाई 1885 इन्टल वी। रिफरेंश 91-93।

,, - अप्रैल 86 रिफरेंश 83-85 इन्टल बी० ।

,, - जनवरी 1890 इन्टल, पार्ट बी।

,, - जून 1891 रिफरेंश 182, 190 ए।

,, - विदेश विभाग 1892।

,, - विदेश विभाग वर्ष 1895 के लिये।

,, - विदेश विभाग 1894।

,, - जनवरी 1894 इन्टल।पार्ट वी।

,, - जुलाई 1894 इन्टल पार्ट वी।

,, - अगस्त 1894 इन्टल रिफरेंस 428 से 430 ए।

,, - मार्च 1894 पार्ट वी रिफरेंश 436 से 439 तक।

,, - वर्ष 1897 के लिये (बुन्देलखण्ड का अकाल सम्बन्धी स्टेटसमेन, जनवरी, फरवरी, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर 1897 के माहों के लिये)।

,, - जनवरी 1897 इन्टल।रिफरेन्स 1 से 91 ए तक। (बुन्देलखण्ड में अकाल सम्बन्धी मासिक रिपोर्ट माह मई तथा जून के लिये)।

,, - अगस्त 1897 इन्टल।रिफरेन्स 320-326 पार्ट वी।

,, - जुलाई 1897 इन्टल रिफरेन्स 126 से 142 ए।

,, - जुलाई 1897 इन्टल रिफरेन्स 447 से 465 ए।

प्रोसी0 - जून 1897 इन्टल•रिफरेन्श 226 से 234 ए तक•

,, - दिसम्बर 1896 इन्टल रिफरेन्स 469-482 ए तक•

,, - सितम्बर 1897 इन्टल रिफरेन्स 514-534 ए •

----- :0: -----

1. इम्पे डब्लू०एच०एल० तथा मेस्टन जे०एस० - रिपोर्ट आन द सेकेण्ड सैटिलमेन्ट आफ झांसी डिस्ट्रिक्ट (इनक्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन) नोर्थ,वेस्ट प्रोविन्सिस, इलाहाबाद 1892.

सेन्सस रिपोर्ट

सेन्सस आफ एन० डब्ल्यू०,प्रोविंसिस आफ इण्डिया 1865,इलाहाबाद 1867.

सेन्सस आफ एन० डब्ल्यू० प्रोविन्सिस आफ इण्डिया 1872,इलाहाबाद 1873.

सेन्सस आफ एन० डब्ल्यू० प्रोविन्सिस आफ इण्डिया 1881,इलाहाबाद 1882.

सेन्सस आफ एन० डब्ल्यू० प्रोविन्सिस आफ इण्डिया 1891,इलाहाबाद 1894.

2. बेली डी० सी० - सेन्सस आफ इण्डिया पार्ट-1,वोल्यूम-26, एन० डब्ल्यू० प्रोविन्सिस एण्ड अवध, इलाहाबाद 1894.

3. प्लोडन डब्ल्यू० सी० - सेन्सस आफ एन० डब्ल्यू० प्रोविन्सिस 1865,वोल्यूम-1,जनरल रिपोर्ट, इलाहाबाद 1867.

----- :0: -----

रिपोर्ट मेमोयार्स एण्ड ट्रीटीस (शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त सन्दर्भ सामग्री)

1. एटकिन्सन, सी० यू० - ए कलेक्शन आफ ट्रीसन, इगेजमेन्ट्स एण्ड सनद, भाग-5, कलकत्ता 1909.

2. कनिंघम, ए० - अर्किलौजीकल सर्वे रिपोर्ट, भाग 10 व 21, इण्डोलौजीकल बुक हाउस, वाराणसी 1969.

3. डेविडसन, जे० - रिपोर्ट आन द सैटिलमेन्ट ऑफ ललितपुर, नौर्थ, वेस्टर्न प्रोविन्सस, इलाहाबाद 1869.

4. फैंकलिन, जे० - मेमोयर्स आन बुन्देलखण्ड 1825.

5. होरे, एच० एस० - फाइनल रिपोर्ट ऑन द रिवीजन आफ सैटिलमेन्ट इन द ललितपुर, इलाहाबाद 1896.

6. मुकर्जी, पी० सी० - रिपोर्ट ऑन द एन्टीकुटी इन द डिस्ट्रिक आफ ललितपुर, रूड़की 1899, पुन:प्रकाशित, इण्डोलौजीकल बुक हाउस, नई दिल्ली.

7. पिम, ए० डब्लू० - फाइनल सैटिलमेन्ट रिपोर्ट ऑन द रिवीजन ऑफ झांसी डिस्ट्रिक इनक्लूडिंग ललितपुर सब डिवीजन, इलाहाबाद 1907.

8. पिन्के, एफ० डब्लू० - आफीसियल नरेटिव ऑफ 1859, इण्डियन हिस्टोरीकल रिकार्ड कमीशन प्रोसीडिंग्स, भाग-27, पार्ट-2, नागपुर 1950.

डिस्ट्रिक गजेटियर्स

1. एटकिन्सन, ई0 टी0 - स्टेटिसटिकल डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरीकल एकाउन्ट आफ द एन0, डब्लू0 प्रोविन्सस आफ इण्डिया, भाग-1 (बुन्देलखण्ड), इलाहाबाद 1874.

2. ड्रेक ब्रौकमैन, डी0 एल0 - झाँसी, ए गजेटियर इलाहाबाद, 1909.

3. ड्रेक ब्रौकमैन, डी0 एल0 - बाँदा गजेटियर भाग-21, आफद डिस्ट्रिक गजेटियर्स आफ द यूनाइटेड प्रोविन्सिस आफ आगरा और अवध, इलाहाबाद, 1929.

4. जोशी, ई0बी0 - उत्तर रीजन, डिस्ट्रिक गजेटियर झाँसी, लखनऊ 1965.

5. लुआर्ड, सी0 ई0 - दतिया, स्टेट गजेटियर्स, लखनऊ 1907, इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, भाग-1 व 2, कलकत्ता, 1908.

इम्पीरियल गजेटियर आफ इंडिया (न्यू एडीसन) भाग-18.

टुडे एण्ड टुमारो प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिसर्स, फरीदाबाद, हरियाणा.

ईस्टर्न स्टेटस (बुन्देलखण्ड) गजेटियर्स, लखनऊ 1907.

डिस्ट्रिक गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सिस आफ आगरा एण्ड अवध (सप्लीमेन्टरी स्टेटिसटिक्स) भाग-20, इलाहाबाद 1924.

हिस्टोरीकल वर्क्स

1. बोस, एन0एस0 – हिस्ट्री आँफ द चन्देलास आँफ जिजाक भुक्ति, कलकत्ता 1956.

2. कुक, डब्लू0 – द ट्राइब एण्ड कास्ट्स आफ द एन0 डब्लू0 प्रोविन्सस और अवध भाग 1 से 4 तक, कलकत्ता 1896.

3. कुक, डब्लू0 – रेसिस आँफ नौर्दर्न इण्डिया, कास्मों पब्लिकेशन, दिल्ली 1973.

4. धर्म भानु – हिस्ट्री आँफ एडमिनिस्ट्रेशन आफ द प्रोविन्सिस आँफ आगरा (नेम्ड-सबसीक्वेन्टली द एन0डब्लू0 प्रोविंसिस), 1934, 1858 (ए थीसिस सम्मीटिड फार पी0एच-डी0 इन आगरा यूनिवर्सिटी इन 1954.)

5. गौडसे, विष्णु भट्ट – माझा प्रवास, एडीसन-2, 1948 (चित्रशाला प्रकाशन) पूना-2.

6. गुप्ता, वी0 डी0 – महाराजा छत्रसाल बुन्देला, आगरा सितम्बर 1958.

7. हीरालाल – मध्य प्रदेश का इतिहास, काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी.

8. मुन्शी श्यामलाल – तवारीखे बुन्देलखण्ड, नौगाँव, 1880.

9. सिंह, प्रतिपाल – बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, भाग-1, हितचिन्तक प्रेस, वाराणसी, सम्वत्-1985.

10. तिवारी, गोरेलाल – बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, एडीसन-1, संवत् 1990, काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी.

हिस्टोरीकल वर्क्स

वर्गिस जे० ए० एल० - इण्डियन एन्टीक्वारी, वोल्यूम-4, इण्डोलौजीकल बुक, रिप्रिन्ट कार्पोरेशन, 7 मलिकागंज, दिल्ली।

वीम्स जोन - मेमोयार्स आँन द हिस्ट्री, फाक्लोट एण्ड डिस्ट्रीब्यूसन आफ द रेसिस आफ द नोर्थ वेस्ट प्रोविन्सिस आफ इण्डिया, (एम्पलीफाइड एडीसन आफ एच०एम०इलियट सप्लीमेन्टल ग्लौसरी आफ इण्डिया टर्म्स) वोल्यूम-1, लन्दन 1869।

डे० एन० एल० - द ज्योगरफीकल डिस्कनरी आफ ऐनसियन्ट एण्ड मेडियेविल इण्डिया, कलकत्ता 1899।

धुरे जी० एल० - कास्ट एण्ड क्लास इन इण्डिया, बम्बई 1957।

काये जे० डब्ल्यू और मैलीशन जी०वी० - द हिस्ट्री आफ द सिपाही वार इन इण्डिया, वोल्यूम 1 से 4, लन्दन 1864-1888।

मिश्रा ए० एस० - नाना साहब पेशवा, लखनऊ 1961।

मरहवी, मुन्शी मुहम्मद-सैयद अहमद। - उमराये-हिन्दू द, प्रिन्टिड एट नामी प्रेस, कानपुर 1910।

माहौर बी०डी० - लक्ष्मीबाई रासो आफ मदनेश, एडीशन प्रथम, झांसी 1969।

मित्र रामचरण हयारन - बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य, राजकमल पब्लिकेशन, दिल्ली।

हिस्टोरीकल वर्क्स

पाणिक्कर के0 एम0 - ए सर्वे आफ इण्डियन हिस्ट्री रिप्रिन्टिड, वाई एशिया पब्लिशिंग-हाउस, बम्बई 1965.

पारसनिस डी0 वी0 - झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (हिन्दी ट्रान्सलेशन) एडीसन-5, संवत् 1995, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग.

पोगसन डब्लू0 आर0 - ए हिस्ट्री आफ द बुन्देलखण्ड, 1828, (रिप्रिन्टिड वाई वी0आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली 1974.

रिजवी एस0ए0ए0 (एड) - फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश, वोल्यूम-1 एण्ड-3, लखनऊ 1957, 1959.

रोजर्स ए0 एण्ड बेवरिज एच0 (एड. एण्ड ट्रा) - द तुजके-जहागीरी, वोल्यूम-1, लन्दन सन् 1909.

रसूल आर0वी0 - ट्राइव एण्ड कास्ट आफ द सैन्ट्रल प्रोविन्सिस आफ इण्डिया, वोल्यूम-4, लन्दन 1916.

सक्सेना, वी0पी0 - हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ दिल्ली, इलाहाबाद 1948.

शमशम उद्दौला शाह-नवाज खान. - द मासिर उल उमरा वोल्यूम-1 एण्ड 2, इंग्लिस ट्रान्सलेशन वाई0एच0 विवरेज, कलकत्ता 1941 एण्ड 1952.

सरकार जे0एन0 - हिस्ट्री आफ औरंगजेब, वोल्यूम-1 एंड 2, एडीशन-2, कलकत्ता 1925.

<u>हिस्टोरीकल वर्क्स</u>

सरकार जे0एन0	-	फाल आँफ द मुगल एम्पायर, वोल्यूम-3, एडीशन 2, (एम0सी0सरकार एण्ड सन्स, कलकत्ता 1952).
सरदेसाई जी0एस0	-	न्यू हिस्ट्री आँफ द मराठास, वोल्यूम-2.
श्रीनिवासन सी0के0	-	बाजीराव द फस्ट, द ग्रेट पेशवा, बम्बई 1962.
श्रीवास्तव ए0एल0	-	शुजाउद्दौला, वोल्यूम-1, एडीशन 2, आगरा 1961.
श्रीवास्तव ए0एल0	-	द फस्ट टू नवाब आफ अवध एडीशन 2, आगरा 1951.
सेन सुरेन्द्रनाथ	-	एट्टीन फिफ्टी सेवन, इण्डियन प्रेस, कलकत्ता 1958.
शर्मा एस0आर0	-	मुगल एम्पायर इन इण्डिया (रिप्रिंटिड-एडीशन, आगरा 1971).
सुन्दर लाल	-	भारत में अंग्रेजी राज, वोल्यूम-1, लखनऊ 1960.
श्रीवास्तव हरीशंकर	-	फेमनाइन्स एण्ड फेमाइन पोलसी आँफ द गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया (1858-1918) (ए थीसिस फार पी0एच0डी0 डिग्री सबमिटेड इन आगरा यूनीवर्सिटी इन 1956).

----- :0: -----

बिबियोग्राफी

---: 0 :---

1• बुन्देलों का इतिहास - भगवानदास श्रीवास्तव
भगवानदास खरे
विचार प्रकाशन,
देहली 1982•

2• स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास• - आर० सी० अग्रवाल
एस० चन्द प्रकाशक,
दिल्ली 1962•

3• झाँसी ड्यूरिंग द ब्रिटिश-रूल• - एस० पी० पाठक,
रामानन्द विद्या भवन,
दिल्ली 1987•

4• द बुन्देलास - कर्नल पोगसन
रि-प्रिन्ट (दिल्ली)•

5• आईने अकबरी वोल्यूम-2 - अबुल फजल
अनु जैरट एण्ड सरकार,
कलकत्ता 1949•

---:0:---

ज्योगरफीकल एण्ड लिटरेरी वर्क्स

बादल एस0एस0 – बुन्देली का फाग साहित्य, संवत् 2021, हिन्दी साहित्य परिषद्, राठ, हमीरपुर।

द्विवेदी गौरीशंकर – बुन्देल वैभव, वोल्यूम 1,2 व 3, एडीशन-1, झाँसी, संवत् 2010।

गुप्ता कृष्णानन्द – बुन्देलखण्डी भाषा और साहित्य, पटना 1960।

माहौर वी0डी0 – 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, सन् 1976।

महरोत्रा सी0एल0 और गंगवार वी0आर0। – फर्टीलाइजर यूस इन द सोयाल्स आफ बुन्देलखण्ड, लखनऊ, सितम्बर 1964।

नलिन जयानाथ – हिन्दी निबन्धकार, आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली 1964।

राय चौधरी एस0पी0 – सोयाल्स आफ इण्डिया, आई0सी0ए0आर0, नई दिल्ली 1963।

शुक्ला रामचन्द – हिन्दी साहित्य का इतिहास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संवत् 1997।

सिंह उदयभान – आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनका युग, लखनऊ युनिवर्सिटी, संवत् 2008।

तिवारी रामचन्द्र - हिन्दी का गद्य साहित्य,
विश्वविद्यालय प्रकाशन, अगस्त 1968.
वाराणसी.

वर्मा धीरेन्द्र - हिन्दी साहित्य-कोष,
वोल्यूम-1, एडीशन-2,
ज्ञान मण्डल लिमिटेड, संवत् 2020,
वाराणसी.

वर्मा वृन्दावन लाल - झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई,
एडीशन-1,
स्वाधीन प्रेस,
झाँसी.

व्यास हीरालाल - विश्व क्शकरन काव्य,
(अनपब्लिश्ड एण्ड अवेलेबिल विद
रामचरन हयारन, एडवोकेट आफ
झाँसी).

वाडिया डी०एन० - ज्यौलौजी आफ इण्डिया,
एडीशन-3,
लन्दन, 1966.

----- :0: -----

हिन्दी वर्क्स

1. चन्दवरदाई - पृथ्वीराज रासौ, (बनारस 1904-1913).

2. रिजवी एस०ए०ए० - आदि तुर्ककालीन भारत (अलीगढ़ 1956).

   खिलजी कालीन भारत (अलीगढ़ 1955).

   तुगलक कालीन भारत, पार्ट 1 व 2, (अलीगढ़ 1956-57).

   उत्तर तैमूर कालीन भारत, पार्ट 1 व 2, (अलीगढ़ 1958-59).

पर्शियन वर्क्स

1. वेहामद खान - तारीखी मुहम्मदी (रौटोग्राफ इन अलीगढ़ मुस्लिम-यूनीवर्सिटी लाइब्रेरी).

2. धौसी सत्तारी - गुलजारे-अबरार (एम०एस० इन आजाद लाइब्रेरी) मुस्लिम युनीवर्सिटी, अलीगढ़.

---- :0:----

इंग्लिश वर्क्स

अल्टेकर ए०एस० - एजुकेशन इन एन्शियेन्ट इण्डिया फिफ्थ एडीशन• (वाराणसी 1957)•

बनर्जी वी०डी० - द ऐज आफ इम्पीरियल गुप्ताज, बनारस 1933•

पार्सी ब्राउन - इण्डियन आर्कीटेक्चर (बुद्धिस्ट एण्ड हिन्दू) (बम्बई 1956)•

हेगलर वौल्सले (इडी) - द कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, वोल्यूम 3, (दिल्ली 1958)•

हरग्रीव्स एच० - एन्टीक्यूटीज आफ चाँदपुर (इलाहाबाद 1917)

एन्टीक्यूटीज आफ देवगढ़, (इलाहाबाद 1917)•

एन्टीक्यूटीज आफ दुधई, (इलाहाबाद 1917)•

के० एफ० ई० - इण्डियन एजुकेशन इन एन्सियेन्ट एण्ड लेटर-टाइम्स (एस० कौन्डिड आक्सफोर्ड 1942)•

श्रीवास्तव ए०एल० - शुजाउद्दौला (सेकेण्ड एडीशन) आगरा 1961•

----- :0: -----

मैगजीन्स, जनरल्स एण्ड न्यूज पेपर्स

बुन्देलखण्ड परिषद् पत्रिका - इलाहाबाद युनीवर्सिटी 1956.

भारती पत्रिका - ग्वालियर,
जून, जुलाई 1957.

झाँसी हीरक जयन्ती पत्रिका - बिपिन बिहारी इन्टरमीडिएट कालेज,
झाँसी 1957-58.

नैशनल हेरल्ड - लखनऊ,
डेटेड अक्टूबर 20, 1957.

टैक्नो एक्नोमिक सर्वे आफ झाँसी- - डिप्टी डायरेक्टर आफ इण्डस्ट्रीज-
डिस्ट्रिक. आफिस,
झाँसी 1973.

----- :0: -----